"शारीरिक सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करना: सामूहिक कार्रवाई और धर्म के माध्यम से समाज को सुरक्षित करने का आह्वान" (google translated)

यह सभी के लिए चौबीसों घंटे शारीरिक सुरक्षा और समग्र सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए जागने और एकजुट होने का सामूहिक आह्वान है। आइए हम साझा जिम्मेदारी और कार्रवाई के माध्यम से एक न्यायपूर्ण, धर्म-आधारित समाज का निर्माण करें।

भारत और विश्व के प्रिय साथी नागरिकों – योद्धाओं, नेताओं, राजनीतिज्ञों, पेशेवरों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, मीडिया कर्मियों, बेरोजगार युवाओं और अकेले बुजुर्गों – यह एक विनम्र आह्वान है, आगे आने और एकजुट होने की एक ईमानदार अपील है।

भारत के राष्ट्रपति को भेजे गए पत्रों का संग्रह

- **पत्र क्रमांक 1** | दिनांक: 24/04/2025
  विषय: आतंकवादी हमला – पहलगाम, भारत: राष्ट्रीय जागृति का आह्वान – सुरक्षा बहाल करना, धर्म को पुनर्जीवित करना, और भारत को पाकिस्तान और बांग्लादेश के साथ फिर से जोड़ना
- **पत्र संख्या 2** | दिनांक: 27/04/2025
  विषय: 22.04.2025 को भारत के पहलगाम में हुए बर्बर आतंकवादी हमले के अपराधियों के खिलाफ हमारी कार्य योजना पर व्यापक चर्चा का आह्वान
- **पत्र संख्या 3** | दिनांक: 01/05/2025
  विषय: पहलगाम – भारत में हुए आतंकी हमले के अपराधियों को दंडित करने के लिए संभावित कार्रवाई के संबंध में, दिनांक 22.04.2025 (श्रृंखला का समापन पत्र)
- **पत्र संख्या 4** | दिनांक: 09/05/2025
  विषय: युद्ध पर – धर्म के लिए युद्ध: 22.04.2025 को भारत के पहलगाम में हुए बर्बर आतंकी हमले के दौरान धर्म के मुद्दे को उठाने का अनिवार्य परिणाम
- **पत्र संख्या 5** | दिनांक: 17/05/2025
  विषय: पहलगाम हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष विराम और धर्म के अनुसार आगे का रास्ता – धर्म का पुनरुत्थान, बुराई का खात्मा और धार्मिकता का उत्थान
- **पत्र संख्या 6** | दिनांक: 24/05/2025
  विषय: (1) पहलगाम में हुए आतंकी हमले पर बुद्धिमान बुजुर्गों के विचार
  (2) समाज के लिए चिंताएं और उपाय (3) राष्ट्रीय सुरक्षा मिशन के लिए 8 करोड़ नागरिकों की आवश्यकता – सुरक्षा भूमिकाओं में लैंगिक समानता के साथ जून 2026 तक 4 करोड़ रोजगार का लक्ष्य
- **पत्र क्रमांक 7** | दिनांक: 30/05/2025
  विषय: पहलगाम में आतंकी हमले पर संक्षिप्त विवरण – विश्व युद्ध और 'नई विश्व व्यवस्था' के अग्रदूत के रूप में भारत;
  8 करोड़ लोगों के लिए धर्म, सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा और रोजगार सुनिश्चित करने में भारत की भूमिका
- **पत्र क्रमांक 8** | दिनांक: 23/06/2025
  विषय: भारत के राष्ट्रपति से अपील – नए राष्ट्रपति शासन, लोकसभा की निरंतरता और राष्ट्रीय सुरक्षा में 8 करोड़ युवाओं (पुरुष और महिला) को तत्काल रोजगार के माध्यम से देशव्यापी शारीरिक और सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करना

योद्धाओं, नेताओं, राजनीतिज्ञों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, मीडिया कर्मियों, बेरोजगार युवाओं और अकेले बुजुर्गों से एक आह्वान (एक अनुरोध, एक आह्वान, एक अपील) कि वे आगे आएं ताकि हम सामूहिक रूप से भारत और विश्व में समाज में सभी के लिए शारीरिक सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें

भारत और विश्व के प्रिय साथी नागरिकों:
अभिवादन

यह आह्वान विशेष रूप से उन लोगों के लिए किया जा रहा है जो कभी-कभी महसूस करते हैं कि प्रणाली न्यायसंगत, सरल, प्राकृतिक और प्रकृति पर आधारित होनी चाहिए, वे पहले से ही इस दिशा में काम कर रहे हैं और ऐसे समूहों को आपस में जोड़ने की आवश्यकता महसूस करते हैं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि प्रणाली न्यायसंगत, सरल, प्राकृतिक और प्रकृति पर आधारित हो।

शारीरिक सुरक्षा [शारीरिक सुरक्षा का मतलब है समाज के हर सदस्य की चौबीसों घंटे, देश के हर कोने में सुरक्षा, भय पैदा करके नहीं बल्कि समाज द्वारा ही अधिकतम संख्या में सुरक्षाकर्मियों की तैनाती करके (जो प्रामाणिक अध्ययनों के अनुसार कुल जनसंख्या का छह प्रतिशत है, जिसका अर्थ है भारत के लिए बराबर अनुपात में आठ करोड़ से अधिक पुरुष और महिलाओं की तैनाती, जिनमें से कुछ देश के लिए युद्ध के लिए तैयार होंगे] और

सामाजिक सुरक्षा (सामाजिक सुरक्षा का अर्थ है ताजी हवा, पीने योग्य पानी, खाने योग्य भोजन, पहनने योग्य कपड़े, रहने योग्य आश्रय, स्वास्थ्य, न्याय और शिक्षा की सुविधा , अनुग्रह और कृतज्ञता के अनुसार भुगतान, रचनात्मक गतिविधि के लिए स्थान आदि) समाज में सभी के लिए तेज गति से, और इस तरह यह योद्धाओं, नेताओं, राजनेताओं, पेशेवरों, शिक्षकों, प्रोफेसरों और पुरस्कार विजेताओं, सहकारी समितियों और कॉर्पोरेट्स को आगे आने और प्राकृतिक नियमों, धर्म की एक व्यवस्थित प्रणाली के निर्माण के लिए हाथ मिलाने और स्वस्थ, खुशहाल पवित्र सामाजिक वातावरण के लिए आमंत्रित करता है। पहलगाम आतंकवादी हमले और इसके बाद सामने आए समग्र परिदृश्य को देखने के बाद, यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया है कि शारीरिक सुरक्षा (देश के हर नुक्कड़ पर 24 × 7) की व्यवस्था को केवल राष्ट्रीय सरकार पर नहीं छोड़ा जा सकता है और समाज को स्वयं जागना होगा और अपने प्रत्येक सदस्य की शारीरिक सुरक्षा की व्यवस्था चूंकि स्थिति चिंताजनक है, इसलिए समाज के वरिष्ठ लोगों और क्षेत्र के विशेषज्ञों की यह राय है कि कुल तैनाती का कम से कम पचास प्रतिशत यानि चार करोड़ सुरक्षा कर्मियों की भर्ती और प्रतिनियुक्ति समाज द्वारा एक वर्ष के भीतर (जून-2026 तक) की जानी चाहिए और शेष चार करोड़ को वर्ष 2029 तक किया जाना चाहिए, तथा उसके बाद क्षेत्र में प्रतिनियुक्त सुरक्षा कर्मियों की संख्या को कुल जनसंख्या के छह प्रतिशत के इष्टतम स्तर पर बनाए रखा जाना चाहिए।

[यह ध्यान देने योग्य है कि शारीरिक सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा के ऐसे उच्च स्तर की व्यवस्था आवश्यक है (इसकी सराहना आतंकवादी हमले और हमले के बाद की गतिविधियों के बारे में लिखे गए आठ पत्रों

(24.04 से 23.06.2025 तक) के माध्यम से की जा सकती है, जो भारत के साथी नागरिकों को लिखे गए हैं और जिनकी प्रतिलिपि भारत सरकार के वरिष्ठ पदाधिकारियों को भेजी गई है और इसका मूल्यांकन इस लिंक के माध्यम से किया जा सकता है: https://resurrectionofdharma.com/assets/pdf/letter_3_other_language/pahalgam_terror_attack_letter_english.pdf ,) और यह व्यवहार्य भी है और कार्य/जिम्मेदारी के वितरण और आय/उपज के वितरण के पैटर्न में उचित और तार्किक बदलाव के द्वारा आसानी से प्राप्त किया जा सकता है और इसे "वैकल्पिक अर्थव्यवस्था" पुस्तक में अच्छी तरह से प्रलेखित किया गया है और वेबसाइट पर मुफ्त डाउनलोड के लिए रखा गया है, जिसे हर कोई देख सकता है]

निम्नलिखित प्रस्तुत है:

1. यह कहा जा सकता है कि हम सभी पूरी तरह से स्वार्थी व्यक्ति हैं और हर तरफ से हम सभी अपने लिए अच्छाई चाहते हैं लेकिन कभी-कभी हममें से अधिकांश ऐसी अजीब और भयावह स्थितियों का सामना करते हैं, जिससे हम में से हर कोई महसूस करता है कि व्यवस्था पृथ्वी पर सभी के लिए न्यायपूर्ण, सरल, प्राकृतिक और धर्म के अनुसार होनी चाहिए।

हम सभी को अजीब/दुख/पीड़ा महसूस होती है जब भिखारी, विकलांग, बच्चे, पुरुष और महिलाएं ट्रैफिक सिग्नल और पूजा स्थलों पर भीख मांगते हैं। हमें तब भी दर्द होता है जब समाज में बड़ी संख्या में लोग भूखे मरते हैं या उन्हें केवल मासिक मुफ्त राशन (अस्सी करोड़ से अधिक - यानी भारत में साठ प्रतिशत से अधिक जनसंख्या) पर जीवित रहना पड़ता है, उन्हें उचित सुरक्षा के बिना रहना पड़ता है और किसी निर्दयी आतंकवादी हत्या (जैसे 22.04.2025 को पहलगाम में) में नहीं मरने की प्रार्थना करनी पड़ती है, उन्हें न्याय के लिए अंतहीन इंतजार करना पड़ता है (भारत में पांच करोड़ से अधिक मामले या लंबित हैं)। हम सभी को दर्द होता है जब बड़ी संख्या में युवा , जो रोजगार के बिना भटक रहे हैं, या तो छोटे-मोटे कर्ज के लिए आवेदन कर रहे हैं या शराब, ड्रग्स, पोर्नोग्राफी और अपराधों की ओर मुड़ रहे हैं और फिर सरकार ऐसे लोगों को दबाने के लिए पैसा खर्च करती है। हम सभी को तब पीड़ा होती है जब बड़ी संख्या में बुजुर्ग लोग तीव्र अकेलेपन से पीड़ित होते हैं और इसके कारण सभी प्रकार के मानसिक रोगों, बैक्टीरिया, वायरस के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं और लगातार दवाओं और कष्टों से ग्रस्त हो जाते हैं और तब हमें और भी अधिक पीड़ा होती है जब उपरोक्त परिदृश्य के बावजूद लोग उचित समाधान और प्राप्त करने योग्य समयसीमा दिए बिना उपदेश देना या अपना दिमाग खाली करना शुरू कर देते हैं।

और निश्चित रूप से हम सभी को दुख होता है जब भी हमें लोगों के सामने छोटे से उपकार के लिए झुकना पड़ता है, भले ही हमें तब दर्द महसूस न हो जब लोग बहुत छोटे से उपकार के लिए हमारे सामने झुकते हैं और यह हम में से हर एक के लिए सच है, भले ही हम किसी भी धर्म (हिंदू, यहूदी, बुद्ध, जैन, ईसाई और मुस्लिम आदि) में पैदा हुए हों या धर्मांतरित हुए हों या यहां तक कि पसंद/प्रेम करते हों।
सभी समकालीन धर्म विफल हो गए हैं और अप्रासंगिक होते जा रहे हैं, क्योंकि जब किसी को कोई समस्या होती है और वह किसी धार्मिक स्थान पर जाता है, तो उसे केवल उपदेश मिलते हैं, पुजारियों से उसके स्वयं के द्वारा रचित या कुछ पवित्र ग्रंथों के अंश और मामला वहीं समाप्त हो जाता है, बिना किसी वास्तविक

और दृश्यमान समर्थन के। उसे फिर से उसी स्थिति का सामना करने के लिए खाली हाथ आना पड़ता है, चाहे वह बुनियादी भूख, कपड़ा या आश्रय की हो या अपने घर/मकान/पड़ोसियों से दूर एक शांतिपूर्ण वातावरण खोजने के लिए आवश्यक समर्थन की हो या अपनी रचनात्मक खोज को व्यक्त करने के लिए एक स्थान की हो। फिर भी प्रत्येक धर्म के सभी धार्मिक गुरु अपने कबीले, अनुयायियों और समर्थकों को ये सेवाएं प्रदान करने के बजाय मृत्यु के बाद जीवन के सपनों का प्रचार करने, अपने अनुयायियों के बीच भय पैदा करने, अपने धर्म की श्रेष्ठता और दूसरों की हीनता दिखाने में व्यस्त रहे और समाज में शांति और सद्भाव की बजाय अधिक घृणा और दुश्मनी पैदा की।
इन सभी धार्मिक गुरुओं ने मिलकर आस्था को हिलाकर रख दिया है तथा अपने लगभग सभी अनुयायियों के साथ-साथ पूरे समाज का जीवन कष्टमय बना दिया है।

चूंकि आस्था प्रत्येक जीव के लिए जन्मजात और केंद्रीय (हृदय) है, इसलिए जब आस्था डगमगाती है तो यह स्पष्ट है कि हृदय अनियमित रूप से कार्य करेगा। यदि यह स्थिति लंबे समय तक बनी रहती है तो यह अंततः व्यक्ति के आंतरिक संतुलन और प्रतिरक्षा को बिगाड़ देती है, जिससे जाहिर तौर पर शुगर लेवल (मधुमेह), निराशा (हृदय रोग), असहायता (कैंसर) और वह सभी प्रकार की अन्य बीमारियों का आसान शिकार बन जाता है।

चिकित्सा डेटा पुष्टि करते हैं कि बीमारियाँ बहुत ही खतरनाक दर से बढ़ रही हैं, जो स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि समाज में आशा प्रदान करने वाली एजेंसियां (धार्मिक संस्थाएं) अपने अनुयायियों के बीच आशा पैदा करने में बुरी तरह विफल हो रही हैं।

इसके अलावा, कोरोना/कोविड लॉकडाउन के दौरान यह भी स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हुआ है कि सभी धर्म अपनी प्रासंगिकता खो चुके हैं। लगभग सभी धर्म आधुनिक समय की बीमारियों के हमले के आगे झुक गए हैं और परिणामस्वरूप लगभग सभी पूजा के केंद्र और उनके पुजारी बीमारी के हुक्म के आगे आत्मसमर्पण कर चुके हैं और अपने अनुयायियों को मौत के मुंह में जाने के लिए छोड़ दिया है। स्थिति तब और भी भयावह हो गई जब लोगों ने पाया कि प्रार्थना के कई सर्वोपरि स्थानों पर भी ताला लगा दिया गया है और वे भी आपातकाल के समय सांत्वना नहीं दे सकते। जब वेटिकन, मक्का-मदीना, यरुशलम जैसे केंद्रों के साथ-साथ आस्था-पूजा के लगभग सभी केंद्र ताले में बंद पाए जाते हैं, तो आम लोगों की आस्था कैसे बची रहेगी? **क्या किसी भी समाज के लिए कम से कम एक उम्मीद के अभाव से बदतर स्थिति हो सकती है?**

इन सभी मंदिरों-मस्जिदों, मठों और चर्चों को बंद करके उन पर ताले लगा दिए गए हैं, जिससे मूल रूप से यह संदेश गया है कि ये पूजा के केंद्र और इनके प्रचारक अप्रासंगिक हो गए हैं और न केवल इन सभी केंद्रों की पवित्रता और निरंतरता पर बल्कि इन केंद्रों के जारी रहने और इनमें किए जाने वाले सांसारिक कर्मकांडों पर भी गंभीर प्रश्नचिह्न लगा दिया है। ऐसी स्थिति में किसी का भी खुद को इनका ठेकेदार बताकर अपने धर्म को सर्वश्रेष्ठ बताना और उसके नाम पर अपनी जान जोखिम में डालना या दूसरों की जान लेना बेकार और मूर्खतापूर्ण है। इसके अलावा ऐसी स्थिति में क्या यह हम सभी के लिए विवेकपूर्ण नहीं होगा कि हम इस मुद्दे पर खुले दिमाग और बड़े दिल से विचार करें और तय करें कि क्या ऐसे केंद्रों को छोड़ दिया जाना

चाहिए या हमेशा के लिए बंद कर दिया जाना चाहिए या सम्मानपूर्वक नष्ट कर दिया जाना चाहिए या इतिहास और पर्यटन के लिए संग्रहालयों सहित अन्य उद्देश्यों के लिए किराए पर दिया जाना चाहिए।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि शायद स्थिति की इस गम्भीरता के कारण ही विभिन्न धर्मों के संस्थापकों ने यह कल्पना की होगी कि बीसवीं शताब्दी (समवर्ती समय) महत्वपूर्ण होगी, तथा विभिन्न धर्मों के संस्थापकों के अनुसार यह या तो प्रलय का समय होगा, या नए मसीहा का अवतरण होगा, या बुद्ध का पुनर्जन्म होगा, या ईश्वर के नए दूत का आगमन होगा , या महान मंथन होगा, या फिर नए युग में संक्रमण का समय होगा?

पच्चीस सौ वर्षों तक चलेगा , उसके बाद वे पुनर्जन्म लेंगे और मैत्रेय के रूप में प्रकट होंगे, ईसाई लोग प्रलय के बारे में बहुत चर्चा करते हैं, हालांकि पैगम्बर साहिब को कई लोग अंतिम संदेशवाहक कहते हैं, लेकिन ऐसा कहा जाता है कि चौदह सौ वर्ष बाद दो व्यक्ति (संदेशवाहक) प्रकट होंगे जो विश्व में शांति स्थापित करेंगे, टोरा (धार्मिक पुस्तक) के अनुसार यहूदी कहते हैं कि यह अंतिम पीढ़ी है जबकि हिंदू कहते हैं कि यह नए युग की ओर संक्रमण का समय है।

चूंकि प्रकृति शून्यता को नापसंद करती है, इसलिए भले ही लॉकडाउन के बाद धर्म का व्यवसाय सामान्य रूप से फिर से शुरू हो गया है, लोगों को पता चल गया है कि प्रार्थना व्यक्तिगत है और इसे व्यक्तिगत रूप से या परिवार के साथ या सामुदायिक प्रार्थना की पिछली विधियों के स्थान पर समूह के साथ ऑनलाइन किया जा सकता है।

जो भी हो, वर्तमान स्थिति बहुत ही खतरनाक प्रतीत होती है और समाज में शीघ्र चर्चा की आवश्यकता है, जो कि प्रत्यक्ष, स्पष्ट और सीधी होनी चाहिए कि भविष्य में लोग किस प्रकार अपने विश्वास को बनाए रख सकते हैं और सामान्य दिनों के साथ-साथ आपात स्थिति और आपातकाल के दौरान भी किस प्रकार सांत्वना पा सकते हैं।

2. एक बुद्धिमान व्यक्ति ने इस परिदृश्य को कलयुग के प्रभाव के रूप में अभिव्यक्त किया है। कलयुग जिसे अंधकार युग या अंधकार के युग के रूप में भी जाना जाता है और कहा जा सकता है कि यह मुख्य रूप से अंधकारमय गतिविधियों (तांत्रिक, रहस्यमय और छद्म विज्ञान, बलि समारोह और बलि की लौ खाना), प्रलोभन (ग्लैमर, वेश्यावृत्ति और पोर्नोग्राफी), धोखाधड़ी (बेवकूफी, लूटपाट, चोरी और डकैती, जुआ (लॉटरी, शेयर बाजार, वायदा व्यापार आदि) हिंसा (लगातार तनाव की स्थिति में रहना और संघर्ष, युद्ध और विश्व युद्ध में शामिल होना), सोने का संग्रह करना और फिर बीयर और शराब पीकर सब कुछ भूल जाना और कलयुग को कुल मिलाकर एक परिदृश्य/स्थिति द्वारा चिह्नित किया जा सकता है जिसमें हर कोई नशे में धुत्त है और पृथ्वी के स्वयंभू या स्वयंभू राजा/स्वामी द्वारा नियंत्रित करने की कोशिश की जा रही है।

कोविड का फैलना ईश्वर की स्वाभाविक क्रिया हो सकती है, लेकिन वर्ष 2002 में एक साथ पूरी दुनिया में लॉकडाउन लगाना निश्चित रूप से ईश्वर द्वारा भेजा गया परिदृश्य नहीं था और इसे उन लोगों के समूह का शक्ति प्रदर्शन कहा जा रहा है जो नई विश्व व्यवस्था के सुंदर नारे में पृथ्वी पर पूर्ण नियंत्रण रखना चाहते हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में इस विश्वव्यापी लॉकडाउन को धर्म का पतन माना जाता है और जिस तरह से 22.04.202 को भारत के पहलगाम में आतंकवादी हमला हुआ, उसे शैतानी ताकतों द्वारा युद्ध, विश्व युद्ध की शुरुआत माना जाता है, जिसे निश्चित रूप से न केवल खदेड़ने की जरूरत है, बल्कि तब तक लड़ते रहने की जरूरत है जब तक कि ये शैतानी ताकतें खत्म न हो जाएं, सज्जनों का उत्थान न हो जाए और धर्म (मूल धर्म) की पुनर्स्थापना न हो जाए। (इन बहुआयामी सामाजिक पतनों का समाधान न तो हाल ही में भारत–पाकिस्तान, इजरायल–ईरान–अमेरिका के बीच हुए युद्ध और रूस–यूक्रेन के बीच चल रहे युद्ध से निकला है, और न ही ऐसी कोई उम्मीद है कि इन छोटे–छोटे युद्धों से समाधान निकलेगा)।

3. भारत में कई लोग राम, भगवान राम की बात करते हैं और भारत तथा विश्व में राम–राज्य (ईश्वरीय शासन) लाने की कामना करते हैं तथा इस बात की सराहना करते हैं कि रामराज्य से पहले रावण का हुक्म पूरे विश्व में चलता था और वर्तमान स्थिति भी इससे भिन्न नहीं है।
आध्यात्मिक क्षेत्र में लोग वर्तमान स्थिति के खतरनाक दौर की तुलना उस समय से करते हैं जब रावण शासक था, रावण बहुत ज्ञानी था, उसकी राजधानी लंका सोने की बनी थी, धन के संरक्षक कुबेर उसके कैदी थे, सभी दुष्ट, सभी शैतान और सभी देवता [जैसे वरुण, अग्नि, वायु, धन्वंतरि, विश्वकर्मा, यहाँ तक कि यमराज जो वायु, जल, अग्नि, स्वास्थ्य, निर्माण और यहाँ तक कि धर्म के देवता हैं] या तो उसके कैदी थे या उसके सामने झुकते थे, पृथ्वी मदद के लिए पुकारती थी और वातावरण उसकी दहाड़ से काँप उठता था, संक्षेप में कहा जा सकता है कि रावण का साम्राज्य पृथ्वी से अंतरिक्ष तक, समुद्र से लेकर पृथ्वी के नीचे तक फैला हुआ था और पृथ्वी पर रावण ने नागों (नग्न रहने वाले साधुओं) को भी परेशान करने की जहमत नहीं उठाई।

वे कहते हैं कि, यदि हम वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय स्थिति को देखें, तो हम समझ सकते हैं कि, वायु (अधिकांश मीडिया), जल (समुद्र), अग्नि (बिजली – पानी, हवा, तेल और कोयले से, और अत्यधिक ऊर्जा – परमाणु, हाइड्रोजन और डायनामाइट से), पृथ्वी (अधिकांश देशों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष शासन, सभी खाद्य, मादक पदार्थों, खनिजों और धातुओं पर नियंत्रण), आकाश (अंतरिक्ष में उपग्रह) – कुबेर (सभी बैंक और मुद्राएं – डॉलर, येन, यूरो, पाउंड और उनके माध्यम से दुनिया की अन्य मुद्राओं पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष नियंत्रण), फिर उनके सावधानीपूर्वक डिजाइन किए गए फार्मा और शिक्षा उद्योगों और वकीलों के माध्यम से कागज आधारित न्यायिक वितरण प्रणाली के माध्यम से स्वास्थ्य, शिक्षा और न्यायपालिका पर भी उनका नियंत्रण है।

फिर इन लोगों के पास सूचना और ज्ञान के खजाने पर कब्ज़ा है, इनके पास लगभग सभी लोगों का रिकॉर्ड और उनकी व्यक्तिगत पहचान है। ऐसे में आम लोग भूख से, जानवर जंगलों में लगी आग से, पक्षी इंटरनेट की चुंबकीय तरंगों से और मछलियाँ पनडुब्बियों से परेशान हो रहे हैं। इससे यह कहा जा सकता है कि

मौजूदा स्थिति भी उतनी ही गंभीर है, बस अब जो बात अलग है वो यह कि हम यह नहीं देख पा रहे हैं कि मौजूदा रावण कौन है।

ऐसी स्थिति में, यह बात सामने आई है कि इसका समाधान समाज के प्रत्येक सदस्य को देश के हर कोने में भौतिक सुरक्षा (24×7) प्रदान करने से ही संभव है, समाज द्वारा ही अधिकतम संख्या में सुरक्षाकर्मियों की तैनाती की जाए तथा समाज के प्रत्येक सदस्य को **सामाजिक सुरक्षा (** सामाजिक सुरक्षा का अर्थ है शुद्ध हवा, पीने योग्य पानी, खाने योग्य भोजन, पहनने योग्य कपड़े, रहने योग्य आश्रय, अनुग्रह और कृतज्ञता के अनुसार भुगतान पर स्वास्थ्य, न्याय और शिक्षा की सुविधा, रचनात्मक कार्य के लिए स्थान आदि **) प्रदान की जाए** । समाज के इस प्रयास से यह संभव है कि ये तथाकथित शैतानी लोग भी समाज में व्यापक मंथन के लिए सहमत हो जाएं ताकि बिना किसी बड़े युद्ध में उतरे और इन तथाकथित शैतानियों का सफाया किए राम-राज्य या ईश्वरीय लोकतंत्र जैसा सुशासन पुनः स्थापित हो सके।

उपरोक्त समाधान को लागू करने के लिए, "योद्धाओं, नेताओं, राजनेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, मीडिया कर्मियों, बेरोजगार युवाओं और अकेले बुजुर्गों से आगे आने का आह्वान (एक अनुरोध, एक आह्वान, एक अपील) किया जाता है ताकि हम सामूहिक रूप से यह सुनिश्चित करना शुरू कर सकें कि शारीरिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति को जीवन जीने का अधिकार है। भारत और विश्व में समाज के प्रत्येक व्यक्ति को सुरक्षा और सामाजिक संरक्षण प्रदान करना - सुशासन का अग्रदूत
ऊपर प्रस्तुत है,
भगवान भारत और विश्व का कल्याण करें,

भवदीय
नरेंद्र
धर्म के पुनरुत्थान के लिए,
आतंकी हमले और हमले के बाद की गतिविधियों पर लिखे गए आठ पत्रों का लिंक (24.04 से 23.06.2025 तक) भारत के साथी नागरिकों के लिए: https://resurrectionofdharma.com/assets/pdf/letter_3_other_language/pahalgam_terror_attack_letter_english.pdf ,)

वेबसाइट: resurrectionofdharma.com),
ईमेल: revivessionofdharma@gmail.com , connect@revisesionofdharma.com
यूट्यूब: धर्म का पुनरुत्थान, https://lnkd.in/gBU54_Z4
दिनांक: 06.07.2025, दिल्ली, भारत।

पत्र संख्या 1 , 24/04/2025

विषय : आतंकवादी हमला–पहलगाम, भारत: 'राष्ट्रीय जागृति का आह्वान – सुरक्षा बहाल करना, धर्म को पुनर्जीवित करना, तथा भारत को पाकिस्तान और बांग्लादेश के साथ पुनः एकीकृत करना' – विषयगत।

आदरणीय महामहिम श्रीमती द्रौपदी मुर्मू

प्रस्तुत है: यह बर्बरता है, बर्बरता को केन्द्र में आने देना, जिससे और अधिक बर्बरता पैदा हो, इस पर गहन चर्चा की आवश्यकता है तथा भारत और विश्व में इसका साहसिक क्रियान्वयन किया जाना चाहिए।

22.04.25 को पहलगाम में जो कुछ हुआ वह बर्बरतापूर्ण है, ऐसी बर्बरता को केंद्र में रखने से और अधिक बर्बरता देखने को मिलेगी। यह घटना भारत और दुनिया भर में गहन चर्चा और समाधान के साहसिक क्रियान्वयन की हकदार है।

इस कृत्य का प्रभाव निंदा, दिवंगत आत्माओं के लिए प्रार्थना या पीड़ित परिवारों को वित्तीय सहायता देने से समाप्त नहीं होगा। न ही मूल समस्या पीओके पर हमला करके, उसे हासिल करके या पूरे पाकिस्तान और बांग्लादेश पर कब्ज़ा करके हल हो जाएगी।

इस तरह की धार्मिक हत्याएं उन्नीस–अस्सी के दशक में पंजाब में भी देखी गई थीं। ये घटनाएँ कुछ महत्वपूर्ण सवाल उठाती हैं, जो कोई नहीं पूछ रहा है:

(I) पूरे समाज को अपनी सुरक्षा से वंचित क्यों रखा जा रहा है, उसे सिर्फ़ पुलिस और सेना के जवानों के रहमोकरम पर क्यों छोड़ा जा रहा है, जो कुल आबादी का एक प्रतिशत से भी कम हिस्सा हैं? 1% लोग बाकी 100% की सुरक्षा कैसे कर सकते हैं?

पारंपरिक मानकों के अनुसार – जो जनजातीय प्रणालियों और सनातन धर्म के मूल सिद्धांतों से प्राप्त हैं – 25 से 50 वर्ष की आयु के बीच की 6% आबादी को समाज की प्रत्यक्ष सुरक्षा में सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए।

(II). कोविड आपातकाल के दौरान, सभी धार्मिक केंद्रों को बंद करने के लिए मजबूर किया गया था – ऐसे समय में जब लोगों को यकीनन उनकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी। इस अधिनियम ने इन मौजूदा धर्मों की निरर्थकता को स्पष्ट रूप से उजागर किया, जिससे वे मृत संस्थाओं की तरह निरर्थक और अमान्य हो गए।

यदि ऐसा है, तो क्या हमें उन धर्मों पर मौखिक या वास्तविक संघर्ष, टकराव, लड़ाई और युद्ध में शामिल होने के बजाय धर्म (मूल धर्म) के पुनरुत्थान पर चर्चा नहीं करनी चाहिए, जो पहले से ही वैश्विक लॉकडाउन के दौरान आशा की किरण दिखाने में विफल रहे हैं और वायरस, बैक्टीरिया और प्रशासनिक अधिकारियों के सामने ढह गए हैं?

(III) क्या यह भारत को संघर्ष में घसीटने, अधिक से अधिक हथियार और शस्त्रागार खरीदने, या यहां तक कि रूस और यूक्रेन, या इजरायल और हमास की तरह भारत को लगातार संघर्ष में घसीटने, तथा दुनिया के इन तथाकथित स्वयंभू बड़े मालिकों पर अधिक से अधिक निर्भर बनाने की एक खेल योजना नहीं लगती?

(IV). पाकिस्तान के गठन का आधार धर्म और अंग्रेजों द्वारा की गई चालाकी थी। अब जबकि दोनों ही कारक फीके पड़ गए हैं – एक स्वतंत्रता के तुरंत बाद, और दूसरा कोविड के दौरान (जब धर्म ने अपनी प्रासंगिकता/महत्व खो दिया) – पाकिस्तान के लिए एक अलग इकाई के रूप में बने रहने का कोई तार्किक कारण नहीं बचा है।

पाकिस्तान और बांग्लादेश दोनों के लिए यह लाभदायक होगा कि वे अपने क्षेत्र में आम जनमत संग्रह कराएं और शेष भाग के साथ विलय कर एक भारत बनने पर विचार करें।

–इसका समाधान भारत, पाकिस्तान या बांग्लादेश के मौजूदा राजनीतिक नेतृत्व या धार्मिक धाराओं के पास नहीं है। इस मुद्दे पर तत्काल राष्ट्रीय और क्षेत्रीय संवाद की आवश्यकता है।

वैकल्पिक अर्थव्यवस्था पुस्तक में पर्याप्त रूप से कवर किया गया है , विशेष रूप से अध्यायों में: युद्ध का अर्थशास्त्र, युद्ध के कारण अर्थव्यवस्था और आर्थिक युद्ध, शासन, प्रशासन और एक स्थायी अर्थव्यवस्था के लिए इसका अनुकूलन, धर्म संस्थान (धार्मिक संस्थानों) से अर्थशास्त्र का प्रबंधन – एक अहस्तक्षेप। सामग्री को स्वतंत्र रूप से यहां देखा जा सकता है: https://resurrectionofdharma.com

–विषय पर साक्षात्कार: https://www.youtube.com/watch?v=0P-bb_FO0ns

महामहिम, इस निवेदन के माध्यम से भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश के नागरिकों से अनुरोध है कि वे उचित कदम उठाएं और भविष्य में होने वाली दुर्घटनाओं को रोकें।
ऊपर प्रस्तुत है,
भगवान् हमें आशीर्वाद दे,

पत्र संख्या 2 , 27/04/2025

आतंकी हमला–पहलगाम, भारत – पत्र क्रमांक –2/3

विषय : अपराधी (अर्थात योजनाकार और वित्तदाता, निर्देशक और अभिनेता, रसद और मीडिया समर्थन के प्रदाता आदि) और बर्बर ": पहलगाम–भारत में 22.04.25 को आतंकवादी हमले के निष्पादकों के खिलाफ हमारी कार्य योजना पर व्यापक चर्चा के लिए एक आह्वान,–के संबंध में,

प्रिय भारतवासियों:
दिनांक 24.04.2025 को सोशल मीडिया पर मेरे द्वारा पोस्ट की गई पोस्ट के क्रम में निम्नलिखित जानकारी प्रस्तुत है:

1. पहलगाम–भारत में आतंकी हमले की संभावित योजना से संकेत मिलता है कि पहलगाम में आतंकी हमला एक सुनियोजित (ठंडे खूनी और बर्बर कृत्य की योजना पहले से ही बनाई गई थी, फिर बर्बर तरीके से और ठंडे खूनी तरीके से अंजाम दिया गया) कृत्य था, जिसका उद्देश्य एक बड़ा नुकसान पहुंचाना था। आध्यात्मिक जगत में कहा जा रहा है कि पहलगाम–भारत में दिनांक 22.04.2025 को हुआ आतंकी हमला निम्नलिखित बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा किया गया था:

i) खनन बहुराष्ट्रीय कंपनियां मुख्य रूप से जम्मू और कश्मीर में अट्ठावन लाख टन लिथियम भंडार पर नजर गड़ाए हुए हैं। चर्चा हो रही है कि इन लिथियम खनिकों की कार्यप्रणाली पहले सामाजिक दरार पैदा करना और पाकिस्तान के खिलाफ तीव्र भावनाएं पैदा करना है और जब युद्ध छिड़ जाता है तो इन खनिज समृद्ध क्षेत्रों के जंगलों में आग लगाना (जैसे हाल ही में अमेज़न के जंगल, ऑस्ट्रेलिया के जंगल, म्यांमार (राखाइन क्षेत्र–रोहिंग्या) लॉस–एंजेल और संयुक्त राज्य अमेरिका के अन्य हिस्से में लगी आग (**राष्ट्रीय अग्नि समाचार, 25 अप्रैल, 2025** : पिछले सप्ताह छब्बीस नई बड़ी आग की सूचना मिली थी। पूर्वी क्षेत्र में बड़ी आग की गतिविधि बढ़ गई और दक्षिणी, उत्तरी रॉकी और रॉकी पर्वत क्षेत्रों में जारी है)

ii) स्विटजरलैंड में पर्यटन से कमाई करने वाली बहुराष्ट्रीय कंपनियां। पहलगाम में जिस तरह से आतंकी हमला हुआ, उससे कश्मीर घाटी में पर्यटन लगभग खत्म हो जाएगा।

iii) बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ जो डायनामाइट और बम, हथियार और शस्त्रागार, लड़ाकू जेट और पनडुब्बियाँ सप्लाई करके पैसे कमाती हैं। जिस तरह से आतंकी हमले की योजना बनाई गई और उसे अंजाम दिया गया, उससे साफ पता चलता है कि वे पाकिस्तान और भारत के बीच प्रत्यक्ष युद्ध देखना चाहते हैं और अदृश्य भारत बनाम बाकी जैसे रूस और यूक्रेन, इजरायल और हमास।

iv) बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ जो अपने अस्पतालों और दवा व्यवसाय के ज़रिए कमाई करती हैं। इस आतंकी हमले से भारत में आंतरिक अस्थिरता पैदा होगी, जिससे इन बहुराष्ट्रीय कंपनियों को नियंत्रित करने की शक्ति खत्म हो जाएगी और एक बार जब उन्हें भारत में खुली पहुंच मिल जाएगी तो देश और इसके दुखी लोगों की दुर्दशा से कमाई करना इन कंपनियों के लिए आसान काम हो जाएगा।

v) छुपी हुई बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ जो अपने नशीले पदार्थों के कारोबार से पैसे कमाती हैं। इस आतंकी हमले की योजना कश्मीर में भारत के पंजाब और मणिपुर तथा विश्व के कोलंबिया और अफ़गानिस्तान जैसी परिस्थितियाँ पैदा करने के लिए बनाई गई है। कहा जाता है कि इन बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अपने शरारती कामों को अंजाम देने के लिए CIA (कोकेन आयात करने वाली एजेंसी या भांग आयात करने वाली एजेंसी), OIC (अफीम आयात करने वाले संगठन) और WEF (खरपतवार निर्यात करने वाला मंच) से पूरा समर्थन मिल रहा है।
इनका मुकाबला कैसे किया जाए और की गई बर्बरता का बदला कैसे लिया जाए, इसके बारे में वैकल्पिक अर्थव्यवस्था नामक पुस्तक में जानकारी दी गई है (निःशुल्क डाउनलोड के लिए: revivenofdharma.com)।

इस बर्बर कृत्य ने हमारी आंखें खोल दी होंगी कि हम बयानबाजी से प्रभावित न हों, बल्कि दृढ़ता, साहस तथा पूरी समझ और तैयारी के साथ खड़े हों।
ऊपर प्रस्तुत है,
भगवान् हमें आशीर्वाद दे,

भवदीय
नरेंद्र
धर्म के पुनरुत्थान के लिए
ईमेल: revivessionofdharma@gmail.com , connect@revisesionofdharma.com
वेबसाइट: resurctionofdharma.com

संदर्भ हेतु पुस्तकों और साक्षात्कारों का लिंक:
1. पुस्तक – "वैकल्पिक अर्थव्यवस्था–प्राकृतिक व्यवस्थित अर्थव्यवस्था (भारतीय समाज के लिए एक आर्थिक एजेंडा–घोषणापत्र)", और " धर्म और उससे जुड़े मुद्दों पर कुछ, इसके आत्मसात करने की आवश्यकता (धर्म का आत्मसात और अर्थशास्त्र, न्यायपालिका और प्रशासन का पुनर्गठन और इसकी तात्कालिकता क्या, क्यों और कैसे)"। निःशुल्क डाउनलोड उपलब्ध है,

2. साक्षात्कार: https://youtu.be/dPbQKk2gMVk?si=jU1fFekQtoT2wE9m ,

इन मुद्दों को "वैकल्पिक अर्थव्यवस्था" पुस्तक में पर्याप्त रूप से कवर किया गया है, विशेष रूप से: युद्ध की अर्थव्यवस्था, युद्ध के कारण अर्थव्यवस्था और आर्थिक युद्ध, और धर्म संस्थान (धार्मिक संस्थान) से अर्थव्यवस्था के प्रबंधन पर विषय और इसे वेबसाइट: resurrectionofdharma.com से स्वतंत्र रूप से देखा जा सकता है।
भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश के नागरिकों से अनुरोध है कि वे उचित कदम उठाएं और दुर्घटना को टालें।
भगवान् हमें आशीर्वाद दे

भवदीय,
नरेंद्र
धर्म के पुनरुत्थान के लिए
ईमेल: resurrectionofdharma@gmail.com ,
connect@resurrectionofdharma.com , वेबसाइट: resurrectionofdharma.com

<u>पत्र संख्या 3 , 01/05/2025</u>

पहलगाम में आतंकी हमला – भारत (पत्र संख्या 3/3 और समापन) ,

विषय: पहलगाम – भारत में आतंकवादी हमले के अपराधियों को दंडित करने के लिए संभावित कार्रवाई के संबंध में दिनांक: 22.04.2025:

प्रिय भारतवासियों:
सोशल मीडिया पर दिनांक 24.04 और 26.04.2025 को मेरे द्वारा पोस्ट किए गए पोस्ट और यहां उल्लिखित गणमान्य व्यक्तियों को ईमेल द्वारा भेजी गई टिप्पणियों के क्रम में, निम्नलिखित प्रस्तुत है:

इस पत्र में प्रस्तुतियां शासन प्रक्रिया के गहन अवलोकन (वर्ष 2003 से) के बाद, देश के शीर्ष राजनीतिक नेतृत्व (कांग्रेस और भाजपा) के साथ संवाद, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक क्षेत्रों में बड़ी संख्या में नेताओं के साथ बातचीत, फकीरों और संतों के साथ बातचीत (इस तरह के प्रभाव के आभार पत्र लिंक्डइन और फेसबुक में व्यक्तिगत प्रोफाइल में देखे जा सकते हैं) और कुछ समय एकांत में बिताने के बाद की गई हैं और इस तरह कहा जा सकता है कि यह भारत के साथी नागरिकों के उचित ध्यान, प्रतिक्रिया और सुविचारित कार्यों का हकदार है।

इस पत्र में निम्नलिखित बातें शामिल हैं:
खंड–ए, इस मुद्दे पर पहले के दो पत्रों का संक्षिप्त विवरण दिनांक 24.04 और 26.04.2025, **खंड–बी,**
(1) वर्तमान स्थिति पर पुराने बुद्धिजीवियों के बीच चर्चा, विशेष रूप से दिनांक 22.04.2025 को पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद उत्पन्न स्थिति पर चर्चा
(2). आतंकवाद और युद्ध पर,
(3). मूल परिभाषा धर्म (मूल धर्म), धर्म संस्थान (मूलभूत बातों का ध्यान रखने वाली धार्मिक संस्था) और राजनीति (नैतिकता के साथ शासन),
(4) हिन्दू धर्म, सनातन धर्म और सिख धर्म पर प्राचीन काल के बुद्धिमानों के मध्य हुई चर्चा,
(5). समाधान की दिशा में कार्रवाई – जनमत संग्रह की श्रृंखला,
(6) **उपरोक्त गतिविधियों को आरंभ करने के लिए भारत एक बेहतर स्थान क्यों हो सकता है:**

निम्नलिखित प्रस्तुत है:
एक खंड,
इस मुद्दे पर पहले लिखे गए दो पत्रों का संक्षिप्त विवरण (दिनांक 24.04 और 26.04.2025):

1. दिनांक 24.04.2025 के पत्र का संक्षिप्त विवरण

(ए) 22.04.25 को पहलगाम में जो कुछ हुआ, वह बर्बरतापूर्ण है, जिससे बर्बरता को केन्द्र में लाने की अनुमति मिली और अधिक बर्बरता पैदा हुई, इस पर गहन चर्चा की आवश्यकता है तथा भारत और विश्व में साहसिक क्रियान्वयन की आवश्यकता है।

इस कृत्य का प्रभाव केवल दिवंगत आत्मा की निन्दा और प्रार्थना, पीड़ित परिवारों को आर्थिक सहायता देने से समाप्त नहीं होगा और न ही यह पीओके पर हमला करके और पीओके या यहां तक कि पूरे पाकिस्तान को हासिल कर लेने से मूल मुद्दे का समाधान करेगा।
इस प्रकार की धार्मिक हत्याएं अस्सी के दशक में पंजाब में भी होती थीं।

(बी) यह घटना कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न उठाती है, जो कोई भी नहीं पूछ रहा है:
i. पूरे समाज को अपनी सुरक्षा से वंचित करके उन्हें पुलिस और सेना (जो कुल जनसंख्या का एक प्रतिशत से भी कम है) की दया पर क्यों छोड़ा जा रहा है। 1% लोग 100% आबादी की सुरक्षा कैसे कर पाएंगे?

मानक के अनुसार (आदिवासी और सनातन धर्म के मूल सिद्धांतों से प्राप्त) 25 से 50 वर्ष की आयु समूह के बीच की आबादी का छह प्रतिशत (भारत की वर्तमान जनसंख्या 130 करोड़ से अधिक होने पर यह आठ करोड़ से अधिक है, जिसमें चार करोड़ महिलाएं आंतरिक सुरक्षा प्रदान करती हैं और चार करोड़ पुरुष बाहरी सुरक्षा से निपटने के लिए प्रशिक्षित हैं) समाज की प्रत्यक्ष सुरक्षा में तैनात किया जाना चाहिए।
ii. कोविड ने आपातकाल के दौरान सभी धार्मिक केंद्रों को बंद करने के लिए मजबूर किया, जबकि लोगों को इसकी अधिक आवश्यकता थी, और इसने स्पष्ट रूप से सभी सहवर्ती धर्मों को मृत इकाई की तरह शून्य और अमान्य घोषित कर दिया है। यदि ऐसा है तो क्या हमें उन धर्मों पर मौखिक या वास्तविक टकराव, लड़ाई या यहां तक कि युद्ध में लिप्त होने के बजाय धर्म (मूल धर्म) के पुनरुत्थान पर चर्चा नहीं करनी चाहिए, जो विश्वव्यापी लॉकडाउन के दौरान आशा की किरण नहीं दिखा सके और वायरस, बैक्टीरिया और प्रशासनिक एजेंसियों के आगे झुक गए?

iii. क्या यह भारत को संघर्ष में घसीटने , अधिक से अधिक हथियार और शस्त्रागार खरीदने, या यहां तक कि रूस और यूक्रेन, या इजरायल और हमास जैसे संघर्ष में भारत को घसीटने, दुनिया के स्वयंभू बड़े मालिकों पर अधिक से अधिक निर्भर होने की एक गेम प्लान नहीं लगती है।

4. पाकिस्तान के निर्माण का आधार धर्म और अंग्रेजों की चालाकी बताया गया। अब जब दोनों ही कारण गायब हो गए हैं, एक तो आजादी की घोषणा के तुरंत बाद और दूसरा कोविड के दौरान (जब धर्म ही अप्रासंगिक हो गया) तो पाकिस्तान के अलग रहने का कोई मतलब नहीं रह जाता। पाकिस्तान (और बांग्लादेश) के लिए अच्छा होगा कि वे अपने देश में आम जनमत संग्रह करवाएं और अपने बचे हुए हिस्से के साथ मिलकर एक भारत बन जाएं।

v. ऐसा प्रतीत होता है कि भारत के प्रमुख राजनीतिक वर्ग और धार्मिक धाराओं के साथ-साथ पाकिस्तान और बांग्लादेश के पास भी इसका समाधान नहीं है। भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश के नागरिकों से अनुरोध है कि वे उचित कदम उठाएं और भविष्य में किसी भी दुर्घटना को टालें।

(2). दिनांक 26.04.2025 के पत्र का संक्षिप्त विवरण

(ए) पहलगाम-भारत में आतंकवादी हमले की संभावित योजना से पता चलता है कि पहलगाम में आतंकवादी हमला एक सुनियोजित कृत्य था (यह निर्मम और बर्बर कृत्य पूरी योजना के साथ रचा गया प्रतीत होता है, फिर बर्बर तरीके से और निर्मम तरीके से अंजाम दिया गया) और ऐसा प्रतीत होता है कि इसका उद्देश्य एक बड़ा हमला करना था।

आध्यात्मिक जगत में कहा जा रहा है कि दिनांक 22.04.2025 को भारत के पहलगाम में हुआ आतंकवादी हमला निम्नलिखित बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा रचा गया था:

i) खनन बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ मुख्य रूप से जम्मू-कश्मीर में अट्ठावन लाख टन लिथियम भंडार पर नज़र गड़ाए हुए हैं। चर्चा है कि इन लिथियम खननकर्ताओं की कार्यप्रणाली पहले सामाजिक दरार पैदा करना और पाकिस्तान के खिलाफ़ तीव्र भावनाएँ पैदा करना है और जब युद्ध छिड़ जाता है तो इन खनिज समृद्ध क्षेत्रों के जंगलों में आग लगाना (जैसे हाल ही में अमेज़न, ऑस्ट्रेलिया, म्यांमार (राखिन क्षेत्र-रोहिंग्या), लॉस-एंजेल और अमेरिका के अन्य भाग के जंगलों में आग लगाई गई थी ताकि खनन के लिए एक साफ जगह उपलब्ध हो सके।

ii) बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ जो स्विटजरलैंड में पर्यटन से आय अर्जित करती हैं।

iii) बहुराष्ट्रीय कम्पनियां डायनामाइट और बम, हथियार और शस्त्रागार, लड़ाकू विमान, पनडुब्बियां आपूर्ति करने से कमाई करती हैं तथा विभिन्न देशों के बीच युद्ध की व्यवस्था और प्रबंधन करके भी कमाई करती हैं, जैसे कि वर्तमान में रूस और यूक्रेन, इजरायल और हमास के बीच युद्ध चल रहा है।

iv) बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ जो अपने अस्पतालों और दवा व्यवसाय से कमाई करती हैं।

v) बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ जो अपने नशीले पदार्थों के व्यापार से पैसे कमाती हैं। इस आतंकी हमले की योजना कश्मीर में भारत के पंजाब और मणिपुर तथा विश्व के कोलंबिया और अफ़गानिस्तान जैसे हालात पैदा करने के लिए बनाई गई है। कहा जाता है कि इन बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अपने नापाक कामों को अंजाम देने के लिए CIA (कोकेन आयात करने वाली एजेंसी या भांग आयात करने वाली एजेंसी), OIC (अफीम आयात करने वाले संगठन) और WEF (खरपतवार निर्यात करने वाला मंच) से पूरा समर्थन मिल रहा है।

(बी) इनका मुकाबला कैसे करें और की गई बर्बरता का बदला कैसे लें, इसके बारे में वैकल्पिक अर्थव्यवस्था नामक पुस्तक में पर्याप्त जानकारी दी गई है (मुफ्त डाउनलोड के लिए: resurrectionofdharma.com)।

खंड-बी,

(1) वर्तमान स्थिति, विशेषकर दिनांक 22.04.2025 को पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद उत्पन्न स्थिति पर प्राचीन विद्वानों के मध्य चर्चा:

(1.1) आध्यात्मिक जगत में कहा जा रहा है कि पहलगाम में हुई हत्या और हमारी बेटियों और बहनों को विधवा या अनाथ बनाना रावण द्वारा माता सीता के अपहरण से भी अधिक गंभीर है , इसलिए यह स्पष्ट है कि इस बर्बर हत्या के बाद अपराधी [अर्थात इसके योजनाकार और वित्तपोषक, कहानीकार और निर्देशक, रसद प्रदाता और मीडिया संचालक, अभिनेता (निष्पादक) और सहायक कर्मचारी] और लाभ चाहने वालों का सफाया निकट है।
कुछ ज्योतिषियों के अनुसार अपराधियों का सफाया दिसंबर 2026 तक शुरू हो जाएगा और 2031 तक पूरा हो जाएगा, जिसके बाद सुशासन की स्थापना होगी, जो काफी हद तक 2036 तक पूरी हो जाएगी।

आध्यात्मिक जगत में कहा जा रहा है कि वर्ष 2031 तक हिन्दू, यहूदी, बुद्ध, जैन, ईसाई, मुस्लिम और सिख शब्द लुप्त हो जायेंगे और उनकी जगह धर्म शब्द का प्रयोग होने लगेगा तथा माता-पिता, बच्चों, बहन, भाई का धर्म और सेवा से संबंधित धर्म जैसे शिक्षक, विद्यार्थी इत्यादि का धर्म प्रयोग में आ जायेगा (स्वयं विकिपीडिया पर ही चालीस से अधिक शब्दों का वर्णन किया गया है)।

इसके अलावा, यह कहा जा रहा है कि वर्ष 2031 तक सोना अपनी प्रतिष्ठा खो देगा, शेयर बाजार गायब हो जाएगा, इसके साथ ही जबरन वेश्यावृत्ति और पोर्नोग्राफी समाप्त हो जाएगी, वकील, शिक्षक और डॉक्टरों का व्यवसाय खत्म हो जाएगा।

2031 तक सम्पूर्ण सामाजिक सुरक्षा (अर्थात जीने के लिए भौतिक सुरक्षा, भोजन, पानी, हवा, कपड़ा, मकान, मनोरंजन, स्वास्थ्य, शिक्षा और न्याय के साथ-साथ सभी को रोजगार के अवसर और किसी के रचनात्मक कार्य में संभावित सहयोग) का प्रावधान समाज द्वारा ही धर्म संस्थान (धार्मिक संस्था या स्थानीय सरकार का केंद्र) से कार्य करना शुरू कर देगा और कार्य तथा आय/उपज के उचित और तर्कसंगत वितरण द्वारा प्रबंधित किया जाएगा।

(1.2) यह सभी के लिए आश्चर्य की बात है कि तथाकथित शैतान और संत जब भविष्य की ओर संकेत करते हैं तो एकमत दिखाई देते हैं, लेकिन आध्यात्मिक जगत में कहा जाता है कि जब शैतान और संत दूरगामी सहमति में आते हैं और एक ही गंतव्य/भविष्य की ओर संकेत करते हैं, तो स्थिति वास्तव में भयावह/खतरनाक/अशांत कही जा सकती है।

(i) तथाकथित शैतानों का कहना है कि पृथ्वी पर स्थिति रहने लायक नहीं रह गई है और पृथ्वी सात सौ करोड़ से अधिक मानव आबादी का भार नहीं उठा सकती है और यदि हम चाहते हैं कि पृथ्वी बनी रहे तो कम से कम नब्बे प्रतिशत मानव आबादी को समाप्त करना होगा।
(ii) वर्तमान उथल-पुथल पर प्रकाश डालते हुए संतजन बड़े ही मधुर स्वर में लोगों को सांत्वना देते हुए कह रहे हैं कि सत्य का युग (सतयुग) आ रहा है, जिसमें सभी लोग स्वस्थ, सुखी और पवित्र जीवन व्यतीत करेंगे। सतयुग में पृथ्वी पर कुल तैंतीस करोड़ लोग होंगे और सभी देवता तुल्य होंगे, जिनके पास प्रचुर संसाधन होंगे।

(iii) यदि हम शैतान और संतों के संस्करणों की तुलना करें, तो यह जानकर आश्चर्य होगा कि संत आने वाले दिनों में घटनाओं के अधिक भयावह मोड़ की ओर इशारा कर रहे हैं।

ऐसी स्थिति में समाज क्या कर सकता है? इसका समाधान क्या है? आध्यात्मिक जगत में, संतों और शैतानों की भविष्यवाणियों/योजनाओं के अलावा, धर्म और धर्म संस्थानों (धर्म और धार्मिक संस्थाओं) के पुनरुत्थान को एक व्यवहार्य विकल्प के रूप में सुझाया जा रहा है।

आध्यात्मिक जगत में कहा जा रहा है कि न तो पुरानी बुद्धिमता गूगल, यूट्यूब, विकिपीडिया आदि के बिना सुखद भविष्य की बात कर सकती है और न ही ये नव-शास्त्रीय तकनीकें और गैजेट माता-पिता, दादा-दादी, गुरुओं और महापुरुषों की कहानियों के बिना सुखद भविष्य की बात कर सकते हैं, इसलिए कहा जा रहा है कि समाज में व्यापक मंथन आवश्यक है, ताकि व्यवस्था में घुले जहर को हटाया जा सके और अमृत/सार को साझा किया जा सके, ताकि समाज कायम रह सके।

(2). आतंकवाद और युद्ध पर

(2.1). आतंकवाद:
आतंकवाद किसी भी अन्य 'वाद' (जैसे साम्यवाद, सांप्रदायिकता, क्षेत्रवाद और यहां तक कि धर्मवाद) की तरह है या इन वादों से पैदा हुआ है, और आतंकवाद तभी समाप्त होगा जब इनमें से अन्य सभी वाद लुप्त हो जाएंगे।

(i) गांधी जी की हत्या हुई (वर्ष 1948 में) और पूरे आर.एस.एस. को जिम्मेदार ठहराया गया और पूरे भारत में आर.एस.एस. से सहानुभूति रखने वाले बहुत से लोगों को गिरफ्तार किया गया (जिनमें झांसी से मेरे पिता भी शामिल थे) श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या हुई (वर्ष 1984 में) और पूरे सिख समुदाय को हत्यारा करार दिया गया और बहुत से सिखों को निर्दयतापूर्वक मार दिया गया। 9/11 (वर्ष 2001 में) अमेरिका में हुआ और बहुत से लोकतांत्रिक लोगों ने पूरे मुस्लिम भाइयों को आतंकवादी करार दिया और अफगानिस्तान पर हमलों में सहयोग किया (तालिबान को मुख्य अपराधी बताते हुए), और बड़ी मुस्लिम आबादी वाले सभी देशों पर लगातार निगरानी रखनी शुरू कर दी। इसके साथ ही हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कैसे यहूदियों को जर्मनी के विकास को रोकने के मुख्य दोषी के रूप में पेश किया जा रहा था और बड़े पैमाने पर उनकी हत्या की जा रही थी।

आश्चर्य की बात यह है कि 15 अगस्त 2021 से अमेरिका ने ही तालिबान को अफगानिस्तान में शासन संभालने की अनुमति दी, भारत ने स्वयं सिख को अपना प्रधानमंत्री बनाया, आरएसएस को भारत की समवर्ती सत्तारूढ़ प्रवृत्ति का मुख्य वैचारिक मोर्चा बनने की अनुमति दी और कैसे पूरा पश्चिमी देश यहूदियों के साथ सहयोग करता है।

क्या किसी पूरे संगठन, समुदाय के लोगों की ब्रांडिंग की जा सकती है और क्या ऐसे विचार रखने की सराहना की जा सकती है? यहूदी समुदाय, मुस्लिम समुदाय, सिख समुदाय और आरएसएस के सदस्यों से

यह अपेक्षा की जाती है कि वे स्वयं पीड़ित होने के कारण ऐसा कुछ नहीं करेंगे जिससे ऐसी ब्रांडिंग को बढ़ावा मिले या फिर अगर किसी स्थानीय या दूरदराज के लाभ चाहने वाले द्वारा ऐसी ब्रांडिंग को बढ़ावा दिया जा रहा है तो वे ऐसी ब्रांडिंग को रोकने/प्रतिबंधित करने के लिए अपनी क्षमता के अनुसार हरसंभव प्रयास करेंगे।

(ii) मुंबई और भारत की संसद पर आतंकवादी हमले हजारों करोड़ के हथियारों की खरीद से सफल हुए हैं। सवाल उठता है कि क्या दो-तीन प्रतिशत धन खर्च करके और ऐसे फील्ड ट्रायल से हथियारों को वैध करके आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा नहीं दिया जा सकता।

(iii) ईंधन तेल भंडार, खनिज भंडार, हथियारों और गोला-बारूद की बिक्री से जुड़ी कई बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ चाहती हैं कि आतंकवाद और आतंकवादी बने रहें और उनके हितों की पूर्ति हो। यह एक खुला रहस्य है कि ऐसी कंपनियाँ न केवल हर संभव बहाने से लोगों के बीच नफरत और दुश्मनी को बढ़ावा देती हैं, बल्कि झड़पों, लड़ाई-झगड़ों और यहाँ तक कि विश्व युद्ध के आयोजन के लिए धन भी जुटाती हैं।

iv) मैंने स्वयं भोपाल गैस त्रासदी (2 दिसंबर 1984) देखी है और कई लोगों को उस संकट का विभिन्न प्रकार से लाभ उठाते देखा है। पिछले चालीस वर्षों के मेरे अवलोकन से यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि जिन लोगों ने मूक सामूहिक हत्याओं का लाभ उठाया या उस संकट के दौरान अपने कर्तव्यों का निर्वहन नहीं किया, उनकी मृत्यु सामान्य नहीं हुई, चाहे वे पुजारी हों, उपदेशक हों, राजनीतिज्ञ हों, डॉक्टर हों, वकील हों, व्यवसायी हों या फिर आम नागरिक हों। इसलिए मैं व्यक्तिगत रूप से दुनिया के सभी लोगों से अनुरोध करता हूँ कि कृपया पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले का (किसी भी तरह से) लाभ उठाने की कोशिश न करें, जिसने हमारी कई बहनों और बेटियों को विधवा या अनाथ बना दिया।

अक्सर ऐसा होता है कि ये आतंकवादी गतिविधियाँ सही सोच वाले और दयालु लोगों को एक साथ लाती हैं ताकि वे सद्भाव के लिए कड़ी मेहनत कर सकें। आइए प्रार्थना करें कि ये लोग साहस, स्वतंत्रता और प्रेम का पाठ समझें और केंद्र में आएँ।

(2.2). युद्ध:

अगर भारत अपने कुछ लोगों की बात सुनता है जो (इस आतंकी हमले में पाकिस्तान की संलिप्तता की सही तरह से जांच किए बिना) पाकिस्तान पर हमला करने और उसके अस्तित्व को ही खत्म करने की वकालत कर रहे हैं, तो (भारत) लोगों को पाकिस्तान के साथ क्या करना चाहिए? क्या भारत पाकिस्तान पर हमला करने और उसे खत्म करने के बाद उस भूभाग को दूसरों के लिए लूटने और लूटने के लिए छोड़ देगा या फिर भारत उसे हासिल करके भारत में विलय कर लेगा?

(i) पुराने समय के बुद्धिमान लोग पूछते हैं कि यदि वर्तमान बांग्लादेशियों और पाकिस्तानियों का बड़ा हिस्सा स्वयं ही अपने अलगाव की गलती पर पश्चाताप कर रहा है और भारत के साथ पुनः जुड़ना चाहता है, तो क्या भारत को फिर भी युद्ध करना चाहिए, या पाकिस्तान और बांग्लादेश के लोगों को अपने-अपने देश में जनमत संग्रह कराने के लिए प्रयास करना चाहिए और उन्हें उचित स्वागत के साथ और समान स्तर पर भारत के साथ पुनः जुड़ने की अनुमति देनी चाहिए।

(ii) ऐसा प्रतीत होता है कि सभी भारतीयों के मन में दो महान युद्धों की गहरी यादें हैं – एक राम और रावण के बीच का युद्ध, तथा दूसरा धर्मयुद्ध महाभारत।
यह ध्यान देने योग्य बात है कि पूरे युद्ध काल के दौरान रावण और धृतराष्ट्र (दुर्योधन) ने भी अपने शत्रुओं अर्थात् राम और पांडवों के लिए आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति श्रृंखला को अवरुद्ध नहीं किया, विपरीत परिस्थितियों की तो बात ही क्या करें।

आवश्यक वस्तुओं (जल, भोजन, वायु, बिजली, दवा) की किसी भी आपूर्ति श्रृंखला को प्रभावित करना तथा प्रार्थना या अंतिम संस्कार में प्रतिबंध लगाना प्रकृति के विरुद्ध है, इसलिए ऐसा नहीं सोचना चाहिए और यदि अनजाने में ऐसा हो जाए तो उसे तुरंत सम्मानजनक तरीके से वापस लिया जाना चाहिए।

(iii) पुराने समय के बुद्धिमान लोगों के बीच यह चर्चा चल रही है कि यदि वर्तमान पीढ़ी का खून युद्ध के लिए उबल रहा है, तो भारत को क्यों न ब्रिटेन के साथ युद्ध करना चाहिए, जिसकी जालियां बाला बाग में दुश्मन और सामूहिक हत्यारा होने की साख स्पष्ट है, हो सकता है कि पाकिस्तान और बांग्लादेश भी हमारे साथ आ जाएं (पिछले पचास–पचहत्तर वर्षों की हमारी सारी आपसी दुश्मनी भूलकर, और वह भी ब्रिटेन द्वारा संचालित और बढ़ावा दी जा रही है)। हो सकता है कि इससे हमारी और कई अन्य देशों के लोगों की कई अन्य समस्याएं हल हो जाएं।

(3). मूल परिभाषा: धर्म (मूल धर्म), धर्म संस्थान (मूलभूत बातों का ध्यान रखने वाली धार्मिक संस्था) और राजनीति (नैतिकता के साथ शासन):

(3.1) धर्म – जो सब को सम्मिलित करता है वह धर्म है, अथवा धर्म सम्पूर्ण पृथ्वी का सार है (धर्म का अर्थ है) यह है धर्म , धरा का मर्म धर्म संस्कृत में वे कहते हैं , संसार (विश्व–संपूर्ण पृथ्वी–धरा) के लिए यह सनातन धर्म है, जबकि धर्म धर्म की क्षेत्रीय अभिव्यक्ति है, 'जैसे; हिंदुस्तान के लिए यह हिंदू है, यहूदा के लिए यह यहूदी धर्म है (यहूदियों के लिए यरूशलेम)। बौद्ध, जैन और सिख हिंदू के मुख्य उपभेद हैं जबकि ईसाई, मुस्लिम और बहाई यहूदियों के मुख्य उपभेद हैं (धर्म पूरा पकड़ना का और धर्म क्षेत्र का)।

धर्म अपनी उदारता के साथ स्वतंत्रता और प्रेम के गुण पर खड़ा है, न कि भूत–प्रेत और नर्क का डर पैदा करने या खुलेआम धमकाकर लोगों को जेल में डालने की, जैसा कि कई धर्म कर रहे हैं। धर्म स्वास्थ्यप्रद है और जीवन में आने वाले सभी लेन–देन के प्रति समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है, यह न तो खुद को व्यापार में शामिल करता है और न ही व्यापारिक संस्थाओं का समर्थन/पक्षपाती करता है, साथ ही यह राजनीतिक या शासक या विस्तारवादियों का गुर्गा, प्रचारक या मुखौटा संगठन नहीं बनता है। धर्म कभी किसी को यह वर्दी पहनने या उस तरह के बाल कटवाने, 'यह पढ़ो और वह देखो', 'व्यायाम (योगिक या एरोबिक) करते समय उपदेशों को सुनने' के लिए नहीं कहता है, धर्म मूल रूप से जीवन को एक स्थायी तरीके से स्वस्थ और पवित्र बनाने में लगा हुआ है।

धर्म कभी भी किसी को भगवान को प्रसन्न करने के लिए मनुष्य या उसके विकल्प जैसे नारियल या बकरी, भैंस, भेड़, ऊँट आदि की बलि देने के लिए नहीं कहता। धर्म कभी भी किसी को बैल और भैंस को बधिया करने या पुरुष खतना या लड़की के जननांगों को किसी न किसी कारण से विकृत करने के लिए नहीं कहता, जिसमें उन्हें ब्रह्मचारी बनने के लिए मजबूर करना शामिल है, या उन्हें (लड़के और लड़कियों को) पूर्ण बलिदान से बचाने के लिए उन्हें एक इकाई बनाकर और घोषित करके जो पहले से ही प्रतीकात्मक रूप से सर्वशक्तिमान के लिए बलिदान किया जा चुका है।

धर्म किसी को भी किसी के विकास को प्रतिबंधित करने के लिए नहीं कहता है, चाहे वह मनुष्य हो या पेड़ और उन्हें बौना या बोनसाई बना दें। धर्म बस हमें जीवन का जश्न मनाने और दूसरों को भी जश्न मनाने की अनुमति देने के लिए कहता है और वह खाने के लिए कहता है जो आपके मूड को स्वस्थ रखता है और वह पीने के लिए कहता है जो आपकी आवाज़ को शांत रखता है। धर्म कभी किसी को पूजा करने के लिए नहीं कहता है और न ही धर्म किसी को किसी भी तरह या किसी भी रूप (मूर्ति) या निराकार की पूजा करने या यहाँ तक कि खुद की पूजा करवाने के लिए प्रतिबंधित करता है , धर्म बस जन्मजात विश्वास/चेतना के निर्देशों का पालन करने और अपने कर्म-कर्म को जारी रखने के लिए कहता है (कोई यह भी कह सकता है; काम ही धर्म है और काम ही पूजा है)। धर्म के लिए अंग्रेजी में कोई सटीक शब्द नहीं है; इसलिए धर्म शब्द का उपयोग किया जाता है।

धर्म की सबसे बुनियादी समझ यह है कि पूरी दुनिया एक है लेकिन एक बड़ा परिवार है, जिसे अब तक कई धर्मों ने तब तक मानने से इनकार कर दिया जब तक कि उन्होंने सभी पंथों और रंगों के लोगों को अपने धर्म के संस्करण को स्वीकार करते नहीं देखा। अब, बीमारी के प्रकोप और दुनिया भर में लॉकडाउन ने बिना किसी संदेह के साबित कर दिया है कि दुनिया एक है, अगर दुनिया एक नहीं होती, तो एक बीमारी कैसे पूरी धरती पर मौजूद बिरादरी को प्रभावित कर सकती थी।

(3.2) **धर्म-संस्थाएँ** : धर्म-संस्थाएँ वह संस्था है जो बिना किसी पक्षपात और पूर्वाग्रह के, संपूर्ण समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति आत्मनिर्भर तरीके से करती है। ऐसी आत्मनिर्भर धर्म-संस्थाएँ सदियों से निरंतर काम करती आ रही हैं। वस्तुतः, इस व्यवस्था के सतत चलने के कारण ही इस व्यवस्था को सनातन नाम दिया गया है। इसके अलावा, चूँकि इन संस्थाओं का काम पूरी धार्मिकता के साथ किया जाता है, इसलिए इसे सनातन धर्म का नाम दिया गया है। हालाँकि, कुछ लोग इसके विपरीत कहते हैं कि शाश्वतता की बुनियादी समझ के कारण ही ये संस्थाएँ निरंतर काम कर पाती हैं।

धर्म संस्थान एक ऐसी संस्था है जो भूखों को भोजन, प्यासों को पानी, निराश्रितों को आश्रय, रोगियों को उपचार, जरूरतमंदों को सलाह और न्याय, असहायों को सहायता, युवाओं को रोजगार और अकेले तथा वृद्धों को सम्मानजनक रोजगार उपलब्ध कराने के साथ-साथ अपने आस-पास के सभी व्यक्तियों को शोषण-मुक्त वातावरण में शारीरिक, आर्थिक, भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करेगी, ताकि वहां कोई अभाव, जबरन भीख मांगने और जबरन वेश्यावृत्ति न हो।

दीर्घकालिक सफल संचालन के बाद आमतौर पर जो स्पष्ट आत्मसंतुष्टि दिखाई देती है तथा पूर्णता से भी अधिक सुधार करने की मूर्खतापूर्ण इच्छा के कारण, समाज द्वारा ऐसी संस्थाओं में योगदान कम होता गया, जिससे धीरे-धीरे ऐसी संस्थाएं पिछले तीन हजार वर्षों में अस्तित्वहीन हो गईं। ये सभी धर्म - हिंदू, पारसी, यहूदी, बौद्ध, जैन, ईसाई, इस्लाम, सिख, बहाई, चाहे कितने भी समग्र होने का दावा करें, लेकिन तथ्य यह है कि इनमें से कोई भी धर्म अपने अनुयायियों को भी समान मंच पर स्थायी रूप से स्वस्थ और खुशहाल जीवन शैली प्रदान करने में सक्षम नहीं है, इसलिए धर्म संस्थान का पुनरुत्थान ही एकमात्र विकल्प कहा जा सकता है ताकि पृथ्वी पर जीवन एक बार फिर से पुनर्जीवित हो सके।

(3.3) **राजनीति-राजनीति**: राजनीति शासन की नैतिकता है और नैतिकता के आधार पर सरकार का काम करना भी है, जबकि नैतिकता वह है जो पृथ्वी और उसके पर्यावरण से निकलती है (नीति) 1. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 1 ... से :अ: है).

चूंकि पर्यावरण समय के साथ बदलता रहता है, इसलिए पर्यावरण को गतिशील इकाई कहा जा सकता है। पर्यावरण की तुलना में पृथ्वी को स्थिर इकाई कहा जा सकता है। चूंकि राजनीति पृथ्वी के साथ मजबूती से जुड़ी हुई है, इसलिए राजनीति को स्थिर कहा जा सकता है, लेकिन चूंकि राजनीति पर्यावरण के साथ प्रतिध्वनित होती है, इसलिए राजनीति भी गतिशील हो जाती है।

इस मिश्रण को देखते हुए, **राजनीति को एक ऐसा अनुभव और उसकी अभिव्यक्ति कहा जाता है जो दृढ़ होते हुए भी काफी लचीली होती है । इस** परिभाषा के मद्देनजर यह माना जा सकता है कि राजनीति एक नौकरी/पेशा नहीं बल्कि समाज और उसके आसपास के वातावरण की सामूहिक भलाई के लिए समाज के प्रति एक जुड़ाव है। ऐसी राजनीति को उन लोगों द्वारा किया जा सकता है जिनके मूल पारिवारिक जरूरतों के लिए उनके समय और धन की आवश्यकता नहीं होती है यानी ऐसे समय में जब उनके बच्चों की शादी हो जाती है, और ऐसी राजनीति में भागीदारी तब तक जारी रह सकती है जब तक कि उनके बच्चे उनकी जगह लेने के लिए उपलब्ध न हो जाएं। इसका मतलब है कि एक सक्रिय राजनीति (मतदान के साथ-साथ चुनाव लड़ना) की उम्र लगभग पचास वर्ष से पचहत्तर वर्ष तक हो सकती है। पचहत्तर वर्ष की आयु के बाद ऐसे सम्मानित व्यक्ति आमतौर पर नए लोगों को शिक्षित और प्रशिक्षित करने में शामिल होना चाहते हैं।

राजनीति एक पेशा है और राजनेता पेशेवर होते हैं, जो निश्चित रूप से अन्य व्यवसायों के समान व्यवहार के हकदार हैं, जो देश और समाज के सुचारू संचालन के लिए आवश्यक है। राजनीति मूल रूप से धर्म के ग्रंथों और/या देश के संविधान में तैयार किए गए निर्धारित नियमों और विनियमों पर पुलिसिंग है। चूंकि देश का संविधान स्थिर है (परिदृश्य और समय के परिवर्तन के साथ भी कमोबेश एक जैसा रहता है) इसलिए संविधान आम तौर पर अलग-अलग समय पर सामने आने वाले मुद्दों से निपटने में अक्षम पाया जाता है। **अंग्रेजी में राजनीति के लिए कोई सटीक शब्द नहीं है; इसलिए राजनीति शब्द का इस्तेमाल किया जाता है।**

(4) हिन्दू धर्म, सनातन धर्म और सिख धर्म पर प्राचीन विद्वानों में हुई चर्चा:

(4.1) पहलगाम में हुए नृशंस/वीभत्स/बर्बर आतंकी कृत्य और उसके बाद सबसे अधिक चर्चित शब्द हिंदू धर्म का है, जिसके बारे में सभी क्षेत्रों के नेताओं सहित अनेक लोग इशारा कर रहे हैं कि हिंदू धर्म को निशाना बनाया जा रहा है और वह खतरे में है तथा उसे बचाया जाना चाहिए।

इस संबंध में, मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि पिछले तेईस वर्षों से अधिक के अपने प्रयासों के बावजूद मैं एक भी साहित्य, यहां तक कि रामायण (बाल्मीकि) और गीता सहित समस्त पूजनीय ग्रंथों में एक भी पैराग्राफ, कविता या श्लोक नहीं ढूंढ पाया, जिसमें ब्रांड – "हिंदू धर्म या सिख धर्म या यहां तक कि सनातन धर्म" के बारे में कुछ कहा गया हो, जैसा कि हम यहूदी, बुद्ध, जैन, ईसाई, इस्लाम और बहाई धर्मों के बारे में पाते हैं।

(4.1) भारत का सर्वोच्च न्यायालय हिंदू धर्म पर अपने फैसले में केवल इतना कह सका कि हिंदू धर्म एक जीवन पद्धति है, लेकिन वह यह स्पष्ट नहीं कर सका कि वह जीवन पद्धति क्या है।

वे कहते हैं (कि हिंदू धर्म सबसे पुराना ज्ञात धर्म है जिसकी तारीखें और साधन अज्ञात हैं और यह कहा जा सकता है कि हिंदू धर्म बारहमासी, शाश्वत (अंग्रेजी में), सनातन या शाश्वत (संस्कृत में), जावेद या द्वैमी (उर्दू में) और इसी तरह अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग है। सबसे पुराने और ज्ञात साहित्य से पता चलता है कि जो प्रथा लोग पहाड़ी/यहूदी पर्वत के पास करते थे या पालन करना शुरू कर दिया था उसे यहूदी धर्म (यहूदी धर्म) कहा जाता है और वह प्रथा जो लोग हिंदुकुश पर्वत और हिंद महासागर (हिंद महासागर) के बीच करते थे उसे हिंदू, हिंदू, हिंदू धर्म, हिंदू धर्म या हिंदू धर्म का नाम दिया गया।

ब्रांड सनातन धर्म के रूप में वर्णित धर्म के संबंध में, यह कहा जा सकता है कि 'सनातन' एक विशेषता/गुण है, संज्ञा नहीं, इसलिए न तो वेद, न ही मनु स्मृति, न ही रामायण और न ही गीता में एक भी पंक्ति है जो सनातन धर्म जैसे धर्म के किसी भी ब्रांड की ओर इशारा करती है, उदाहरण के लिए नीचे पुन: प्रस्तुत गीता का एक प्रसिद्ध श्लोक केवल धर्म शब्द का उपयोग करता है, न कि हिंदू धर्म या सनातन धर्म का:
" कब कब नमस्ते धर्म का अफसोस है भारत। अधर्म का उदय यही तो आत्म है मैं बना रहा हूं
मोक्ष के लिए संतों का विनाश की ओर एफ शैतानी दस्तावेज। धर्म की स्थापना के लिए असंभव युगे युगे. ॥4-8 ॥ "

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर् भवति भारत,
अभ्युत्थानं धर्मस्य तदात्मानं सृजामयम् ।। 4-7,
परित्राणाय साधूनं विनाशाय च दुष्कृतम्।
धर्म-संस्थापनार्थाय, संभवामि युगे-युगे ।। 4-8

[जिसका अर्थ है: हे भारत (अर्जुन, बुद्धिमान, प्रबुद्ध, संपूर्ण विश्व), जब-जब धर्म की ग्लानि (दोष/क्षीणता/उदासी/पश्चाताप) होती है, तब-तब मैं धर्म की पुनर्स्थापना के लिए, साधुओं की रक्षा के लिए, दुष्टों के विनाश के लिए स्वयं का पुनर्जन्म करता हूँ और युगों-युगों में धार्मिक संस्थाओं की स्थापना को संभव बनाता हूँ। भारत शब्द का उल्लेख अर्जुन, बुद्धिमान, प्रबुद्ध और महान भारत नामक पृथ्वी के

वंशज के लिए किया गया है। यहाँ (गीता में) भारत शब्द का प्रयोग इस भूमि के टुकड़े के लिए नहीं किया गया है जिसे अब भारत-हिंदुस्तान भी कहा जाता है ।]

***नोट: किसी भी व्यक्ति के मन में, चाहे वह कोई भी हो, उपरोक्त कथनों की प्रामाणिकता के संबंध में तनिक भी संदेह नहीं होना चाहिए कि, यदि हम बड़े पैमाने पर गिरावट देख रहे हैं (स्वयं के साथ, दूसरों के साथ तथा प्रकृति के साथ हमारे दैनिक व्यवहार में) तो हम आश्वस्त हो सकते हैं कि विश्व में मंथन पहले से ही चल रहा है तथा बड़े पैमाने पर परिवर्तन आने वाले हैं। ***

(ii) सनातन का अर्थ संस्कृत में शाश्वत, अंग्रेजी में शाश्वत या बारहमासी या अनन्त, और उर्दू में जावेद या द्वमी आदि है। जब भी और जहां भी धर्मग्रंथों ने धर्म की गुणवत्ता/विशेषताओं का उल्लेख किया, उन्होंने धर्म को सनातन शब्द का उपयोग करके वर्णित किया, चाहे वह मनु स्मृति हो या कोई अन्य प्रमुख ग्रंथ। धर्म के बारे में अधिक जानकारी के लिए, कोई विकिपीडिया का भी संदर्भ ले सकता है, जिसमें कोई यह समझेगा कि धर्म (अंग्रेजी या किसी अन्य भाषा में इसका कोई समानार्थी शब्द नहीं है) के अनेक अर्थ हैं और उनकी व्याख्याएं जीवन के सभी पहलुओं को कवर करती हैं।

(iii) इसके अलावा, हम अपनी दो पुस्तकों, 'धार्यते इति धर्म (लाओ त्ज़ु द्वारा ताओ ते चिंग का पुनरीक्षण) और 'वैकल्पिक अर्थव्यवस्था (विषय संख्या 16, धार्मिक संस्थानों से अर्थव्यवस्था का प्रबंधन)' में धर्म के कई अर्थ और व्याख्याओं को समझाने की कोशिश करते हैं, जिन्हें वेबसाइट: resurrectionofdharma.com से पुस्तक को मुफ्त डाउनलोड करके देखा जा सकता है।

(4.2) वर्तमान समय में गुरु ग्रंथ साहिब को एक ऐसा ग्रंथ कहा जा सकता है जो लोगों द्वारा धर्म के बारे में पूछे गए कई प्रश्नों का उत्तर देता है, लेकिन वास्तव में मूल धर्म का पुनरुद्धार जो नानक द्वारा शुरू हुआ और दसवें गुरु (मास्टर) तक आगे बढ़ा, गुरु-गोविंद सिंह को स्थापित किया गया जब सबसे बड़े बच्चे को तैयार किया गया, विकसित किया गया और धर्म की सेवा के लिए दिया गया, पंजाब और भारत के कुछ अन्य हिस्सों में अधिकांश परिवारों ने अपना उद्देश्य भूलकर अपना समूह बना लिया जिसके लिए उन्हें पाला जा रहा था।

प्रत्येक परिवार में सबसे बड़े बेटे के इस समूह ने अपनी खुद की एक अलग संपत्ति बनाई और उसे सिख के रूप में ब्रांड किया, अपने माता-पिता का आशीर्वाद और अपने छोटे भाई-बहन से समर्थन प्राप्त करना बंद कर दिया, इसलिए पर्याप्त धन होने के बावजूद भी वे आपस में झगड़ते रहे और सभी प्रकार के नशे (सिगरेट, बीड़ी को छोड़कर) के आदी हो गए। खुद को सिख कहने वाले सभी भाइयों को गुरु गोबिंद सिंह जी और अन्य गुरुओं की मूल बातों पर फिर से विचार करने की आवश्यकता है।

(5). समाधान की दिशा में कार्रवाई - जनमत संग्रह की श्रृंखला,

भारत में हमारी कई समस्याओं का समाधान, जिसकी चर्चा ऊपर की गई है और नीचे भी दी गई है, जनमत संग्रह (**जैसे ब्रिटेन में ब्रेक्सिट**) के माध्यम से आसानी से शुरू और प्रकट किया जा सकता है, जिसके लिए

हमें सामूहिक रूप से आगे आना होगा और अपना योगदान देना होगा और इस तरह अपने जीवन को रोशन करना होगा। निम्नलिखित तीन जनमत संग्रह इस दिशा में मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं:

(5.1) "एक राष्ट्र – एक चुनाव – एक संस्था (लोकसभा)" तथा अन्य सभी संवैधानिक शक्ति केन्द्रों जैसे राज्य सरकारें, **राज्य का प्रतिनिधित्व सदन (राज्यसभा), नगरपालिकाएं, पंचायत, मंडी आदि को समाप्त करके "एक** राष्ट्र – एक चुनाव – एक संस्था" की संस्था और प्रक्रिया को अपनाकर देश अपव्यय को न्यूनतम करने, घृणा और टकराव को कम करने, शासन को सुव्यवस्थित करने, कराधान को अनुकूल बनाने, अपने सभी नागरिकों को पूर्ण सामाजिक सुरक्षा (जैसे शारीरिक, भोजन, पानी, ताजी हवा, आश्रय, कपड़े, स्वास्थ्य, शिक्षा, न्याय, रोजगार, मनोरंजन आदि) और रचनात्मक गतिविधियों में आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करने में सक्षम हो सकेगा।

इस विषय पर निम्नलिखित प्रस्तुत है:
(i). "एक राष्ट्र–एक चुनाव–एक संस्था" शब्द वैचारिक रूप से एक दवा और उपचार प्रतीत होता है, जिससे भारत में वर्तमान में व्याप्त अधिकांश बीमारियाँ समाप्त हो जाएँगी और जिनके कारण भारतीय लोगों को भारी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इसका कार्यान्वयन आसानी से उसी तरह के जनमत संग्रह द्वारा किया जा सकता है, जैसा कि यूनाइटेड किंगडम (यूके) ने हाल ही में **ब्रेक्सिट के मामले में** केवल मतपत्र के माध्यम से किया है।

(ii) एक राष्ट्र–एक चुनाव–एक संस्था के मानदण्डों को अपनाने से बच्चों (पुत्र और पुत्री), स्वयं (पति और पत्नी), माता–पिता (माता और पिता) और समाज (स्थानीय और राष्ट्रीय सरकार) के बीच **12.5% या 1/8 के समतापूर्ण स्तर पर आय/उपज/संसाधनों और कार्य/दायित्वों** के तर्कसंगत वितरण का मार्ग प्रशस्त होगा, जिससे एक ओर जहां लैंगिक असमानता, भेदभाव, बेरोजगारी और अन्याय का उन्मूलन होगा, वहीं दूसरी ओर सभी नागरिकों, अपने वास्तविक आगंतुकों को सभी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा (शारीरिक, वित्तीय, भावनात्मक और आध्यात्मिक) प्रदान की जा सकेगी, तथा देश अपने वनस्पतियों और जीव–जंतुओं, पक्षियों, पशुओं और मत्स्य पालन की स्थायी रूप से देखभाल करने में सक्षम होगा।

आय के वितरण और उससे जुड़ी जिम्मेदारी की यह प्रणाली यह सुझाव देती है कि दो बच्चे (लड़की और/या लड़का) का आदर्श, एक विवाह (पति–पत्नी की एक इकाई अर्थात दो संख्याएं), माता–पिता की एक इकाई (माता और पिता की एक इकाई अर्थात दो संख्याएं/निकाय) और शासन की एक इकाई (स्थानीय और राष्ट्रीय अर्थात दो संख्याएं/निकाय) सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने का सबसे अच्छा तरीका कहा जा सकता है।

और साथ ही आय के वितरण की यह प्रणाली यह भी दर्शाती है कि बच्चों, वैवाहिक साझेदारों और शासकीय इकाई की संख्या में प्रत्येक वृद्धि के साथ आय में एक या दूसरे की हिस्सेदारी का त्याग हो जाता है और इससे परिवार, समाज और देश में असामंजस्य पैदा होता है और इस प्रकार यह हमें इस आदर्श का अनुसरण करने का सुझाव देता है।

यहाँ कोई भी व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से अपने बच्चों की संख्या और वैवाहिक संबंधों की संख्या के मानदंड/लक्षण का पालन करने से असहमत हो सकता है, क्योंकि यह उसकी स्वतंत्रता का हनन है और व्यापक स्तर पर इस पर बहस की जा सकती है और इस पर सहमति भी हो सकती है, लेकिन सामूहिक रूप से हमारी जो व्यवस्था होनी चाहिए, वह ऐसी होनी चाहिए जो दूसरों की कीमत पर किसी के अधिकार को खतरे में न डाले और इस प्रकार शासन की एक इकाई (स्थानीय और राष्ट्रीय यानी दो संख्याएँ/निकाय) ही रखने का सुझाव दे। इससे पता चलता है कि हमें **सभी अट्ठाईस राज्य सरकारों, राज्यसभा, पंचायत** आदि को त्यागकर "एक राष्ट्र-एक चुनाव-एक संस्था" (लोकसभा) और संसद सदस्य के नेतृत्व में उसी अवधि के लिए चुने गए स्थानीय विशेषज्ञों की टीम की मदद से **स्थानीय सरकार चलाने की जरूरत है।**

(5.2). एक राष्ट्र – एक भविष्य – एक संस्कृति : गाय के मांस (गोमांस) के उत्पादन, उसके उपभोग और निर्यात पर सामाजिक-आर्थिक-धार्मिक-राजनीतिक स्थिति, और गाय पर तथाकथित बयानबाजी – कि गाय, गंगा नदी, पृथ्वी और जो महिलाएं अपने जैविक माता-पिता के अलावा शिशुओं को दूध पिलाती हैं, वे भी माताएं हैं और हमारी जैविक मां के समान ही दर्जा और सम्मान की हकदार हैं, यदि भारत स्वस्थ और खुशहाल रहना चाहता है।

इस विषय पर निम्नलिखित प्रस्तुत है:

(5.2.1) उनका कहना है कि जब तक गौवंश के साथ दुर्व्यवहार (इनमें से कई लोग गाय को माता मानते हैं, उस मादा के समान जो अपनी जैविक मां की अनुपस्थिति में नवजात शिशु को स्तनपान कराती है और उसका पालन-पोषण करती है, जैसे यशोदा भगवान कृष्ण के लिए थी और कई अन्य उदाहरण जैसे राजा अकबर) – किसी भी कारण से जैसे गौवंश को उचित भोजन, पानी, आश्रय न देना; गाय को प्रतिदिन ऑक्सीटोसिन का इंजेक्शन लगाना ताकि उसका निप्पल और दूध देने वाला हिस्सा ढीला हो जाए (जो आमतौर पर बच्चे को जन्म देने में आसानी के लिए उपयोग किया जाता है); या स्वचालित दूध-दूध निकालने वाली मशीनों का उपयोग करना; कृत्रिम गर्भाधान विधियों से गाय को गर्भवती करना; गाय को उसके बछड़े को ठीक से दूध पिलाने से वंचित करना; नर बछड़ों को उचित भोजन न देना और उन्हें सर्दियों में ठंड में मरने के लिए खुले में छोड़ देना (क्योंकि वे ट्रैक्टर आने के बाद बेकार हो गए हैं); या बछड़ों को बधिया कर उन्हें बैल की जगह बैल बना देना – और अंत में, जब गाय दूध देना बंद कर दे, तो उसे खुले में रहने के लिए छोड़ देना और कचरा खाकर जीवित रहना, या किसी कसाई द्वारा उसे मैन्युअल रूप से या स्वचालित मांस/गोमांस उत्पादन केंद्रों में मारने के लिए ले जाना और उसके मांस को भारत या किसी विदेशी देश में खाने के लिए बेचना, उसकी खाल को ज्यादातर टेनरियों (ज्यादातर नदियों के पास स्थित, जो माँ गंगा सहित नदियों को प्रदूषित करती हैं) में उपचारित करने के बाद चमड़े के जूते या परिधान के रूप में इस्तेमाल करना, और उसके सींग और हड्डियों को फार्मेसी, टूथपेस्ट और बर्तन (चीनी मिट्टी) बनाने वाले उद्योगों में मनुष्यों द्वारा आगे के उपभोग के लिए इस्तेमाल करना।

मनुष्यों द्वारा गौवंश पर किए गए अत्याचारों और अपराधों के कारण अनेक द्वितीयक और तृतीयक क्षतियाँ हुई हैं, जैसे:

(i) दूध दुहने में आसानी के लिए गायों को ऑक्सीटोसिन का बार-बार और नियमित इंजेक्शन लगाने से उनका शरीर इतना जहरीला हो गया कि जब कोई गाय खुले में मरती और गिद्ध (प्राकृतिक मैला ढोने

वाले) उसे खाते तो वे भी गाय के जहरीले शरीर के कारण मर जाते, जिससे गिद्ध पूरी तरह विलुप्त हो गए। इस तरह प्राकृतिक मैला ढोना बंद हो गया।

इसके अलावा, गंगा और यमुना नदियों के किनारों पर जानबूझकर चमड़े के कारखाने स्थापित करने (मुख्य रूप से उन भारतीयों को अपमानित करने और उन्हें अपने अधीन करने के लिए, जो गंगा नदी को अपनी मां मानते हैं) और रासायनिक रूप से मिश्रित अपशिष्ट जल को गंगा नदी में प्रवाहित करने की अनुमति देने के कारण, गंगा डॉल्फ़िन की पूरी प्रजाति विलुप्त हो गई।

(ii) पहले भारतीय अभिजात वर्ग में, फिर आम लोगों में दूध के साथ चाय और कॉफी की शुरूआत के कारण वन भूमि में अकल्पनीय कमी आई (गाय, भैंस के लिए घास, चीनी, चाय की पत्ती, कॉफी के बीज, इलायची, अदरक आदि की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए, जो दूध के साथ चाय और कॉफी के लिए आवश्यक है), जिससे जंगलों में पाए जाने वाले अधिकांश पक्षी, जानवर और सरीसृप विलुप्त हो गए हैं – या विलुप्त होने का कारण बन रहे हैं।

(iii) ग्रे मार्केट में हुए आविष्कारों के बाद कि घी – बहुत सम्मानित गाय का घी – स्थानीय बॉयलरों में गायों के मांस को संसाधित करते समय कुछ रसायनों को मिलाकर भी बनाया जा सकता है (जिसका उपयोग प्रार्थना के दौरान दीपक जलाने और प्रसाद तैयार करने में समान रूप से किया जा सकता है, जैसे तिरुपति बालाजी में लड्डू जैसी मिठाइयाँ आदि), जो विलुप्त हो रहा है वह है भारत के लोगों की भावनात्मक और धार्मिक भावना।

(iv) मदर डेयरी के नाम से दूध वितरण केन्द्र खोलना गौवंश पर हो रहे अत्याचारों का उपहास और मज़ाक उड़ाना है, जबकि अमूल, सुधा, पारस, पराग और मदर डेयरी की तथाकथित सफलता की कहानियाँ गौवंश पर अपराध की कहानियाँ हैं। डेयरी विकास बोर्ड की स्थापना, डेयरी विकास मंत्रालय का गठन, दूध (अर्थात गोमांस) उत्पादन बढ़ाने के लिए अनुसंधान पर धन देना, गौशालाओं को आसान ऋण देना और गायों को सब्सिडी या मुफ्त घास देना – यह सब गौवंश के विरुद्ध सरकार द्वारा किए जा रहे अपराध में छिपा हुआ योगदान कहा जा सकता है। जबकि गोमांस और जीवित पशु आहार के निर्यात की अनुमति देना सरकार द्वारा गौवंश पर किए जा रहे अपराध का खुला प्रदर्शन है।

मनुष्यों द्वारा कुल के विरुद्ध अत्याचार और अपराध, तथा इसके विपरीत गायों और अन्य सभी पक्षियों, जानवरों, सरीसृपों और मत्स्यपालकों के कुल का अभिशाप जो भयानक रूप से मर गए और विलुप्त हो गए – ऐसे में किसी भी साहसी कदम की न तो धर्म संसद से, न ही राजनीतिक संसद (संसद) से और न ही भारत के सर्वोच्च न्यायालय से उम्मीद की जा सकती है। जागृत आत्मा द्वारा विशेष प्रार्थना और फिर देश में जनमत संग्रह के अलावा, कुछ भी गाय की स्थिति को नहीं बदल सकता और गाय, गंगा, पृथ्वी, हमारी जैविक माँ और शिशु अवस्था से लेकर वयस्क अवस्था तक बच्चे की देखभाल करने वाली के प्रति हमारे गर्व को बहाल नहीं कर सकता।

(5.2.2) ऐसा क्यों है कि गाय को न केवल माता माना जाता है बल्कि उसकी सराहना भी की जाती है, फिर गंगा को माता, पृथ्वी को माता, तथा जैविक मां के अलावा अन्य महिला को भी माता माना जाता है जो शिशु को स्तनपान कराती है तथा उसकी देखभाल करती है?

माता और पिता की उपाधि या पद न तो मांगा जा सकता है, न ही प्राप्त किया जा सकता है, न ही स्वयं आदेश दिया जा सकता है या दूसरों द्वारा प्रदान किया जा सकता है। बल्कि माता और पिता की उपाधि या पद ईश्वर की कृपा है जो किसी आत्मा की शिशु अवस्था में उसके स्वाभाविक गुणों में परिवर्तन किए बिना उसकी यात्रा को चलने देती है या सहायता करती है। चूंकि गाय का दूध किसी भी शिशु (चाहे वह मनुष्य हो, कुत्ता हो, बकरी हो, बिल्ली हो, घोड़ा हो, शेर हो, हाथी हो आदि) के स्वाभाविक गुणों में परिवर्तन नहीं करता, इसलिए गंगा नदी का जल और पृथ्वी पर उगने वाले फल और सब्जियां भी किसी भी प्राणी के स्वाभाविक गुणों में परिवर्तन नहीं करतीं – इसलिए इन्हें भी जैविक मां के साथ–साथ मां का दर्जा दिया गया है।

भारत (और दुनिया) में गाय, गंगा, धरती और महिलाओं पर अत्याचार और अपराध जारी रहना और यहां तक कि व्यक्तियों, सरकार और समाज द्वारा इसमें इजाफा होते देखना, अज्ञानता, कायरता या विदेशी मुद्रा कमाने और गोमांस खाने वालों के तथाकथित आकाओं को खुश करने की हवस का परिणाम हो सकता है। लेकिन इस तरह के कृत्य (उपर्युक्त तथ्यों को जानने के बाद भी अत्याचार और अपराध) का जारी रहना, जल्द ही भारत के लिए विनाश का कारण बन सकता है।

सुधार (पुनरुत्थान) के लिए कार्यवाही के संबंध में देश में जनमत संग्रह ही रास्ता है।

(5.3). ' एक राष्ट्र – एक भाग्य – एक व्यवस्था': हमारे घर में, हमारे मोहल्ले में, समाज में, देश में तथा हमारे विश्व में स्वच्छता और आरोग्य (शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक) का मुद्दा, इसके सभी परिप्रेक्ष्यों में अर्थात् सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक रूप से, किसी भी स्वस्थ अस्तित्व और खुशी से रहने का आधार कहा जा सकता है, जिसके लिए **पूरे देश और विश्व में एक व्यवस्था की आवश्यकता है** ।

इस मुद्दे पर निम्नलिखित प्रस्तुत है:

(i) हमें अपने आस–पास जमा हुई गंदगी की समवर्ती स्थिति को समेकित करने की आवश्यकता है (शारीरिक गंदगी और कचरा के रूप में, भावनात्मक मनोवैज्ञानिक गंदगी और अश्लील सामग्री के रूप में, धार्मिक मौखिक दुर्व्यवहार और घृणा फैलाने के रूप में, राजनीतिक दंड से मुक्त होकर कानून बनाने और तोड़ने और प्रतिबद्धता का पालन न करने और उन्हें समय पर पूरा न करने के रूप में) और फिर अस्वास्थ्यकर स्थितियों का प्रचलन (जिसका अंदाजा बड़ी संख्या में भिखारियों, वेश्याओं की उपस्थिति से लगाया जा सकता है, फिर मासिक मुफ्त राशन प्राप्त करने के लिए कतार में खड़े लोगों की संख्या से (भारत सरकार के अनुसार, यह अस्सी करोड़ है जो भारत की आबादी का पचास प्रतिशत से अधिक है), फिर रोजगार की तलाश में कतार में लगे शिक्षित और अशिक्षित लोगों की संख्या, अकेलेपन से पीड़ित वृद्ध लोगों की संख्या, फिर अपने बकाया/ऋण का भुगतान करने में चूक करने वालों की संख्या, फिर दर्ज किए गए पुलिस मामलों और लंबित अदालती मामलों की संख्या, फिर सांत्वना चाहने वाले प्रेरक, धार्मिक प्रचारकों के उपदेशों/भाषणों में भीड़ के आकार से और फिर देश के अस्पतालों में रोगियों की संख्या में वृद्धि)।

गंदगी की समवर्ती स्थिति के समेकन के बाद हमें इस बात पर चर्चा करने की आवश्यकता है कि हम स्वच्छता कैसे बनाए रखेंगे, वे मापदंड क्या होंगे जो सफाई और स्वच्छता के संदर्भ में गंदगी और मैल को परिभाषित करते हैं, फिर यह कैसे किया जाएगा और इसे कौन करेगा और इसकी समग्र कार्यप्रणाली क्या होगी, और इस सफाई और स्वच्छता का प्रावधान कैसे सभी नागरिकों के लिए पूर्ण सामाजिक सुरक्षा (जैसे भोजन, पानी, ताजी हवा, आश्रय, कपड़े, स्वास्थ्य, शिक्षा, न्याय, रोजगार, मनोरंजन आदि) सुनिश्चित करेगा।

(5.3.1). सफाई और स्वच्छता से संबंधित विविध मुद्दे:

1. यह समझना बिलकुल स्वाभाविक है कि जब छोटे बच्चे घर पर खेलते हैं तो वे शोर मचाते हैं, बहुत सी चीजों को तोड़-मरोड़ देते हैं, कागजों को इधर-उधर फेंक देते हैं, खाने की जगह पर अधूरे खाने को छोड़ देते हैं और बर्तनों को वैसे ही छोड़ देते हैं या ज़्यादा से ज़्यादा सिंक में साफ करने के लिए छोड़ देते हैं, यानी शाम तक या रात को जब वे थक जाते हैं और सोने के लिए बिस्तर की ओर भागते हैं तो बच्चे कुछ न कुछ गड़बड़ ज़रूर करते हैं। अगले दिन और उसके बाद भी, ये छोटे बच्चे वही खेलते हैं और व्यायाम करते हैं और गंदगी, मैल और कचरा फैलाते हैं, बिना इस बात की परवाह किए कि सफाई कौन करेगा और छोटे बच्चे के लिए ज़रूरी सफाई और स्वच्छता बनाए रखने की प्रक्रिया में क्या-क्या जाता है। जाहिर है कि घर पर सफाई और स्वच्छता बनाए रखने की ज़िम्मेदारी माता-पिता और उसी परिसर में रहने वाले दूसरे बड़ों की होती है। लेकिन ज़रा सोचिए, अगर घर/मकान की नियमित सफाई और स्वच्छता का रखरखाव न किया जाए तो क्या होगा?

इसी प्रकार, जब हम (वयस्क और बुजुर्ग) कारखानों, दफ्तरों, फार्म-हाउसों, दुकानों, स्टोर आदि में खेलते/काम करते हैं, तो हम कुछ शोर मचाते हैं, बहुत सी चीजों को मसल देते हैं, कुछ कागज इधर-उधर फेंक देते हैं, खाने की अधूरी चीजें खुले में छोड़ देते हैं और कागज और प्लास्टिक के बर्तनों को ऐसे ही छोड़ देते हैं या अधिक से अधिक उन्हें साफ करने के लिए कूड़ेदान में डाल देते हैं। संक्षेप में , हम शाम तक या शायद रात तक, जब हम थक जाते हैं और आराम करने के लिए अपने घर/मकान की ओर भागते हैं, कुछ न कुछ अव्यवस्था पैदा कर ही देते हैं। अगले दिन और परसों, हम वही खेल और व्यायाम करते हैं और उतनी ही गंदगी, मैल और कचरा पैदा करते हैं, बिना इस बात की परवाह किए कि सफाई कौन करेगा, क्यों करेगा, बदले में उन्हें क्या मिलेगा, और फिर शहर में सफाई और स्वच्छता बनाए रखने की प्रक्रिया में क्या-क्या होता है, जिसकी हमें जरूरत है। जाहिर है कि शहरों में सफाई और स्वच्छता बनाए रखना समाज के माता-पिता और उसी शहर में रहने वाले अन्य बुजुर्गों की जिम्मेदारी कही जा सकती है। लेकिन जरा सोचिए, अगर शहर में नियमित रूप से सफाई और स्वच्छता का रखरखाव नहीं किया जाएगा तो क्या होगा?

(i) संयुक्त राष्ट्र संघ बेहतर सफाई के बारे में चाहे जितनी भी बड़ी बातें क्यों न करे, लेकिन मच्छर भगाने वाली दवाइयों, मच्छरों से बचाव वाली क्रीम, मच्छरदानी, फेस मास्क और सैनिटाइजर की बिक्री, हवा और पानी को शुद्ध करने वाले उपकरणों की बिक्री, दवाइयों, डॉक्टरों, प्रयोगशालाओं और अस्पतालों के बिलों

में बढ़ती हुई वृद्धि, जिसके परिणामस्वरूप गंभीर और मानसिक रोगियों की संख्या में वृद्धि, बेहतर सफाई और स्वास्थ्य के संबंध में किसी भी दावे के खिलाफ बहुत कुछ कहती है।

(ii) स्वच्छता जिसे आसानी से परिवार और समाज के स्तर पर सुलझाया जा सकता है, एक अंतर्राष्ट्रीय मुद्दा बन गया है, जिसे इस तथ्य से समझा जा सकता है कि संयुक्त राष्ट्र ने हाल ही में (वर्ष 2013 से) स्वच्छता और स्वास्थ्य पर एक बहुत बड़ा कार्यक्रम शुरू किया था, जिसका शीर्षक था "पू को लू में ले जाओ" अर्थात शौचालय को शौचालय में ले जाओ, और कई देशों को शौचालयों के निर्माण और खुले में शौच (मनुष्यों द्वारा) को समाप्त करने के लिए वित्त पोषित किया। इसके परिणामस्वरूप करोड़ों शौचालयों का निर्माण हुआ और कई विज्ञापनों में खुले में शौच की आलोचना की गई।

इस प्रमुख कार्यक्रम के बाद भी हमने विश्व भर में वायरस और बैक्टीरिया की लहरें देखीं, जो यह दर्शाता है कि यह कार्यक्रम न केवल बुरी तरह विफल रहा है, बल्कि इसने विश्व में और अधिक गंदगी/कूड़ा-कचरा और अस्वास्थ्यकर स्थिति उत्पन्न की है, जिसके परिणामस्वरूप और अधिक वायरस और बैक्टीरिया पनप रहे हैं और परिणामस्वरूप महामारियां और विश्वव्यापी महामारी बढ़ रही हैं।

* वायरस और उसके परिणामस्वरूप महामारी और वैश्विक महामारी (पिछले दो-तीन वर्षों में एक के बाद एक) के प्रसार को रोकने, नियंत्रित करने और समाप्त करने में इस सामूहिक निकाय (संयुक्त राष्ट्र) की विफलता, इस संस्था और इससे जुड़े नेताओं की दुनिया का नेतृत्व करने में असमर्थता को दर्शाती है और हमें स्वच्छता और सफाई के मुद्दे को हल करने के लिए एक व्यावहारिक रास्ता प्रदान करने के लिए एक नया दृष्टिकोण, नई सोच और सामूहिक प्रयास करने की आवश्यकता है।

कहा जाता है कि यदि हम स्वच्छता और सफाई चाहते हैं तो यह आवश्यक है कि हम न केवल गंदगी/कूड़ा-कचरा साफ करें बल्कि गंदी मानसिकता वाले लोगों से मुक्ति पाएं और सफाई और सफाई के शाश्वत कानूनों को पुनर्जीवित करें।

(ii) यदि हम अपने शिक्षा केन्द्रों की स्थिति पर नजर डालें, जहां सभी विद्यार्थियों को स्वच्छता और स्वास्थ्य का पाठ पढ़ाया जाना चाहिए तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसकी महत्ता को दर्शाने के लिए विद्यालय स्तर पर इसका चित्रण किया जाना चाहिए, तो यह निश्चित है कि वर्तमान में हमें निराशा ही हाथ लगेगी।

दरअसल, ज़्यादातर शिक्षा केंद्रों में सफ़ाई का काम कम वेतन वाले कर्मचारी या फिर ठेके पर काम करने वाले कर्मचारी को सौंपा जाता है। ये कर्मचारी या कर्मचारी फर्श साफ करते हैं, फर्श पोंछते हैं, शौचालय को रोज़ाना एक बार साफ करते हैं, लेकिन कमरे की चार दीवारें, छत और छज्जा, दरवाज़े और खिड़कियाँ, पंखे और एयर कंडीशनर, लाइटिंग के सामान, टेबल-कुर्सी के अंदर का हिस्सा, कचरे की बाल्टियाँ आदि कभी-कभार ही साफ करते हैं। इस तरह बहुत सारा काम अधूरा रह जाता है।

फाइलों और अन्य अभिलेखों, पुस्तकालय में पुस्तकों और स्टोर में रखे सामानों से धूल को शायद ही कभी साफ किया जाता है, सिवाय इसके कि संस्थान के बगीचे में पौधों और पेड़ों की पत्तियों पर पानी छिड़कने या बौछार करने की बात तो दूर की है, ताकि व्यापक स्वच्छता का दिखावा किया जा सके।

यदि शैक्षणिक संस्थानों (तथा अस्पताल, न्यायालय, प्रशासकों के कार्यालय और मंदिर/मस्जिद) में शारीरिक सफाई (जो प्रत्यक्ष है और करना कुछ हद तक आसान है) की स्थिति ही उचित नहीं है, तो द्वितीयक सफाई और तृतीयक सफाई (जो मन और हृदय की है) के स्तर के बारे में क्या कहा जा सकता है, जो इन संस्थानों को प्रदान करनी चाहिए?

(iii). यह सभी के लिए आश्चर्य की बात हो सकती है कि हिंदुओं (जो वर्तमान में प्रचलित है) से लेकर यहूदियों तक, बौद्ध से लेकर जैन तक, ईसाइयों से लेकर मुसलमानों तक, सिखों से लेकर बहाई तक किसी भी धर्म में सार्वजनिक क्षेत्र की सफाई और इसके साधनों के बारे में बात नहीं की गई है, जैसे कि समाज में सफाई कौन करेगा, वह ऐसा क्यों करेगा, वह किस उम्र में यह कार्य करने में सक्षम होगा और उसके साथ कैसा व्यवहार, सम्मान और पुरस्कार किया जाएगा।

इसके अलावा, लगभग सभी धर्म यह निर्दिष्ट नहीं करते हैं कि अन्य जानवरों, पक्षियों और मछलियों, पेड़–पौधों, पर्यावरण और प्रकृति के प्रति व्यक्ति का अधिकार और जिम्मेदारी, हिस्सा और योगदान क्या होगा, कम से कम स्वच्छ और स्वास्थ्यकर वातावरण बनाए रखने के संबंध में, और इस तरह अपने ही अनुयायियों को विकलांग और भयभीत बनाए रखा ।

(iii.i) यह तर्क दिया जाता है कि आस्था और प्रजनन हर प्राणी में जन्मजात होता है और मनुष्य सहित हर जीव के लिए इसकी जड़ें गहरी और केंद्रीय होती हैं, इसलिए अगर हम चारों ओर गंदगी/मैलापन देख रहे हैं तो यह निश्चित है कि लोगों के एक बहुत बड़े वर्ग (धर्म और क्षेत्र से परे) की आस्था डगमगा गई होगी। यह भी कहा जा सकता है कि इन सभी धर्मों ने अपनी ऊर्जा खो दी है और उनके प्रभाव की अवधि समाप्त हो गई है, परिणामस्वरूप वे अपनी प्रासंगिकता खो चुके हैं और अपने अनुयायियों को नियंत्रित करने, नियंत्रित करने और मार्गदर्शन करने में असमर्थ हैं।

ये हमें एक बहुत ही बुनियादी सवाल उठाने के लिए कहते हैं, क्या ये सभी धर्म इतने सक्षम हैं कि वे स्वच्छता और स्वास्थ्य सहित समुदाय की सभी बुनियादी और स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा कर सकें और हमें आगे ले जा सकें या फिर हमें सामूहिक रूप से मूल धर्म/मजहब पर ही पुनर्विचार करना होगा?

(iv). यह एक विडंबना है कि पिछले तीन हज़ार वर्षों की अवधि में, समाज ने अधिकांश महत्वपूर्ण कार्य राज्य/सरकार को सौंप दिए हैं, जिन्होंने बदले में इस कार्य को सरकारी अधिकारियों/सेवकों नामक कर्मचारियों को सौंप दिया है और इस प्रकार समाज और उसके लोग अपने ही किए के कैदी बन गए हैं। यह आश्चर्यजनक है कि सरकारी अधिकारियों/सेवकों (पुलिस कर्मियों और सेना) को हथियार रखने और निर्णय पारित करने सहित नियम और शर्तें तय करने की अनुमति है, लेकिन मालिक जो कि जनता है, को विपत्ति

के मामले में भी हथियार रखने और खुद को सुरक्षित रखने से वंचित कर दिया गया है और इस प्रकार वे एक असहाय व्यक्ति बन गए हैं।

प्रधानमंत्री/राष्ट्रपति/राजा–रानी (इंग्लैंड में) को छोड़कर सभी राजनेताओं के पास शक्ति नहीं है और वर्तमान में ऐसा लगता है कि सरकारी कर्मचारी देश के मालिक हैं (वे सभी वेतन, भत्ते, पेंशन, रिश्वत और यहां तक कि जबरन वसूली का आनंद लेते हैं)। ऐसा लगता है कि देश में समग्र कुप्रबंधन के कारण, असली मालिक 'जनता' कंगाल हो गई है जो अब देश के मुखिया (प्रधानमंत्री/राष्ट्रपति/राजा–रानी) और इन सरकारी कर्मचारियों की सेवा करने के लिए पैदा हुई कठपुतली की तरह दिखती है। क्या इस तरह के परिदृश्य की निरंतरता की सराहना की जा सकती है?

(v) दुनिया की मौजूदा स्थिति काफी हद तक खतरनाक प्रतीत होती है। अगर कभी–कभार युवाओं में बढ़ती बेरोजगारी और उसके कारण सार्वजनिक संपत्ति का विनाश, धार्मिक प्रतिद्वंद्विता, अंधा मशीनीकरण (इससे जुड़ी बीमारियाँ जैसे युवाओं में भारी बेरोजगारी और बुजुर्गों में अकेलापन, कुपोषण और मोटापा, मनोवैज्ञानिक विकार, अकेलापन), मानव तस्करी (और इससे जुड़ी बीमारी जैसे जबरन भीख मांगना, वेश्यावृत्ति, पोर्नोग्राफी, ड्रग्स और नशीले पदार्थ), लगभग सभी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा की अनुपलब्धता, बुनियादी नैतिकता और शिष्टाचार की घोर उपेक्षा यहाँ तक कि नेताओं और मीडिया कर्मियों द्वारा भी संकेत मिलता है कि स्थिति पूरी तरह से पतन या सर्वनाश की ओर बढ़ रही है।

कुछ अन्य लोगों का कहना है कि हम जो देख रहे हैं वह पिछले तीन हजार वर्षों की अवधि में व्यवस्था की व्यवस्थित विफलता है, जिसमें लोकतांत्रिक और स्वतंत्र देशों में एक के बाद एक राज्य और सरकारें अपने असली मालिक–नागरिक को बुनियादी सुविधाएं भी देने में विफल रहीं।

(5.3.2). **टिकाऊ समाधान का प्रतिमान**:

ईश्वर स्वच्छ एवं स्वास्थ्यकर व्यक्ति, परिवार, समाज, देश के हृदय में निवास करता है, यह बात सत्य है, लेकिन इसका एक आधा कथन यह है कि अच्छाई गंदे एवं अस्वास्थ्यकर परिवेश को त्यागती, टालती एवं दूर करती रहती है, चाहे वह व्यक्ति हो, परिवार हो, देश हो, समाज हो।

इसलिए, यदि कोई व्यक्ति जीवन की समृद्धि, विलासिता, सुख–सुविधाओं से ऊब गया है, तो वह व्यक्तिगत स्तर पर सफाई और स्वच्छता को त्यागना शुरू कर देता है और परिवार और उसके आस–पास सफाई और स्वच्छता को कम महत्वपूर्ण मामला बना देता है, फिर बीमारियां, असुविधाएं, उसके बाद गरीबी और यहां तक कि गुलामी भी अपने आप आ जाएगी।

इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति प्रकृति के सान्निध्य में स्वस्थ, सुखी और वैभवपूर्ण जीवन जीना चाहता है तो उसे पाखंड (अर्थात सफाई और स्वच्छता के संबंध में किसी धर्मग्रंथ या अन्य धर्मग्रंथों का रटना या उपदेश रटना) त्यागना होगा तथा व्यक्तिगत स्तर पर स्वयं सफाई का कार्य करना होगा तथा परिवार,

पड़ोस और समाज में अन्य लोगों के साथ सहयोग करते हुए सुविधाएं जुटाने को प्राथमिकता देनी होगी ताकि सफाई और स्वच्छता बनी रहे।

अर्थात अंतरिक्ष, जल, वायु, अग्नि और पृथ्वी का सम्मान करके उपचारक को उपचारित करना, पर्यावरण और पारिस्थितिकी के साथ हमारी बातचीत का आधार हो सकता है। इसलिए, (**उदाहरण के लिए**) जब हम कपड़े सुखा रहे होते हैं, तो हमारी प्रार्थना हो सकती है "नदी का पानी नदी में चला जाए और हमारे कपड़े सूख जाएं।"

(5.3.3) . यदि हम आदिवासियों (आदिवासी – मूल निवासी – जो शुरू से ही यहां हैं) के बीच देखें तो हम समझेंगे कि जनजाति के प्रत्येक सदस्य को उन सभी पहलुओं का ध्यान रखने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है जिनका पुरुषों और महिलाओं को अपने पूरे जीवन में सामना करना पड़ सकता है, चाहे वह सुरक्षा और संरक्षण हो, व्यापारिक लेनदेन, प्रशासन, पुरोहिताई, न्यायपालिका, या सहायक नौकरियां करना हो।

कहा जाता है कि आदिवासी–मूलवासी ही मूल हैं और सभ्य दुनिया उन पर बनी हुई या मूलवासियों से प्रेरणा लेकर बनी हुई एक संरचना है। इसलिए जब यह संरचना जीर्ण–शीर्ण होती दिखाई दे तो मूल–आदिवासियों की ओर लौटना ही एकमात्र विकल्प रह जाता है – और उनसे पुनः संकेत/निर्देश/दिशा लेना कि कैसे इन जनजातियों ने बुनियादी सुरक्षा (भौतिक सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा और आवास) का ध्यान रखा है और कैसे प्रशासन, न्याय और अपने वंश को बनाए रखा है, बुनियादी स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन और पर्यावरण संरक्षण का ध्यान रखा है और साथ ही अपनी पूजा–अर्चना भी की है जो उन्हें युगों से खुद को बनाए रखने के लिए परिपूर्ण बनाती है।

क्या हमें किसी जादू या चमत्कार के होने का इंतज़ार करना चाहिए या किसी नए देवता के आसमान से उतरकर हमारी समस्या का समाधान करने का इंतज़ार करना चाहिए? या हमें उस अवसर का लाभ उठाना चाहिए और पुनरुत्थान के लिए काम करना शुरू कर देना चाहिए?

समाज में शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वच्छता बनाए रखने के लिए बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर (विवरण वेबसाइट पर पुस्तक वैकल्पिक अर्थव्यवस्था– विषय क्रमांक 11: लाभकारी रोजगार और सम्मानजनक जुड़ाव के अवसर में देखा जा सकता है)

औद्योगीकरण के लिए औद्योगीकरण ने कई देशों को बर्बाद कर दिया है और मनुष्यों को उनकी बुनियादी गतिविधियों से वंचित कर दिया है और उन्हें समाज के निचले स्तर पर बेरोजगार और अकेला बना दिया है, जबकि बहुत अधिक मशीनों ने लोगों को अस्वस्थ, अपंग बना दिया है और समाज के उच्च आय वर्ग के लोगों को अलग–थलग कर दिया है।

मशीनों के उपयोग के संबंध में देश और समाज स्तर पर कुछ बुनियादी और दृढ़ सीमांकन की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, पीसने, काटने, टुकड़े करने और उसके वितरण के सभी कामों को मशीनों के लिए प्रतिबंधित किया जा सकता है। विद्युत और गैसोलीन से चलने वाली मशीनों के उपयोग में चुनिंदा प्रतिबंध

लगाने के सचेत और सामूहिक निर्णय से हम युवाओं के लिए बड़ी संख्या में रोजगार और अकेलेपन से पीड़ित लोगों के लिए सम्मानजनक रोजगार के अवसर पैदा कर सकते हैं, पारंपरिक तरीकों के लिए क्षेत्रों को फिर से खोलकर।

ऐसा कहा जाता है कि प्राथमिक कार्य भौतिक होना चाहिए, द्वितीयक कार्य अर्ध/आंशिक रूप से यंत्रीकृत होना चाहिए, तृतीयक कार्य तकनीकी रूप से संचालित होना चाहिए और अन्य उन्नत चरण स्वचालित होना चाहिए (जैसे कृषि और कपड़ों के लिए धागा बनाना भौतिक होना चाहिए, खाद्य प्रसंस्करण अर्ध यांत्रिक होना चाहिए, पैकिंग तकनीकी रूप से संचालित होनी चाहिए, जबकि कोई भी विशेष और उन्नत परीक्षण (जैसे मिट्टी परीक्षण), निष्कर्षण, मिश्रण, संचार स्वचालित हो सकता है।

(i) यदि हम चावल, दाल और गेहूँ जैसी खाद्य वस्तुओं की पीसने और चमकाने वाली बिजली/गैसोलीन से चलने वाली मशीनों के उपयोग को छोड़ दें या पूरी तरह से प्रतिबंधित कर दें, साथ ही आयातित उत्पादों की बिक्री पर भी रोक लगा दें, तो मोटे अनुमान के अनुसार (सितंबर 2022 के आंकड़ों के अनुसार) यह अभ्यास **केवल भारत में गेहूँ का आटा पीसने के काम में प्रति माह कम से कम सात हजार रुपये के पारिश्रमिक के साथ दो करोड़ से अधिक लोगों को रोजगार/रोजगार प्रदान करने में सक्षम होगा।** इसके अलावा, यदि हम हर क्षेत्र में शारीरिक कार्य के लिए मशीनों का उपयोग करने में विवेकपूर्ण तरीके से काम करते हैं, तो यह प्रयास कम से कम छह प्रतिशत आबादी यानी लगभग आठ करोड़ लोगों को रोजगार प्रदान करेगा।

इस अभ्यास से रोजगार/संलग्नता के अलावा, गेहूं को बिजली/गैसोलीन से संचालित आटा चक्की से मैन्युअल पीसने में बदलने से, करने वाले के साथ-साथ खाने वाले को भी अन्य स्वास्थ्य लाभ होंगे।

चूंकि मैन्युअल रूप से संचालित गेहूं आटा चक्की (चक्की) एक कम आरपीएम (प्रति मिनट क्रांति) ठंडा पीसने वाला उपकरण है, इसलिए आटे के उत्पादन में उच्च आरपीएम विद्युत संचालित आटा मिलों की तुलना में पीसने की प्रक्रिया में किसी भी खनिज और विटामिन की हानि नहीं होगी।

ऐसा कहा जाता है कि गेहूं का आटा पीसने से अग्न्याशय सक्रिय रहता है, इसलिए आटा चक्की चलाना मधुमेह से पीड़ित लोगों के लिए उपयुक्त कार्य है।

आगे, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि ये लोग, जो गेहूं और अन्य आटा उपलब्ध कराने में शामिल होंगे, कच्चे माल के साथ-साथ तैयार उत्पाद की भी कुछ मात्रा का भंडारण करना चाहेंगे, जिसके परिणामस्वरूप ऐसे उत्पादों की खरीद, भंडारण और बिक्री के संबंध में राष्ट्रीय सरकार का बोझ कम हो जाएगा और इस तरह यह कार्य लोगों और देश की आत्मनिर्भरता की ओर ले जाएगा।

इसके अलावा, बड़ी संख्या में इन हस्तचालित चक्कियों के संचालन से कुछ लाख लोगों को इसके निर्माण और रखरखाव के लिए व्यवसाय भी मिलेगा।

(ii) " युद्ध का अर्थशास्त्र, (पुस्तक: वैकल्पिक अर्थव्यवस्था)" अध्याय के अनुसार , और "एक अर्थव्यवस्था के स्थायी कामकाज के लिए कार्य वितरण" अध्याय के अनुसार , भारत की एक सौ तीस करोड़ की आबादी का एक चौथाई हिस्सा यानी लगभग बत्तीस दशमलव पांच करोड़ लोगों को सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं से जोड़ा जाना चाहिए, जैसे: **(क)** । कक्षा शिक्षा या क्षेत्र प्रशिक्षण प्राप्त करना, **(ख) । क्षेत्र ड्यूटी करना या** सुरक्षा और सुरक्षा से संबंधित विशेष असाइनमेंट में शामिल होना , **(ग)** । आवश्यकताओं की व्यवस्था और उचित प्रबंधन, खुफिया जानकारी की निगरानी और उसका विश्लेषण और सिस्टम का समग्र प्रशासन, **(घ)** । शिक्षा, प्रशिक्षण और विशेष कौशल प्रदान करना, सुरक्षा और सुरक्षा से संबंधित विवादों में जूरी होना, अनुसंधान और विकास का समन्वय आदि।

यदि हम स्वस्थ और प्रसन्न वातावरण में मनुष्य की औसत आयु सौ वर्ष मानें, तो ऊपर बताए अनुसार पच्चीस वर्ष की आयु तक व्यक्ति शारीरिक रूप से विकसित हो सकता है, शिक्षा और प्रशिक्षण ले सकता है, फिर पच्चीस से पचास वर्ष की आयु तक जमीन पर काम कर सकता है, फिर पचास से पचहत्तर वर्ष की आयु तक प्रबंधन कर सकता है और फिर पचहत्तर से सौ वर्ष की आयु तक प्रशासन, प्रशिक्षण देना और न्याय प्रदान करना शामिल है।

यदि हम इस वितरण को देखें तो सुरक्षा के लिए क्षेत्र में तैनात किये जाने वाले वास्तविक कार्मिकों की संख्या जनसंख्या का एक बटा सोलह होनी चाहिए, अर्थात 130 करोड़ जनसंख्या/16 = 8.125 करोड़ लोग।

सुरक्षा में 8.125 करोड़ लोगों की तैनाती की व्यवस्था और रखरखाव समाज द्वारा किया जाना है, इसलिए यह व्यवहार्य, वित्तीय रूप से व्यावहारिक और नैतिक रूप से उत्कृष्ट होगा।
(iii) पुस्तक – वैकल्पिक अर्थव्यवस्था के अनुसार, अध्याय – मीडिया की अर्थव्यवस्था और मीडिया द्वारा अर्थव्यवस्था का प्रबंधन, अपने बिंदु संख्या **5A में विस्तार से बताता है** कि समाज में सही जानकारी प्रदान करने और ज्ञान साझा करने के लिए प्रति सौ लोगों पर कम से कम एक पुरुष और एक महिला की आवश्यकता होगी, यानी दो प्रतिशत लोगों की, जो निवासी और अनिवासी भारतीयों के साथ-साथ मेहमानों और आगंतुकों को प्रभावी और चौबीसों घंटे सही और गुणवत्तापूर्ण जानकारी और ईमानदारी से सलाह देने के साथ-साथ यथासंभव मदद कर सकें। इसलिए, सही जानकारी प्रदान करने और ज्ञान साझा करने का यह कार्य समाज द्वारा लगभग दो करोड़ पचास लाख लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार/सगाई प्रदान करेगा ।

(iii.i) इसके अतिरिक्त बिन्दु संख्या **(5.बी)** के अनुसार मनोरंजन सुरक्षा का प्रावधान कम से कम छह प्रतिशत आबादी को रोजगार/सगाई प्रदान करेगा। उदाहरण के लिए भारत में मनोरंजन से लगभग आठ करोड़ लोगों को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार/सगाई मिलने का अनुमान है।

ऐसा कहा जाता है कि "शाम का मनोरंजन अगली सुबह के लिए अच्छी ऊर्जा लेकर आएगा, इसलिए मनोरंजन सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण है जो एक समाज और राष्ट्र अपने नागरिकों को प्रदान कर सकता है।"

(iv) " **पारिस्थितिकी तंत्र, सौर (अग्नि), वायु, जल, पृथ्वी और अंतरिक्ष का अर्थशास्त्र** " अध्याय के अनुसार , समाधान के प्रतिमान के बिंदु संख्या 4 – "वनरोपण का परिचालन और प्रबंधन पक्ष" , यदि एक व्यक्ति लगभग दो सौ पेड़ों की पूरी जरूरत को पूरा कर सकता है तो वनरोपण से प्रति जिले दस हजार लोगों को रोजगार/सगाई मिलेगी, **जो सत्तर पचास लाख से अधिक लोगों को रोजगार देने के बराबर है।** (वर्ष 2022 में जनसंख्या के अनुसार भारत में) भारत के कुल सात सौ तिहत्तर जिलों में से वन विभाग की समवर्ती व्यवस्था को बंद करके उसे समाज को सौंपकर ऐसा किया जा सकता है। यही एकमात्र तरीका है जिससे हम भारत की स्थिरता सुनिश्चित कर सकते हैं।

(v) "स्वच्छ एवं स्वास्थ्यकर अर्थव्यवस्था तथा सफाई एवं स्वास्थ्यकर अर्थशास्त्र" अध्याय के बिन्दु संख्या (4) के अनुसार , **समाधान का प्रतिमान,**

(क) पूर्व–पका हुआ खाद्य अपशिष्ट तथा पका हुआ अपशिष्ट दिन में कम से कम दो बार एकत्र करने से कचरे की समस्या का बहुत हद तक समाधान हो जाएगा, साथ ही गौवंश के लिए घास तथा पक्षियों, मत्स्यपालकों तथा अन्य पालतू पशुओं के लिए पूरक आहार की आवश्यकता कम हो जाएगी।
इस गतिविधि से देश में लगभग दस लाख नौकरियां पैदा होंगी (यह गणना करने पर कि एक व्यक्ति लगभग एक हजार की आबादी की जरूरतों को पूरा कर सकेगा, इसलिए यदि हम पहले से पका हुआ और शाम को/रात के खाने के बाद पका हुआ खाद्य अपशिष्ट एकत्र करना शुरू कर दें तो दस लाख लोगों की आवश्यकता होगी)।

(ख) महिलाओं के लिए उपयुक्त मूत्रालय ढूंढना एक वास्तविक समस्या है, जिसे सार्वजनिक स्थानों जैसे– व्यस्त बाजार, शहर के केंद्र, कॉलेज और विश्वविद्यालय, धार्मिक स्थान, तालाब और नदी के स्नान घाट, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन और हवाई अड्डे के टर्मिनलों पर बहुस्तरीय शौचालय और स्नानघर खोलकर हल किया जा सकता है, जिसमें क्लॉक रूम की सुविधा हो, लड़के और लड़कियों, महिलाओं और पुरुषों, बुजुर्गों और लोगों के लिए अलग–अलग सुविधा हो।

इन स्थानों पर अमोनिया निष्कर्षण, बायो गैस और जल उपचार के लघु संयंत्र तथा प्रसाधन सामग्री, पेयजल आदि खरीदने के लिए दुकानें हो सकती हैं। यह क्षेत्र पर्याप्त रोजगार और व्यवसाय के अवसर पैदा करेगा।

उपरोक्त उदाहरण से यह पता चलता है कि हम समाज के भीतर ही अपेक्षित संख्या में रोजगार सृजित कर सकते हैं और उसका प्रबंधन समाज द्वारा ही किया जा सकता है।

6. उपरोक्त गतिविधियों को आरंभ करने के लिए भारत एक बेहतर स्थान क्यों हो सकता है:
आमतौर पर यह देखा गया है कि प्रत्येक धर्म के प्रचारक/पुजारी स्वयं को आतंकवादियों, चोरों, लुटेरों, धोखेबाजों, लुटेरों और तथाकथित शैतानी ताकतों तथा उनकी गतिविधियों से अलग रखते हैं, लेकिन समाज में भय फैलाने तथा घृणा और दुश्मनी पैदा करने जैसे अधार्मिक कार्य करते रहते हैं ।
इन ताकतों के विपरीत, संत और साधु अच्छे काम करते रहते हैं लेकिन श्रेय लेने से खुद को दूर रखते हैं। वैसे तो हर देश में शैतान और साधु होते हैं लेकिन भारत को प्राचीन काल से ही साधुओं और संतों का निवास

माना जाता रहा है। संतों और साधुओं की मौजूदगी के कारण ही भारत-भारत के नाम से जाना जाने वाला यह देश सदियों से चली आ रही तमाम प्रतिकूलताओं के बावजूद अपनी धार्मिकता को बनाए रखने में भाग्यशाली रहा है।

इसके अलावा, संतों और साधुओं के ऐसे प्रतिष्ठित वर्ग की उपस्थिति के कारण, भारत विभाजन के दौरान हिंदू राष्ट्र बनने के लिए जबरदस्त दबाव के बावजूद, स्वयं को एक धर्म-निरपेक्ष (पूर्णतः धार्मिक) देश के रूप में बनाए रखने में सक्षम रहा है।

भारत के बारे में सकारात्मक बात यह है कि इसके बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ रहा है और अब उनमें अपने प्रति आस्था, अपनी संस्कृति और परंपराओं के प्रति गर्व देखा जा सकता है। संतों और साधुओं के आशीर्वाद से, भारत-भारत अब खुद को खड़ा होने और सनातन को पुनर्स्थापित करने, बुराइयों को खत्म करने और व्यवस्था को गति देने के लिए उपयुक्त पाता है। हम सभी को सहयोग करने की आवश्यकता है, न कि सर्वांगीण शांति और सद्भाव की बहाली के इस लंबे समय से प्रतीक्षित कार्य में बाधा बनने और बाधा उत्पन्न करने की।

अंत में, यह कहा जा सकता है कि उपरोक्त अभ्यास वास्तव में भारत के गौरव को पुनर्स्थापित करेगा, और इसलिए यह हमारे सम्मिलित प्रयासों का हकदार है।
शुभकामनाओं सहित
भगवान भारत को आशीर्वाद दें,

भवदीय

नरेंद्र
धर्म के पुनरुत्थान के लिए
ईमेल: revivessionofdharma@gmail.com , connect@revisesionofdharma.com
वेबसाइट: resurctionofdharma.com
दिनांक: 30.04.2025

पत्र संख्या 4 , 09/05/2025

युद्ध पर – धर्म के लिए युद्ध, पहलगाम में बर्बर आतंकवादी हमले का अनिवार्य परिणाम –भारत, दिनांक : 22.04.2025 – के संबंध में

–

विषय: युद्ध पर – धर्म के लिए युद्ध, दिनांक 22.04.2025 को पहलगाम में बर्बर आतंकी हमले को अंजाम देते समय निर्दोष पुरुषों को उनके परिवार के सामने मारते हुए धर्म का मुद्दा उठाने का अनिवार्य परिणाम – के संबंध में

प्रिय भारतवासियों:

निम्नलिखित प्रस्तुत है, प्रस्तुति में शामिल हैं: (1). युद्ध पर – धर्म के लिए युद्ध (2). विषय पर 24.04, 26.04 और 30.04.2025 दिनांकित हमारे पिछले सोशल मीडिया पोस्ट से प्रासंगिक भागों का पुनरुत्पादन। (3). धार्मिक कटुता क्यों युद्ध–प्रभु का आसान हथियार है?

प्रविष्टियों

(1). युद्ध पर – धर्म के लिए युद्ध

अब युद्ध छिड़ चुका है और यह कहा जा सकता है कि यह पिछले कुछ वर्षों से होने वाला एक बहुत जरूरी युद्ध है, जिसे भारत अपनी परंपरा के अनुसार हमेशा टालने की कोशिश करता है जब तक कि यह अपरिहार्य न हो जाए और इस बार यह भारत द्वारा लड़े गए पिछले बड़े युद्ध से अलग नहीं है, चाहे वह बुराई के प्रतीक रावण, मेघनाथ और कुंभकरण को खत्म करने और रामराज्य की स्थापना के लिए हो या अधर्मी धृतराष्ट्र, दुर्योधन और शकुनि को खत्म करने और फिर धर्मराज्य (मूल धर्म का शासन) स्थापित करने के लिए हो। आध्यात्मिक हलकों के लोगों के अनुसार, इस बार भी धर्म (मूल धर्म) को पुनर्जीवित करने और फिर भारत और पूरे विश्व में धर्म संस्थानों (धार्मिक संस्थानों) को स्थापित करने के लिए समवर्ती युद्ध शुरू किया जा रहा है।

(1.1) इस बार पहलगाम में दुष्ट ताकतों द्वारा किया गया अपराध शैतानी ताकतों द्वारा किए गए सभी बुरे कामों की तुलना में भयावह और बर्बर है, फिर भी, इस बार भी भारत ने अपराधियों (टीआरएफ के सदस्य जो लश्कर की एक शाखा है जो बर्बर कृत्य की जिम्मेदारी लेने का दावा करती है) को सौंपने के लिए पूरे दो सप्ताह तक इंतजार किया और शांति कायम करने और खून–खराबे को रोकने का पूरा मौका दिया। ऐसे परिदृश्य में (पूरे दो सप्ताह तक इंतजार करने के बाद भी) आतंकवादियों और उनके ठिकानों को निशाना नहीं बनाना एक कायरतापूर्ण कार्य होता, जो अन्यथा दुष्ट ताकतों को कानून तोड़ने और यहां तक कि ऐसी दुष्ट ताकतों को शासन करने और अधर्म (अधार्मिकता) का शासन स्थापित करने की अनुमति देता, जो आम तौर पर प्रकृति में बड़ी विकृतियों को जन्म देता है और सर्वनाश ला सकता है।

(1.2) अब युद्ध छिड़ चुका है और यह कहावत आम हो गई है कि – "प्रेम और युद्ध में सब कुछ जायज है", इसलिए प्रेम और युद्ध के बाद वे एक इकाई बन जाते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि अगर प्रेम के बाद भी लड़की और लड़का अलग–अलग इकाई के रूप में बने रहते हैं तो यह कहा जा सकता है कि वास्तव में प्रेम हुआ ही नहीं है और यह दोनों तथाकथित प्रेमियों को भावनात्मक रूप से परेशान करता रहेगा और इसी तरह अगर युद्ध के बाद भी दोनों युद्धरत गुट अलग–अलग इकाई के रूप में बने रहते हैं तो वास्तविक युद्ध हुआ ही नहीं है।

हालांकि, यह कहने के बाद भी कि: प्रेम और युद्ध में सबकुछ उचित है, प्रेम और युद्ध में गैर–अस्तित्वों को सच्चे प्रेमी और धर्म के लिए लड़ने वाले द्वारा परेशान नहीं किया जा रहा है , इसलिए इस परिदृश्य में यह सुनिश्चित करना चाहिए कि विपरीत गुट के आम नागरिक, वनस्पतियों और जीव–जंतुओं, पक्षियों और जानवरों, मछलियों और मत्स्यपालन को परेशान या घृणा या यातना नहीं दी जा रही है या उन्हें मार नहीं दिया जा रहा है।

(1.3) यह चल रहा युद्ध बहुत ही प्रतीक्षा में है: **(i)** एक तो उस दलदल (आतंकवादी प्रशिक्षण शिविर) को साफ करना जहां मच्छर (आतंकवादी) पनप रहे थे, बढ़ रहे थे और विकसित हो रहे थे और अपनी आतंकी गतिविधियों से कई देशों को परेशान कर रहे थे और **(ii)** पाकिस्तान के नागरिकों को अराजक शासन से मुक्त करना जहां वर्तमान प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति को भी साजिश के तहत हटा दिया जाता है और फिर उन्हें देश से बाहर जाने के लिए मजबूर किया जाता है या जेल में डाल दिया जाता है, उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है, उनके साथ मारपीट की जाती है और फिर उन्हें फांसी पर लटका दिया जाता है। अब उन्होंने सारी हदें पार कर दी हैं जब उन्होंने लोकतांत्रिक रूप से चुने गए प्रधानमंत्री को साजिश के तहत हटाकर सेना की जेल में डाल दिया और फिर उन्होंने न केवल उनके साथ मारपीट की बल्कि उनका यौन उत्पीड़न भी किया।

(1.4) युद्ध में हारे/आत्मसमर्पण करने वाले/सफेद झंडा फहराने वाले पाकिस्तान के साथ भारत को क्या करना चाहिए? क्या भारत को उस भूभाग को, जिसे युद्ध से पहले पाकिस्तान (और 1947 से पहले भारत–भारत) के नाम से जाना जाता था, दूसरों को लूटने–खसोटने के लिए छोड़ देना चाहिए, या क्या भारत को बांग्लादेश जैसे देश के गठन की अनुमति देनी चाहिए (जो गठन के 54 साल बाद भी अपने नागरिकों को सभ्य जीवन प्रदान करने में सक्षम नहीं हो पाया और बुनियादी जीवनयापन के लिए अवैध रूप से दूसरे देशों में पलायन करने के लिए मजबूर है) या क्या इस भूभाग के लोगों को जनमत संग्रह के माध्यम से अपनी राय/सहमति देने की अनुमति/सुविधा देनी चाहिए, जैसा कि सिक्किम के लोगों ने 1975 में किया था), और यदि वे चाहें तो उन्हें भारत में विलय की अनुमति देनी चाहिए?

दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र के अपने पिछले बीस वर्षों के अवलोकन के दौरान मैंने देखा है कि वर्तमान बांग्लादेशियों और पाकिस्तानियों का एक बहुत बड़ा वर्ग अपने अलगाव की गलती पर पश्चाताप कर रहा है तथा भारत के साथ पुनः जुड़ना चाहता है, और ऐसी परिस्थितियों में भारत से यह अपेक्षा की जाती है कि वह इतनी उदारता दिखाए कि उनका उचित स्वागत करे तथा उन्हें समान स्तर पर भारत के साथ पुनः जुड़ने की अनुमति दे।

(2) विषय पर हमारे दिनांक 24, 26 और 30.04.2025 के सोशल मीडिया पोस्ट से प्रासंगिक अंशों की पुनरुत्पादन:

(2.1) इस कृत्य का प्रभाव केवल दिवंगत आत्मा की निन्दा और प्रार्थना, पीड़ित परिवार को आर्थिक सहायता देने से समाप्त नहीं होगा और न ही यह पीओके पर हमला करके पीओके या पूरे पाकिस्तान को अपने कब्जे में लेने से मूल मुद्दे को हल करेगा।

(2.2). यह घटना कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न उठाती है, जो कोई भी नहीं पूछ रहा है:
i. पूरे समाज को अपनी सुरक्षा से वंचित करके उन्हें पुलिस और सेना (जो कुल जनसंख्या का एक प्रतिशत से भी कम है) की दया पर क्यों छोड़ा जा रहा है। 1% लोग 100% आबादी की सुरक्षा कैसे कर पाएंगे?
मानक के अनुसार (आदिवासी और सनातन धर्म के मूल सिद्धांतों से प्राप्त) 25 से 50 वर्ष की आयु समूह के बीच की आबादी का छह प्रतिशत (भारत की वर्तमान जनसंख्या 130 करोड़ से अधिक को ध्यान में रखते हुए यह आठ करोड़ से अधिक है, जिसमें से चार करोड़ महिलाएं आंतरिक सुरक्षा प्रदान करेंगी और चार करोड़ पुरुष बाहरी सुरक्षा से निपटने के लिए प्रशिक्षित होंगे) समाज की प्रत्यक्ष सुरक्षा में तैनात किया जाना चाहिए।

ii. कोविड ने आपातकाल के दौरान सभी धार्मिक केंद्रों को बंद करने के लिए मजबूर किया, जबकि लोगों को इसकी अधिक आवश्यकता थी, इसने स्पष्ट रूप से और निर्भीकता से इन सभी सहवर्ती धर्मों को मृत इकाई की तरह शून्य और अमान्य घोषित कर दिया है। यदि ऐसा है तो क्या हमें उन धर्मों पर मौखिक या वास्तविक टकराव, लड़ाई या यहां तक कि युद्ध में लिप्त होने के बजाय धर्म (मूल धर्म) के पुनरुत्थान पर चर्चा नहीं करनी चाहिए, जो विश्वव्यापी लॉकडाउन के दौरान आशा की किरण नहीं दिखा सके और वायरस, बैक्टीरिया और प्रशासनिक एजेंसियों के आगे झुक गए?

iii. पाकिस्तान के निर्माण का आधार धर्म और अंग्रेजों की चालाकी बताया गया। अब जब दोनों ही कारण गायब हो गए हैं, एक तो आजादी की घोषणा के तुरंत बाद और दूसरा कोविड के दौरान (जब धर्म ही अप्रासंगिक हो गया) तो पाकिस्तान के अलग रहने का कोई मतलब नहीं रह जाता।

पाकिस्तान (और बांग्लादेश) के लिए अच्छा होगा कि वे अपने देश में आम जनमत संग्रह करवाएं और अपने बचे हुए हिस्से के साथ मिलकर एक भारत बन जाएं।

(2.3) पहलगाम-भारत में आतंकी हमले की संभावित योजना से पता चलता है कि पहलगाम में आतंकी हमला एक सुनियोजित कृत्य था (ऐसा प्रतीत होता है कि एक निर्दयी और बर्बर कृत्य को उचित योजना के साथ तैयार किया गया था, फिर बर्बर तरीके से और निर्दयी तरीके से अंजाम दिया गया) और ऐसा प्रतीत होता है कि इसे बड़े पैमाने पर अंजाम देने के उद्देश्य से रचा गया था। आध्यात्मिक क्षेत्र में यह कहा जा रहा है कि पहलगाम-भारत में दिनांक 22.04.2025 को हुआ आतंकी हमला बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा रचा गया था:

(2.4) आध्यात्मिक जगत में कहा जा रहा है कि पहलगाम में हुई हत्या और हमारी बेटियों और बहनों को विधवा या अनाथ बनाना रावण द्वारा माता सीता के अपहरण से भी अधिक गंभीर है , इसलिए यह स्पष्ट है कि इस बर्बर हत्या के बाद अपराधी [अर्थात इसके योजनाकार और वित्तपोषक, कहानीकार और निर्देशक, रसद प्रदाता और मीडिया संचालक, अभिनेता (निष्पादक) और सहायक कर्मचारी] और लाभ चाहने वालों का सफाया निकट है।
कुछ ज्योतिषियों के अनुसार अपराधियों का सफाया दिसंबर 2026 तक शुरू हो जाएगा और 2031 तक पूरा हो जाएगा, जिसके बाद सुशासन की स्थापना होगी, जो काफी हद तक 2036 तक पूरी हो जाएगी।

आध्यात्मिक जगत में कहा जा रहा है कि वर्ष 2031 तक हिन्दू, यहूदी, बुद्ध, जैन, ईसाई, मुस्लिम और सिख शब्द लुप्त हो जायेंगे और उनकी जगह धर्म शब्द का प्रयोग होने लगेगा तथा माता-पिता, बच्चों, बहन, भाई का धर्म और सेवा से संबंधित धर्म जैसे शिक्षक, विद्यार्थी इत्यादि का धर्म प्रयोग में आ जायेगा (स्वयं विकिपीडिया पर ही चालीस से अधिक शब्दों का वर्णन किया गया है)।
इसके अलावा, यह कहा जा रहा है कि वर्ष 2031 तक सोना अपनी प्रतिष्ठा खो देगा, शेयर बाजार गायब हो जाएगा, इसके साथ ही जबरन वेश्यावृत्ति और पोर्नोग्राफी समाप्त हो जाएगी, वकील, शिक्षक और डॉक्टरों का व्यवसाय खत्म हो जाएगा।

2031 तक सम्पूर्ण सामाजिक सुरक्षा (अर्थात जीने के लिए भौतिक सुरक्षा, भोजन, पानी, हवा, कपड़ा, मकान, मनोरंजन, स्वास्थ्य, शिक्षा और न्याय के साथ-साथ सभी के लिए रोजगार के अवसर और किसी के रचनात्मक कार्य में संभावित सहयोग) का प्रावधान समाज द्वारा स्वयं ही धर्म संस्थान (धार्मिक संस्था या स्थानीय सरकार का केंद्र) से कार्य करना शुरू कर देगा और वर्ष 2036 तक पूरी तरह से क्रियाशील हो जाएगा तथा उसका उचित प्रबंधन (परिवार, समाज और

सरकार के सदस्यों के बीच कार्य और आय/उपज का उचित और तर्कसंगत वितरण के माध्यम से) किया जाएगा।
ऊपर प्रस्तुत है,
भगवान भारत को आशीर्वाद दें,

भवदीय
नरेंद्र
धर्म के पुनरुत्थान के लिए
ईमेल: revivessionofdharma@gmail.com , connect@revisesionofdharma.com
वेबसाइट: resurctionofdharma.com
दिनांक: 09.05.2025,

संदर्भ पुस्तकें (मुफ्त डाउनलोड : reviverctionofdharma.com),:
(1) धर्म और उससे जुड़े मुद्दों पर कुछ बातें- उसके आत्मसातीकरण की आवश्यकता (धर्म के आत्मसातीकरण और अर्थशास्त्र, न्यायपालिका और प्रशासन के पुनर्गठन के लिए क्या, क्यों और कैसे आवश्यक है, तथा इसकी आवश्यकता)
(2). भारत की नज़र में :(क) रज़ाई
जीवंत एवं कारगर वैश्विक व्यवस्था के लिए विवेचनात्मक दृष्टि प्रपत्र
(3). Alternate economy- natural systematic economy,

Letter No 5, 17/05/2025

विषय: भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम, जो कि पहलगाम में हुए बर्बर आतंकवादी हमले का बदला लेने के लिए किया गया था, ताकि आतंकवादी हमले के अपराधियों, योजनाकारों, वित्तपोषकों, प्रशिक्षकों को समाप्त किया जा सके और धर्म (मास्टर प्लानर – प्रकृति – भगवान) के अनुसार आगे का रास्ता, धर्म का पुनरुत्थान, बुराइयों का उन्मूलन और सज्जनों का उत्थान – के संबंध में।

प्रिय साथी नागरिकों , भारत ,

निम्नलिखित प्रस्तुत है, प्रस्तुति में शामिल है **(1).** भारत एक बेहतर स्थान क्यों है **(2).** युद्ध विराम और अन्य संबंधित मुद्दों पर समग्र दृष्टिकोण:, **(3)** पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद हमने क्या कदम उठाया था और वर्तमान में हमारी कार्रवाई किस प्रकार की जा रही है?

प्रविष्टियों

(1). भारत एक बेहतर स्थान क्यों है:

आमतौर पर यह देखा गया है कि प्रत्येक धर्म के प्रचारक/पुजारी स्वयं को आतंकवादियों, चोरों, लुटेरों, धोखेबाजों, लुटेरों और तथाकथित शैतानी ताकतों तथा उनकी गतिविधियों से अलग रखते हैं, लेकिन समाज में भय फैलाने तथा घृणा और दुश्मनी पैदा करने जैसे अधार्मिक कार्य करते रहते हैं।

इन ताकतों के विपरीत, संत और साधु अच्छे काम करते रहते हैं लेकिन श्रेय लेने से खुद को दूर रखते हैं। वैसे तो हर देश में शैतान और साधु होते हैं लेकिन भारत को प्राचीन काल से ही साधुओं और संतों का निवास माना जाता रहा है। संतों और साधुओं की मौजूदगी के कारण ही भारत–भारत के नाम से जाना जाने वाला यह देश सदियों से चली आ रही तमाम प्रतिकूलताओं के बावजूद अपनी धार्मिकता को बनाए रखने में भाग्यशाली रहा है।

इसके अलावा, संतों और साधुओं के ऐसे प्रतिष्ठित वर्ग की उपस्थिति के कारण, भारत विभाजन के दौरान हिंदू राष्ट्र बनने के लिए जबरदस्त दबाव के बावजूद, अपने आप को एक धर्म–निरपेक्ष (पूरी तरह से धार्मिक) देश के रूप में बनाए रखने में सक्षम रहा है।

भारत के बारे में सकारात्मक बात यह है कि इसके बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ रहा है और अब उनमें खुद पर भरोसा, अपनी संस्कृति और परंपराओं पर गर्व देखा जा सकता है। संतों और साधुओं के आशीर्वाद से, भारत–भारत अब खुद को खड़ा होने और सनातन को पुनर्स्थापित करने, बुराइयों को खत्म करने और व्यवस्था को आगे बढ़ाने के लिए उपयुक्त पाता है।

हम सभी को सहयोग करने की आवश्यकता है, न कि सर्वत्र शांति और सद्भाव की बहाली के इस लंबे समय से प्रतीक्षित कार्य में बाधा बनने और बाधाएं पैदा करने की।

अंत में, यह कहा जा सकता है कि संतों और साधुओं के सम्मानित वर्ग द्वारा किए गए विभिन्न अभ्यास वास्तव में भारत के गौरव को पुनर्स्थापित करने में मदद करेंगे, और इस तरह, हमारे ठोस प्रयासों के हकदार हैं।

(2). युद्ध विराम और अन्य संबंधित मुद्दों पर समग्र दृष्टिकोण:

निम्नलिखित प्रस्तुत है:

(2.1) जब भगवान आदेश देते हैं, तो शैतान और संत दोनों मिलकर सामग्री और संचालन विवरण प्रदान करते हैं, शैतान और देवता दोनों मिलकर प्रक्रिया में शामिल होते हैं और परिणाम देते हैं। यह कहा जा सकता है कि किसी भी गतिविधि को करने की स्वतंत्र पहुँच और स्वतंत्रता तथाकथित चालाक कला और अंधेरे विज्ञान के उस्तादों को मिल रही है, चाहे वे धनवान हों, राजघराने हों या धार्मिक प्रमुख हों।

कहा जा रहा है कि पहलगाम में हत्या और हमारी बेटियों और बहनों को विधवा या अनाथ बनाना रावण द्वारा माता सीता के अपहरण से भी अधिक गंभीर है , इसलिए यह स्पष्ट है कि बर्बर हत्या, युद्ध और युद्ध विराम के बाद अपराधी [यानी इसके योजनाकार और वित्तपोषक, कहानीकार और निर्देशक, रसद प्रदाता और मीडिया संचालक, अभिनेता (निष्पादक) और सहायक कर्मचारी] और लाभ चाहने वालों का सफाया आसन्न है।

कुछ ज्योतिषियों के अनुसार अपराधियों का सफाया शुरू हो चुका है और 2031 तक पूरा हो जाएगा, तब तक सोना अपनी प्रतिष्ठा खो देगा, शेयर बाजार गायब हो जाएगा, इसके साथ ही जबरन वेश्यावृत्ति और पोर्नोग्राफी समाप्त हो जाएगी, वकील, शिक्षक और डॉक्टरों का व्यवसाय खत्म हो जाएगा।

आध्यात्मिक जगत में यह भी कहा जा रहा है कि वर्ष 2031 तक हिन्दू, यहूदी, बुद्ध, जैन, ईसाई, मुस्लिम और सिख शब्द लुप्त हो जायेंगे और उनकी जगह बड़े पैमाने पर धर्म शब्द और धर्म के सूचक शब्द ले लेंगे, जैसे माता, पिता, माता-पिता, बच्चों, बहन, भाई और शिक्षक, विद्यार्थी आदि का धर्म (ऐसे चालीस से अधिक शब्द हैं, जिनका वर्णन स्वयं विकिपीडिया पर किया गया है)।

2031 तक सम्पूर्ण सामाजिक सुरक्षा (अर्थात जीवन के लिए भौतिक सुरक्षा, भोजन, पानी, हवा, कपड़ा, मकान, मनोरंजन, स्वास्थ्य, शिक्षा और न्याय के साथ-साथ सभी को रोजगार के अवसर और रचनात्मक कार्यों में संभावित सहयोग) का प्रावधान समाज द्वारा ही धर्म संस्थान (धार्मिक संस्था या स्थानीय शासन का केंद्र) से शुरू हो जाएगा और काम तथा आय/उपज के उचित और तर्कसंगत वितरण द्वारा प्रबंधित किया जाएगा। ऐसा कहा जाता है कि सुशासन - धर्म राज्य की स्थापना काफी हद तक वर्ष 2036 तक पूरी हो जाएगी।

(2.2) भारत में लोग राम, भगवान राम की बात करते हैं और दुनिया भर में राम-राज्य लाने के लिए झुकते हैं, लेकिन वे यह नहीं समझते कि रामराज्य से पहले रावण का हुक्म दुनिया भर में चलता था और भारत

और दुनिया की वर्तमान स्थिति स्पष्ट रूप से इंगित करती है कि यह गंभीर है और इसकी तुलना रावण के शासन के दौरान प्रचलित स्थिति से की जा सकती है ।

आध्यात्मिक जगत के लोग वर्तमान समय के खतरनाक दौर की ओर इशारा करते हुए कहते हैं कि, एक समय रावण का काल था – वह बहुत ज्ञानी था, उसकी लंका सोने की बनी हुई थी – धन के संरक्षक कुबेर उसके कैदी थे, सभी दुष्ट, सभी शैतान और सभी देवता (जैसे वरुण, अग्नि, वायु, धन्वंतरि, विश्वकर्मा, यहां तक कि यमराज अर्थात वायु, जल, अग्नि, स्वास्थ्य, निर्माण और धर्म के देवता) भी उसके आगे नतमस्तक थे, धरती मदद के लिए पुकारती थी और वातावरण उसकी दहाड़ से कांप उठता था, अंतरिक्ष में, धरती के नीचे और धरती पर उसका साम्राज्य था। सामान्य मनुष्य, संत और साधुओं की तो बात ही क्या, वह तो नागाओं (नग्न रहने वाले साधु) को भी परेशान करने में संकोच नहीं करता था।

वे कहते हैं कि, यदि हम वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति को देखें तो हम देख सकते हैं कि, वायु (अधिकांश मीडिया), जल (समुद्र), अग्नि (बिजली– जल, वायु, तेल और कोयले से, तथा अत्यधिक ऊर्जा– परमाणु, हाइड्रोजन और डायनामाइट से), पृथ्वी (अधिकांश देशों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष शासन, सभी खाद्यान्न, मादक द्रव्यों, खनिजों और धातुओं पर नियंत्रण), आकाश (अंतरिक्ष में उपग्रह) – कुबेर (सभी बैंक और मुद्राएं– डॉलर, येन, यूरो, पाउंड और इनके माध्यम से विश्व की अन्य मुद्राओं पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष नियंत्रण), फिर स्वास्थ्य, शिक्षा और न्यायपालिका पर भी इनका सावधानीपूर्वक डिजाइन किए गए फार्मा और शिक्षा उद्योगों और वकीलों के माध्यम से कागज आधारित न्यायिक वितरण प्रणाली के माध्यम से नियंत्रण है। फिर इन लोगों के पास सूचना और ज्ञान के खजाने पर नियंत्रण है, उनके पास लगभग सभी लोगों का रिकॉर्ड और उनकी व्यक्तिगत पहचान है। ऐसे में, सभी आम लोग भूख से, जानवर जंगलों में आग से, पक्षी इंटरनेट की चुंबकीय तरंगों से और मछलियाँ और मत्स्य पालन पनडुब्बियों से परेशान हो रहे हैं। इससे यह कहा जा सकता है कि वर्तमान स्थिति भी उतनी ही गंभीर है, जितनी रावण के शासन काल में थी, केवल एक बात जो अब भिन्न है वह यह कि हम रावण, कुंभकरण और मेघनाथ जैसे दो–तीन चेहरे नहीं देख पाते।

ऐसी स्थिति में समाधान हम आम आदमी और औरत के बीच ही संभव है, हमें आपस में संवाद कर आम सहमति बनानी होगी और योजनाबद्ध तरीके से इन शैतानों के खिलाफ खड़ा होना होगा और हो सकता है कि हमारे इस प्रयास से ये लोग भी समाज में व्यापक मंथन के लिए सहमत हो जाएं, ताकि बिना किसी बड़े युद्ध के जहर बाहर निकल जाए और इन तथाकथित शैतानों का खात्मा हो जाए और राम–राज्य या भगवान के लोकतंत्र जैसा सुशासन बहाल हो।

(2.3) ऐसा कहा जाता है कि, यदि आप ब्रह्मांड/ब्रह्म/अल्लाह/ईश्वर से मांगते हैं, तो वह आपको अवश्य मांगता है, जो कुछ भी आपने भगवान से मांगा है, उसे प्राप्त करने वाले (व्यक्ति के रूप में या परिवार, समाज, देश और विश्व में उसके मुखिया के माध्यम से) द्वारा जांचा जा सकता है।

ऐसा कहा जाता है कि हमारी समवर्ती स्थिति एक व्यक्ति के रूप में या एक परिवार, समाज, देश और दुनिया के रूप में संबंधित व्यक्ति के माध्यम से भगवान से हमारी पिछली माँग का परिणाम है। इसलिए,

अगर हम युद्ध विराम देख रहे हैं तो इसका मतलब यह लगाया जा सकता है कि दोनों देशों के नेताओं (जिन्हें अपने-अपने देश के पुरुषों/महिलाओं को निर्णय लेने और कार्य करने की पूरी आज़ादी दी गई है) ने कहीं न कहीं भगवान से यही माँग की होगी (यानी "आतंकवादी हमला, युद्ध, युद्ध विराम, पाकिस्तान का आगामी विघटन आदि)।

जिन लोगों को दोनों देशों के नेताओं के बीच अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस, इजरायल, अरब जगत आदि देशों के नेताओं के साथ हुई चर्चा का ब्यौरा उपलब्ध है, वे इस कथन का समर्थन कर सकते हैं कि न केवल आतंकवादी हमले के बाद और युद्ध से पहले आवश्यक सहायता और समर्थन मांगा गया था, बल्कि युद्ध में प्रवेश करने के लिए सहमति भी ली गई होगी।

एक साधारण प्रश्न से उपरोक्त किसी भी प्रश्न का उत्तर मिल सकता है, क्या भारत और पाकिस्तान के नेताओं ने इस साधारण स्थिति की भी कल्पना नहीं की थी कि "क्या होगा यदि श्री अमेरिका - ट्रम्प, बीच में आते हैं और युद्ध विराम के लिए कहते हैं", यदि हाँ तो युद्ध विराम को योजनाबद्ध के अलावा एक अलग चीज के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, या यदि दोनों देशों के नेताओं ने इस परिदृश्य के बारे में नहीं सोचा था (कि श्री ट्रम्प बीच में हस्तक्षेप करेंगे), तो क्या ऐसे नेता और उनके रणनीतिकार ऐसे उच्च पद को धारण करने के योग्य कहे जा सकते हैं?

(i) दूर देश के राष्ट्रपति द्वारा युद्ध विराम की घोषणा, दोनों युद्धरत देशों के कई आम लोगों और कुछ शिक्षाविदों के लिए सदमे और आश्चर्य का कारण हो सकता है, जो दो परमाणु शक्ति संपन्न देशों भारत और पाकिस्तान (दुनिया में अपनी तरह का पहला और पिछले अस्सी वर्षों के परमाणु इतिहास में) के बीच युद्ध पर नजर रख रहे हैं, खासकर भारत में, पाकिस्तान की तुलना में अधिक, लेकिन अगर आप दोनों देशों के नेताओं की मुद्रा (विशेष रूप से उनकी आवाज में उतार-चढ़ाव, उंगलियों को ऊपर उठाना और आंखों की गति) को देखें तो कोई भी यह अच्छी तरह से समझ सकता है कि यह युद्ध विराम उनके लिए एक अप्रत्याशित घटना नहीं है।

(2.4) यह दोहराया जाता है (कृपया अनुलग्नक में संलग्न दिनांक 26.04.2025 का सोशल मीडिया पोस्ट भी देखें) कि पहलगाम में आतंकवादी हमले की योजना कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा सावधानीपूर्वक बनाई गई थी ताकि दो परमाणु पड़ोसी देशों के बीच एक वास्तविक युद्ध और वर्तमान में उपलब्ध युद्ध का प्रदर्शन देखा जा सके ताकि भारत, अमेरिका, उत्तर कोरिया, इंग्लैंड, फ्रांस, इटली, तुर्की, रूस, चीन आदि देशों के बीच संभावित भविष्य के युद्ध के परिणामों का उचित और अधिक सटीक रूप से अनुकरण और विश्लेषण किया जा सके।

(2.4.1) यह आतंकवादी हमला, अनुवर्ती युद्ध भी विभिन्न आतंकवादी समूहों के संचालन और प्रभावशीलता को देखने के लिए आयोजित किया गया था (योजना बनाई गई, वित्तपोषित और प्रबंधित किया जा रहा है)
(i) प्रयुक्त हथियार एवं गोलाबारूद (सतह पर, हवा में और समुद्र में),
(ii) रक्षा तंत्र (उपग्रह, रडार और निवारक मिसाइलों के साथ पूर्व चेतावनी अलार्म),

(iii) परमाणु शस्त्रागार की सुरक्षा, संरक्षा, उपयोगिता, प्रभावशीलता तथा युद्ध में उपयोग किए जाने, स्थापना स्थल पर क्षति पहुंचने या भूमिगत रूप से उसे निष्क्रिय करने के लिए बाध्य किए जाने की स्थिति में उसके बाद के प्रभाव।

भारत और पाकिस्तान को इन बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा चुना गया देश कहा जा सकता है, क्योंकि यहां विश्व के सभी निर्माताओं के सभी प्रकार के युद्ध और युद्ध से संबंधित उपकरण मिलते हैं (सीरिया, इजरायल, उत्तर कोरिया, चीन, अरब जगत, रूस, यूक्रेन, अमेरिका और यूरोप जैसे युद्धरत देशों के विपरीत)।

(2.4.2) पहलगाम में आतंकवादी हमला और उसके बाद युद्ध की योजना भी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा पूरे कश्मीर में खनन के लिए मुक्त पहुंच सुनिश्चित करने के लिए बनाई गई थी (जो तभी संभव था जब पर्यटन बंद हो जाता, पूरा कश्मीर भारत का हिस्सा बन जाता, बलूचिस्तान अलग हो जाता, पाकिस्तान की सेना खत्म हो जाती, पाकिस्तान के परमाणु हथियार नष्ट हो जाते, क्षेत्र में तनाव बना रहता, लोग अपने घर छोड़ देते और जमीन की कीमत मूंगफली के बराबर हो जाती और इस क्षेत्र के लोगों का प्रतिरोध इस क्षेत्र में और साथ ही पूरे हिमालय क्षेत्र में किसी भी खनन गतिविधि का विरोध करने के लिए शून्य हो जाता।

यह समझने के लिए कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों की संलिप्तता है, सभी से अनुरोध है कि वे 22.04.2025 से पहले और फिर 10.05.2025 को युद्ध विराम के बाद खुले और ग्रे मार्केट में इन बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा पेश किए जाने वाले उत्पादों और सेवाओं की कीमत की जाँच करें। कोई भी इन कंपनियों और उनके प्रमोटर की संलिप्तता को इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न स्रोतों से 22.04.2025 से पहले और 11.05.2025 के बाद उनके शेयरों की कीमत और उनकी संपत्तियों के मूल्यांकन को देखकर समझ सकता है।

(3). पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बाद हमने क्या कदम उठाया था और वर्तमान में हमारी कार्रवाई किस दिशा में है?

उपरोक्त विषय पर पूरी ईमानदारी के साथ निम्नलिखित प्रस्तुत है:

जब हम किसी आतंकवादी हमले की ग्राउंड रिपोर्ट देखते हैं तो सरसरी विश्लेषण से ही निम्नलिखित बिंदु सामने आते हैं, जिन पर हम निश्चित रूप से कुछ बिंदुओं पर तत्काल आधार पर, अधिकतर पर अल्पावधि के आधार पर तथा अधिकांश पर दीर्घकालिक आधार पर विचार करना चाहेंगे।

(3.1). खुले डोमेन से हमारे द्वारा एकत्रित ग्राउंड रिपोर्ट निम्नलिखित है:

(3.1.1) आतंकवादी हमला केवल उस क्षेत्र की सुरक्षा में गंभीर चूक के कारण हो सकता है जो पहले से ही सशस्त्र बलों के संरक्षण में है और सीधे केंद्र सरकार द्वारा प्रशासित है (चूंकि जम्मू और कश्मीर राष्ट्रीय सरकार द्वारा नियंत्रित क्षेत्र है)। यह निम्नलिखित को इंगित करता है:

(3.1.1.i) सरकार ने पहलगाम जैसे पर्यटन स्थल पर, जो पूरे भारत और पड़ोसी देशों से बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करता है, पर्याप्त सुरक्षा कवर, उचित परिवहन व्यवस्था (जैसे तत्काल और आपातकालीन स्थितियों के लिए आसानी से उपलब्ध हेलीकॉप्टर), प्राथमिक चिकित्सा सुविधाएं, मार्ग और मुख्य क्षेत्र में निगरानी कैमरे लगाने आदि पर विचार नहीं किया था।

(3.1.1.ii) यह भी कहा जाता है कि पूरे कश्मीर में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी है और पहलगाम के लिए भी यही दावा किया गया था। हालांकि, ऐसा लगता है कि उस दिन जानबूझकर सुरक्षा व्यवस्था कम रखी गई थी।

(3.1.1.iii) ऐसा प्रतीत होता है कि जब अन्य लोगों की हत्या की जा रही थी, तब पुरुषों की ओर से कोई प्रतिरोध नहीं किया गया, और आश्चर्य की बात यह है कि महिलाओं की ओर से भी कोई प्रतिशोध नहीं किया गया, तब भी नहीं जब उनके पति, भाई या पिता को उनके सामने ही मार दिया गया, जो कि विशेष रूप से महिलाओं की मानसिक शक्ति की बहुत दयनीय स्थिति को दर्शाता है।

(3.1.1.iv) हिन्दू पुरुषों की हत्या केवल प्रार्थना पाठ और खतना जैसे तरीकों से उनकी पहचान स्थापित करने के बाद ही की जाती थी।

(3.1.1.v) महिलाओं को स्पष्ट रूप से भारत के प्रधानमंत्री श्री मोदी को संदेश देने का निर्देश दिया गया था।

(3.1.1.vi) हत्यारे अपनी पहचान बताए बिना और वे कहां से आए थे, किसी भी तरफ से कोई प्रतिरोध का सामना किए बिना जंगल में गायब हो गए।

(3.1.2) पहलगाम एक पहाड़ी क्षेत्र है जहां ज्यादातर स्थानीय आबादी, सेना के जवान और पर्यटक रहते हैं।

(3.1.3) पूरा कश्मीर उन्नीस सौ नब्बे के दशक की शुरुआत से ही आतंक का गढ़ माना जाता रहा है, लेकिन कश्मीर से अनुच्छेद 370 (वर्ष 2019 में) हटाए जाने और इस क्षेत्र को केंद्रीय प्रशासन के अधीन लाने के बाद से यह काफी हद तक सुरक्षित हो गया है। इसके अलावा इस क्षेत्र में हाल ही में चुनाव हुए हैं और वर्तमान में पांडिचेरी, लक्षद्वीप आदि की तरह यहां भी सरकार है।

(3.1.4) यह क्षेत्र अपने समृद्ध खनिज संसाधनों, विशेष रूप से लिथियम के कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अधिक ध्यान आकर्षित कर रहा है, जिसकी मांग मोबाइल बैटरी, इलेक्ट्रिक वाहन, सौर बिजली, स्टैंडअलोन मशीनरी और घरेलू उपकरणों के निर्माताओं द्वारा लगातार बढ़ रही है।

(3.1.5) संपूर्ण कश्मीर और विशेषकर पहलगाम का यह स्थान स्विट्जरलैंड या विश्व के किसी भी अन्य भाग की तुलना में बेहतर प्राकृतिक सौंदर्य प्रस्तुत करता है।

(3.1.6) यह क्षेत्र (सम्पूर्ण कश्मीर) ज्ञानियों, संतों, साधुओं और साधकों का निवास, ज्ञान का भण्डार और भारत का मस्तक माना जाता है। कहा जाता है कि यदि यह क्षेत्र शांत हो तो न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण विश्व स्वस्थ, सुखी और पवित्र हो जाएगा और दूसरे तरीके से यदि कोई (शैतानी व्यक्ति) नाम, यश, धन

और शक्ति अर्जित करना चाहता है तो वह इस क्षेत्र में असंतुलन पैदा करके, जैसे कि इस क्षेत्र में विभाजन और आतंक पैदा करके, ऐसा आसानी से कर सकता है ।

(3.1.7) मुख्यधारा मीडिया और सोशल मीडिया तुरंत सक्रिय हो गए और जमीनी रिपोर्ट का ठीक से आकलन किए बिना ही दहशत, भय, घृणा, दुश्मनी, बदला और युद्ध की चीख आदि फैलाना शुरू कर दिया।

(3.2). हमारी कार्य-पद्धति निम्नलिखित हो सकती है: मारे गए लोगों के परिवार के सदस्यों को सुरक्षा प्रदान करना, उन्हें मीडिया से उचित दूरी प्रदान करना, साथ ही भावनात्मक और वित्तीय सहायता प्रदान करना, स्थानीय और क्षेत्रीय प्रशासन की समीक्षा करना, जिम्मेदारी तय करना और उसके अनुसार दंड देना, ये ऐसे तात्कालिक कार्य हैं जिन्हें हमने किया होगा। इसके साथ ही समग्र राष्ट्रीय सुरक्षा की समीक्षा , पर्यटकों, तीर्थयात्रियों, उपचार के लिए रोगियों को आकर्षित करने वाले सभी स्थानों की विशेष सुरक्षा सुनिश्चित करने से पहले निम्नलिखित कार्य किए जाने चाहिए:

(3.2.1).युद्ध सब शुद्ध कर देता है – war purifies everything,

अब युद्ध शुरू हो चुका है (यद्यपि तीसरे पक्ष की मध्यस्थता के माध्यम से सफेद झंडा फहराया गया है और भारत द्वारा कुछ समय के लिए स्वीकार कर लिया गया है) और यह कहा जा सकता है कि यह बहुत जरूरी युद्ध है जो पिछले कुछ वर्षों से होने की प्रतीक्षा कर रहा है, जिसे भारत हमेशा एक परंपरा के रूप में टालने की कोशिश करता है जब तक कि यह अपरिहार्य न हो जाए और इस बार यह पहले के बड़े युद्ध से अलग नहीं है जो भारत ने लड़ा था, चाहे वह बुराई के प्रतीक रावण, मेघनाथ और कुंभकरण को खत्म करने और रामराज्य की स्थापना के लिए था या अधर्मी (अधार्मिक) धृतराष्ट्र, दुर्योधन और शकुनि को खत्म करने और फिर धर्मराज्य (मूल धर्म का शासन) स्थापित करने के लिए था।

भारत और विश्व में आम लोग, मीडियाकर्मी या नेता कुछ भी कहें, लेकिन आध्यात्मिक जगत के लोगों के अनुसार, भारत और पूरे विश्व में धर्म (मूल धर्म) को पुनर्जीवित करने और फिर धर्म संस्थानों (धार्मिक संस्थानों) की स्थापना करने के लिए प्रकृति द्वारा समवर्ती युद्ध को मजबूर किया जाता है।

(3.2.1.i) इस बार पहलगाम में दुष्ट ताकतों द्वारा किया गया अपराध शैतानी ताकतों द्वारा किए गए सभी पिछले कुकृत्यों की तुलना में बहुत ही भयानक और बर्बर है, फिर भी, इस बार भी जानबूझकर या अनजाने में भारत ने अपराधियों (टीआरएफ के सदस्य, जो लश्कर-ए-तैयबा की एक शाखा है, जो बर्बर कृत्य की जिम्मेदारी लेने का दावा करती है) को सौंपने के लिए पूरे दो सप्ताह तक इंतजार किया और शांति कायम रखने तथा रक्तपात को रोकने का पूरा मौका दिया।

(3.2.1.ii) यह आम कहावत है कि – "प्यार और युद्ध में सब कुछ जायज है", ऐसा इसलिए है क्योंकि ज्ञानी कहते हैं कि प्रेम और युद्ध के बाद, दो अलग-अलग इकाईयों को समाप्त होना चाहिए और दोनों को एक हो जाना चाहिए और ऐसा युद्ध तब तक पूरा नहीं होगा जब तक कि प्रेम या दुश्मनी खत्म न हो जाए।

(3.2.1.iii). यह युद्ध बहुत ही आसन्न कहा जा सकता है:

(3.2.1.iii.i) उस दलदल (आतंकवादी प्रशिक्षण शिविर) को साफ करना, जहां मच्छर (आतंकवादी) पनप रहे थे, बढ़ रहे थे, विकसित हो रहे थे और अपनी आतंकी गतिविधियों से कई देशों को परेशान कर रहे थे।

(3.2.1.iii.ii) पाकिस्तान के नागरिकों को अराजक शासन से मुक्त कराना, जहां वर्तमान प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति को भी षड्यंत्र के माध्यम से हटा दिया जाता है और फिर उन्हें देश छोड़ने के लिए मजबूर किया जाता है या जेल में डाल दिया जाता है, उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है, मारपीट की जाती है और यहां तक कि उन्हें फांसी पर भी लटका दिया जाता है।

(3.2.1.iii.iii) यह देखा गया है कि वर्तमान बांग्लादेशियों और पाकिस्तानियों का एक बहुत बड़ा वर्ग अपनी अलगाव की गलती पर पश्चाताप कर रहा था और भारत के साथ पुनः जुड़ना चाहता था, और इस प्रकार इस युद्ध ने पाकिस्तान के लोगों को भारत के साथ पुनः जुड़ने का मौका दिया।

(3.2.2). ऊपर दिए गए बिंदु क्रमांक (3.1.1.i), (3.1.1.iii) और (3.1.1iv) बहुत गंभीर बिंदु कहे जा सकते हैं और मानव सभ्यता की हमारी समझ में बड़े पैमाने पर बदलाव की आवश्यकता है और इसके लिए हमें उन मूल बातों पर फिर से विचार करने की आवश्यकता है, जहाँ से सभ्यता ने सुराग लिया है और जिस पर निर्माण किया है। **इन मुद्दों को पहले ही जून –2023 में प्रकाशित पुस्तक – " वैकल्पिक अर्थव्यवस्था – प्राकृतिक व्यवस्थित अर्थव्यवस्था" में शामिल किया जा चुका है, जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है**:

(3.2.2.i) कहा जाता है कि आदिवासी–मूलवासी मूल हैं और सभ्य दुनिया उन पर बनी हुई या मूलवासियों से प्रेरणा लेकर बनी हुई एक संरचना है। इसलिए जब संरचना जीर्ण–शीर्ण होती दिखाई दे तो मूल–आदिवासियों के पास जाना ही एकमात्र विकल्प रह जाता है और उनसे पुनः संकेत/निर्देश/दिशा लेना कि कैसे इन आदिवासियों ने बुनियादी सुरक्षा (भौतिक सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा और आश्रय) का ध्यान रखा है और कैसे प्रशासन, न्याय और अपने कुल का पालन–पोषण किया है, बुनियादी स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन और पर्यावरण संरक्षण का ध्यान रखा है और साथ ही अपनी पूजा–अर्चना भी की है जो उन्हें युगों से अपने अस्तित्व को बनाए रखने में सक्षम बनाती है।

(3.2.2.ii) बस्ती–सभ्यता के आरंभ में यह सोचा गया था कि समाज को उन सभी कार्यों का ध्यान रखना होगा जो सामान्यतः प्रत्येक आदिवासी करता है, तथा साथ ही उन नए कार्यों का भी ध्यान रखना होगा जो बस्ती/सभ्यता के कारण सामने आ सकते हैं।

कहा जाता है कि काफी मंथन के बाद यह बात स्पष्ट हो गई कि किसी भी बस्ती/समाज/सभ्यता को बनाए रखने के लिए किसी भी समाज को किसी भी समय, स्थान/स्थान और ऊर्जा के सामने आने वाले सम्पूर्ण कार्य को मोटे तौर पर चार प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है, वह भी समान स्तर पर:

(क) बुनियादी सुरक्षा और संरक्षा, **(ख) शिक्षा, योजना और रणनीति, नियम और** विनियम बनाना , **(ग)** सामग्री का संग्रह, सामग्री का भंडारण और समाज में उसका वितरण, **(घ)** समाज को अन्य सभी सहायक सेवाएँ जैसे स्वास्थ्य सेवाएँ, इंजीनियरिंग सेवा, सफाई और स्वच्छता का रखरखाव, मनोरंजन का प्रावधान आदि।

अनुसार भारत की 130 करोड़ की आबादी का एक चौथाई हिस्सा यानी लगभग 32.5 करोड़ लोगों को सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं से जोड़ा जाना चाहिए। अगर हम मानव जीवन की औसत आयु 100 वर्ष मानते हैं तो इसका एक चौथाई हिस्सा यानी लगभग 8.125 करोड़ लोग (पुरुष और महिला) प्रत्यक्ष सुरक्षा के प्रावधान में शामिल होने चाहिए।

क्या हमें किसी जादू या चमत्कार के होने का इंतज़ार करना चाहिए या किसी नए देवता के आसमान से उतरने और हमारी समस्या का समाधान करने का? या हमें इस अवसर पर उठकर पुनरुत्थान के लिए काम करना चाहिए? हम ऊपर वाले के प्रकटीकरण के लिए काम कर रहे हैं और इसलिए हम आपको धर्म के पुनरुत्थान की प्रक्रिया में शामिल होने और लाभ उठाने के लिए आमंत्रित करते हैं।

कृपया प्रस्तुत करें,
भगवान भारत को आशीर्वाद दें,

भवदीय

नरेन्द्र (धर्म के पुनरुत्थान के लिए)
वेबसाइट: resurctionofdharma.com
दिनांक: 17.05.2025

अनुलग्नक: इसमें हमारे दिनांक 24. 26, 30.04 और 09.05.2025 के सोशल मीडिया पोस्ट (पहलगाम–भारत में आतंकवादी हमले और उसके बाद के युद्ध पर) का संक्षिप्त विवरण है और इसे सीधे लिंक्डइन और फेसबुक पर देखा जा सकता है।

पत्र संख्या 6 , 24/05/2025

विषय: (1). पुराने समय के बुद्धिमान लोगों के अलग-अलग विचार पहलगाम में हुए बर्बर आतंकी हमले पर **(2)।** समाज के लिए प्रमुख चिंता का कारण, उसके कारण और उपाय, **(3)।** राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने के लिए, भारत को 8 करोड़ नागरिकों की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता है। इस मिशन के हिस्से के रूप में, धर्म के पुनरुत्थान ने एक साहसिक लक्ष्य निर्धारित किया है: जून 2026 तक, हमारा लक्ष्य 4 करोड़ रोजगार के अवसर पैदा करना है - समाज की प्रत्यक्ष सुरक्षा में पुरुषों के लिए 50% और महिलाओं के लिए 50% आवंटित करके समान भागीदारी सुनिश्चित करना।

प्रिय भारतवासियों,
निम्नलिखित प्रस्तुत है:

(1) पहलगाम में हुए बर्बर आतंकी हमले पर पुराने ज्ञानियों के अलग-अलग विचार:
(1.1) पहलगाम में आतंकवादी हमले की योजना कई बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा एक वास्तविक युद्ध परिदृश्य को देखने के लिए बनाई गई थी, ताकि दुनिया के इस सबसे अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्र के लोगों की मानसिकता को देखा जा सके और दो परमाणु पड़ोसी देशों के बीच वर्तमान में उपलब्ध युद्ध संबंधी जानकारी, रणनीति और प्रौद्योगिकी, मशीनरी और उपकरणों का प्रदर्शन देखा जा सके, ताकि भारत, अमेरिका, उत्तर कोरिया, इंग्लैंड, फ्रांस, इटली, तुर्की, रूस, चीन आदि देशों के बीच संभावित भविष्य के युद्ध के परिणामों का उचित और अधिक सटीकता से अनुकरण और विश्लेषण किया जा सके।

(1.2) पहलगाम में हुए इस आतंकी हमले के अलावा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा युद्ध की योजना भी बनाई गई थी, ताकि पूरे कश्मीर में खनन के लिए खुली पहुंच सुनिश्चित की जा सके (जो तभी संभव था जब पर्यटन बंद हो जाए, क्षेत्र में तनाव बना रहे, ताकि स्थानीय लोग अपना घर छोड़ने को तैयार हो जाएं, तथा जमीन की कीमतें औने-पौने हो जाएं और इस क्षेत्र में खनन के प्रति प्रतिरोध शून्य हो जाए, जैसा कि इस क्षेत्र के साथ-साथ पूरे हिमालय क्षेत्र में भी है)।
यह समझने के लिए कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों की संलिप्तता है, सभी से अनुरोध है कि वे 22.04.2025 से पहले और फिर 10.05.2025 को युद्ध विराम के बाद खुले और ग्रे मार्केट में इन बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा पेश किए जाने वाले उत्पादों और सेवाओं की कीमत की जाँच करें। कोई भी इन कंपनियों और उनके प्रमोटर की संलिप्तता को इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न स्रोतों से 22.04 से पहले और 11.05.2025 के बाद उनके शेयरों की कीमत और उनकी संपत्तियों के मूल्यांकन को देखकर समझ सकता है।

(1.3). लोग चाहे जो भी कहें लेकिन पहलगाम में आतंकी हमला उन लोगों और उनके संगठन द्वारा सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध किया गया था जो तथाकथित नई विश्व व्यवस्था लाने की दिशा में अथक प्रयास कर रहे हैं, ये लोग दुनिया भर में लॉकडाउन के दौरान लोगों के व्यवहार को देखने के बाद यह भी देखना चाहते थे कि लोग और उनका परिवार कैसा व्यवहार करते हैं जब उनके करीबी और प्रिय, उनके परिचित और उनके सह-आगंतुकों में से कुछ को एक-एक करके गोली (बैक्टीरिया/वायरस) के माध्यम से

मार दिया जाता है। आतंकी हमला यह देखने के लिए था कि भारतीय महिलाएँ कैसे व्यवहार करती हैं (जिन्हें अन्य क्षेत्रों, धर्मों और देशों की महिलाओं की तुलना में अपने परिवार के साथ भावनात्मक रूप से अधिक जुड़ा हुआ माना जाता है।

यह समझने के लिए कि ऐसे लोगों और ऐसी कंपनियों की संलिप्तता है, सभी से अनुरोध है कि वे समाचारों/संदेशों/चेतावनी की संख्या में वृद्धि की जांच करें, जो पुराने वायरस के नए रूपों या पूरी तरह से नए वायरस, नए संदेश और आसन्न विश्व मानचित्र, नई मुद्रा (क्रिप्टो, अमेरिका-यूरो या ईंटों आदि), एलियंस आदि के बारे में समाचार सामने आने लगे हैं।

(1.4) पहलगाम में आतंकी हमला भी उन लोगों और उनके संगठन द्वारा करवाया गया था जो द्वितीय विश्व युद्ध में यहूदियों के स्थान पर हिंदुओं के नाम पर एक नया बलि का बकरा बनाना चाहते थे, अगले विश्व युद्ध के लिए जो कि अब अपनी अंतिम तैयारी में लग रहा है।
इस बात को समझने के लिए कि इस तरह के लोगों की संलिप्तता है और इस तरह के दृष्टिकोण से ही इस बात को समझा जा सकता है कि यह हत्या एक पुरुष हिंदू की हुई और मीडिया, सोशल मीडिया में एक समुदाय और एक देश के खिलाफ नफरत फैलाने की अचानक वृद्धि हुई, जो हिंदुओं के प्रति विश्व की जनता की सहानुभूति खोने के लिए पर्याप्त कहा जा सकता है (जैसा कि द्वितीय विश्व युद्ध के शुरू होने से पहले हुआ था कि यहूदियों ने विश्व की जनता की सहानुभूति खो दी थी) और फिर वे जो कुछ भी करना चाहते हैं, उसके लिए आसानी से अलग-थलग पड़ सकते हैं।

(2) समाज के लिए मुख्य चिंता का कारण – इसके कारण और उपाय: ऐसा प्रतीत होता है कि जब अन्य लोगों की हत्या की जा रही थी, तब पुरुषों की ओर से कोई प्रतिरोध नहीं किया गया, और आश्चर्य की बात यह है कि महिलाओं की ओर से भी कोई प्रतिशोध नहीं हुआ, तब भी जब उनके पति, भाई या पिता को उनके सामने ही मार दिया गया, जो कि केवल भारतीयों और विशेषकर तथाकथित हिंदू पुरुष और महिला आबादी की ही नहीं, बल्कि पूरे समाज की मानसिक शक्ति की बहुत दयनीय स्थिति को दर्शाता है।

(2.1). समाज में भौतिक सुरक्षा की ऐसी दयनीय स्थिति के कारण: इस दयनीय स्थिति का मुख्य कारण समाज में व्याप्त कुरीतियों के दुष्प्रभाव कहे जा सकते हैं। महान आचार्य चाणक्य की समझ, जिन्होंने न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व के प्रशासन को आकार दिया है:
आचार्य चाणक्य कहते हैं :
खुशी की जड़ धर्म : । धर्म का जड़ अर्थ : . अर्थ का जड़ राज्य का. राज्य का जड़ इन्द्रियजय :
That is: सुख का मूल है, धर्म। धर्म का मूल है, अर्थ। अर्थ का मूल है, राज्य। राज्य का मूल है, इन्द्रियों पर विजय।
[सच्चे सुख का आधार धर्म है, धर्म का आधार अर्थ है (अर्थ का अर्थ है धन और उसकी प्रक्रिया), अर्थ का आधार राज्य है और राज्य का आधार राजा/रानी/राष्ट्रपति/प्रधानमंत्री की इंद्रियों पर नियंत्रण है।]
हालाँकि, इस श्लोक में व्यक्त भावनाएँ सनातन धर्म से मेल नहीं खातीं और न ही किसी पवित्र ग्रंथ में इसका उल्लेख मिलता है। पवित्र ग्रंथ के अनुसार, धर्म ही आधार और आधार है।

(2.1.1) इस श्लोक के कारण क्या हुआ कि राज्य और उसके प्रमुख (राजा, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री) में यह भावना आ गई कि वे ही राज्य/देश की सभी गतिविधियों, उसकी अर्थव्यवस्था और यहां तक कि धर्म/धर्म के केंद्र में हैं, भले ही उन्होंने अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त न की हो।

यद्यपि यह जांचने के लिए कोई प्रत्यक्ष तंत्र नहीं है कि देश के राजा या प्रधानमंत्री ने अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर ली है या नहीं, लेकिन इस श्लोक ने निश्चित रूप से यह मिसाल कायम कर दी है कि राज्य की सभी गतिविधियों की देखभाल करना उनका विशेषाधिकार है, जबकि तथ्य यह है कि पिछले पच्चीस सौ वर्षों में हमारे पास शायद ही कोई ऐसा राज्य प्रमुख हुआ हो जिसने अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर ली हो।

भगवान ने राजा/रानी, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति आदि को देश नामक फार्म हाउस के मालिक के रूप में नहीं बनाया है और उनके खेल के लिए जनता को बनाया है। यह श्लोक व्यक्ति और समाज की स्वतंत्रता को कमजोर करता है और समाज की सामूहिक बुद्धि पर भी सवाल उठाता है, जबकि तथ्य यह है कि यह लोग ही हैं जो समाज का निर्माण करते हैं, और यह समाज ही है जो सबसे पहले राज्य का निर्माण करता है, न कि इसके विपरीत।

हम इस बात की सराहना कर सकते हैं कि चाणक्य (अर्थशास्त्र के लेखक और मगध साम्राज्य के संस्थापक, जिसे लंबाई और चौड़ाई में सबसे बड़ा कहा जा सकता है) द्वारा प्रस्तुत उपरोक्त कथा मुख्य कारणों में से एक है कि राजा / रानी / राष्ट्रपति / प्रधान मंत्री अपनी मर्जी के अनुसार काम करते रहते हैं और बहुसंख्यक लोग (मालिक) बलि की वेदी पर तोप का चारा या बकरा बन जाते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि लगभग पच्चीस सौ वर्ष पूर्व आदरणीय चाणक्य, कन्फ्यूशियस, प्लेटो, सुकरात आदि महान आचार्यों का एक संगम हुआ था, जिनकी वाणी आज भी चल रही है और यह स्पष्ट है कि दो विश्व युद्धों, विश्वव्यापी तालाबंदी, समवर्ती आर्थिक उथल-पुथल और चल रहे युद्धों के बाद हमें उन मूल बातों पर पुनः विचार करने की आवश्यकता है, जहां से सभी सभ्यताएं उभरी थीं।
इसके बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया पुस्तक देखें - वैकल्पिक अर्थव्यवस्था - प्राकृतिक व्यवस्थित अर्थव्यवस्था, वेबसाइट: resurrectionofdharma.com से , निःशुल्क डाउनलोड करें)

(2.2). समाज में भौतिक सुरक्षा की ऐसी दयनीय स्थिति के लिए उपाय:
कहा जाता है कि आदिवासी-मूलवासी ही मूल हैं और सभ्य दुनिया उन पर बनी हुई या इन मूलवासियों से प्रेरणा लेकर बनी हुई एक संरचना है। इसलिए जब यह संरचना जीर्ण-शीर्ण होती दिखाई दे तो मूल-आदिवासियों के पास जाना ही एकमात्र विकल्प रह जाता है और उनसे पुनः संकेत/मार्गदर्शन/दिशा लेना कि कैसे इन (आदिवासियों) ने बुनियादी सुरक्षा (भौतिक सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा और आश्रय) का ध्यान रखा है और कैसे अपना प्रशासन, न्याय और अपने वंश को बनाए रखा है, बुनियादी स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन और पर्यावरण संरक्षण का ध्यान रखा है और साथ ही अपनी पूजा-अर्चना भी की है जो उन्हें युगों से खुद को बनाए रखने के लिए परिपूर्ण बनाती है।

बस्ती–सभ्यता के आरंभ में यह सोचा गया था कि समाज को उन सभी कार्यों का ध्यान रखना होगा जो सामान्यतः प्रत्येक आदिवासी करता है, तथा साथ ही उन नए कार्यों का भी ध्यान रखना होगा जो बस्ती/सभ्यता के कारण उत्पन्न हो सकते हैं।
कहा जाता है कि काफी मंथन के बाद यह बात स्पष्ट हो गई कि किसी भी बस्ती/समाज/सभ्यता को बनाए रखने के लिए किसी भी समाज को किसी भी समय, स्थान/स्थान और ऊर्जा के रूप में जो भी कार्य करना पड़ता है, उसे मोटे तौर पर चार प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है, वह भी समान स्तर पर:

(क) बुनियादी सुरक्षा और संरक्षा, **(ख) शिक्षा, योजना और रणनीति, नियम और** विनियम बनाना , **(ग)** सामग्री का संग्रह, सामग्री का भंडारण और समाज में उसका वितरण, **(घ)** समाज को अन्य सभी सहायक सेवाएँ जैसे स्वास्थ्य सेवाएँ, इंजीनियरिंग सेवा, सफाई और स्वच्छता का रखरखाव, मनोरंजन की व्यवस्था आदि।

(3) उपरोक्त सीमांकन के अनुसार भारत की 130 करोड़ की आबादी का एक चौथाई हिस्सा यानी लगभग 32.5 करोड़ लोगों को सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं से जोड़ा जाना चाहिए। यदि हम मनुष्यों के औसत जीवन को 100 वर्ष मानते हैं, तो इसका एक चौथाई हिस्सा यानी लगभग 8.125 करोड़ लोग (पुरुष और महिला) प्रत्यक्ष सुरक्षा के प्रावधान में शामिल होने चाहिए। राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने के लिए, भारत को 8 करोड़ नागरिकों की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता है। इस मिशन के हिस्से के रूप में, धर्म के पुनरुत्थान ने एक साहसिक लक्ष्य रखा है: जून 2026 तक, हमारा लक्ष्य 4 करोड़ रोजगार के अवसर पैदा करना है – समाज की प्रत्यक्ष सुरक्षा में पुरुषों के लिए 50% और महिलाओं के लिए 50% आवंटित करके समान भागीदारी सुनिश्चित करना।

हम उपरोक्त को साकार करने के लिए काम कर रहे हैं और इसलिए आपको इस प्रक्रिया में शामिल होने के लिए आमंत्रित करते हैं ताकि भारत में उचित भौतिक और सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।
भगवान भारत को आशीर्वाद दें,

भवदीय
नरेन्द्र (धर्म के पुनरुत्थान के लिए)
वेबसाइट: resurrectionofdharma.com , दिनांक: 24.05.2025, भारत,
अनुलग्नक: लिंक्डिन, फेसबुक और वेबसाइट पर हमारे दिनांक 24.04 26.04 30.04, 09.05 और 17.05.2025 के पोस्ट का संक्षिप्त विवरण (पहलगा में आतंकवादी हमले पर)

पत्र संख्या 7, 30/05/2025

विषय: पहलगाम में हुए आतंकी हमले पर संक्षिप्त जानकारी – भारत, जिसे विश्व युद्ध का अग्रदूत कहा जा रहा है तथा तथाकथित नई विश्व व्यवस्था की स्थापना जिसमें विश्व पर एक का शासन होगा तथा मनुष्यों के साथ फार्म हाउस में जानवरों जैसा व्यवहार किया जाएगा, जो कि एक बड़ी चिंता का विषय है, तब भारत इस परिदृश्य में क्या कर सकता है जो कि धर्म के अनुरूप हो तथा वह किस प्रकार भौतिक सुरक्षा सुनिश्चित कर सकता है, सभी को सामाजिक सुरक्षा प्रदान कर सकता है तथा किस प्रकार वह आवश्यक जनसंख्या के छह प्रतिशत (अर्थात लगभग आठ करोड़ लोग ग्रामीण तथा शहरी दोनों क्षेत्रों में जिसमें 130 करोड़ की जनसंख्या वाले भारत में पुरुष, महिला दोनों शामिल हैं) को भौतिक सुरक्षा के प्रावधान में रोजगार की व्यवस्था कर सकता है। यह पिछले सोशल मीडिया पोस्ट, दिनांक 24.05.2025 की निरंतरता में है) –तत्संबंधी

प्रिय भारतवासियों,
अभिवादन

सीसी: भारत के राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री, सांसद, सीजेआई, नीति आयोग, और अन्य।

प्रिय साथी नागरिकों , भारत ,
निम्नलिखित प्रस्तुत है: यह प्रस्तुति 24.05.2025 दिनांकित पिछले पोस्ट की निरंतरता में है, और इसमें शामिल है **(1).** आतंकवादी हमले और लक्षित हत्या पर व्यापक दृष्टिकोण **(2).** समवर्ती स्थिति पर भिन्न विचार **(3).** तथाकथित 'नई विश्व व्यवस्था ' की प्रयोज्यता पर संक्षिप्त विचार, **(4).** इस परिदृश्य में भारत क्या कर सकता है जो धर्म के अनुसार हो, इस मंदी से उबरने के लिए?
(5) 2,000 लोगों की आबादी वाले गांव, 2 लाख लोगों की आबादी वाले शहर आदि में भौतिक सुरक्षा कैसे सुनिश्चित की जा सकती है, इस पर संक्षिप्त विवरण के साथ कार्य योजना।

(1) आतंकवादी हमले और लक्षित हत्या पर व्यापक दृष्टिकोण:

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है कि लोग चाहे जो भी कहें, लेकिन तथ्य यही है कि पहलगाम में आतंकवादी हमले की योजना कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों, कुछ तथाकथित महान हस्तियों और उनके संगठन द्वारा सावधानीपूर्वक बनाई गई थी, जो विश्व युद्ध– III और IV (जो तैयारी के अंतिम चरण में प्रतीत होता है) की व्यवस्था करने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं, और इसके लिए एक नया बलि का बकरा (शायद हिंदू – द्वितीय विश्व युद्ध में यहूदियों की तरह) ढूंढ रहे हैं।
आश्चर्य की बात यह है कि इन तथाकथित महानुभावों (जिनमें एक व्यक्ति दुनिया के शीर्षस्थ धनवानों, राजघरानों और धर्मगुरुओं से घिरा हुआ है, जिनके लिए कई प्रमुख देशों के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री सिर्फ उनके हाथ का मोहरा हैं) के लिए पहलगाम में हुआ यह आतंकी हमला विश्वयुद्ध की ओर बढ़ने और फिर

युद्ध में अधिकांश आबादी को खत्म कर तथाकथित नई विश्व व्यवस्था स्थापित करने से पहले का आखिरी प्रयोग कहा जा सकता है। एक 'नई विश्व व्यवस्था' जिसमें शीर्षस्थ धनवानों, राजघरानों और धर्मगुरुओं के इस त्रिकोण (जिसे वे लौह त्रिकोण कहते हैं) से घिरा हुआ यह व्यक्ति पृथ्वी पर पूर्ण नियंत्रण का आनंद ले सकता है, जिसमें अधिकांश मानव आबादी [इलेक्ट्रॉनिक चिप से लैस होगी, और रेडियो फ्रीक्वेंसी (कोविड वैक्सीन को रेडियो फ्रीक्वेंसी संगत उपकरण कहा जाता है) द्वारा नियंत्रित होगी, जो फार्म हाउस में काम करने वाले जानवरों की तरह काम करेगी

(1.1) यह आतंक विशेष रूप से समवर्ती हिंदू महिलाओं के व्यवहार को देखने के लिए रचा गया था, हिंदू महिला जिसे आम तौर पर एक असहाय पिछड़ी महिला के रूप में चित्रित किया जाता है, लेकिन वह माँ दुर्गा या माँ काली या माँ सीता या बहन द्रौपदी (जो क्रूर मानी जाती हैं और अपराधियों को जीवित नहीं छोड़ती हैं) की तरह बन जाती हैं।
इस आतंकवादी हमले की सावधानीपूर्वक योजना बनाई गई थी ताकि सामान्य रूप से लोगों और विशेष रूप से हिंदू महिलाओं के व्यवहार को देखा जा सके, जब उनके पति को उनके सामने बिंदु रिक्त सीमा से मार दिया जा रहा था, क्योंकि हिंदू महिलाएं अपने पतियों की लंबी उम्र, स्वास्थ्य और खुशी के लिए भगवान शिव और देवी पार्वती का आशीर्वाद लेने के लिए तीन संख्या में उपवास (अर्थात् (i) करवा चौथ, (ii) हरतालिका तीज (iii) सावित्री व्रत या वट सावित्री अमावस्या या वट पूर्णिमा) रखती हैं, जिसमें वट सावित्री व्रत सावित्री के पवित्र कार्य को याद करने के लिए किया जाता है, जिन्होंने अपने पति सत्यवान को मृत्यु के देवता (यम) से बचाया था और आशीर्वाद मांगा था कि यदि स्थिति की मांग हो तो वे भी ऐसा कर सकते हैं (जो मृत्यु के देवता को भी नहीं छोड़ते हैं, मृत्यु के भाड़े के सैनिकों की बात क्या है)। चूंकि यहूदी, ईसाई, मुस्लिम, बौद्ध और जैन धर्मों की महिलाओं द्वारा ऐसे कोई अनुष्ठान नहीं किए जाते , इसलिए ऐसी स्थिति में हिंदू महिलाओं को अपराधियों की स्पष्ट पसंद माना जा सकता है।
उपरोक्त बातों की सराहना करते हुए, सभी से अनुरोध है कि दिनांक 22.04.2025 को भारत के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बाद वैश्विक परिदृश्य में आ रही तेजी पर ध्यान दें।

(2) समवर्ती स्थिति पर भिन्न-भिन्न विचार:

आध्यात्मिक जगत में कहा जाता है कि महाभारत के समाप्त होते ही गांडीव (अर्जुन का धनुष और बाण) की शक्ति भी समाप्त हो गई और भगवान कृष्ण के चले जाने के साथ ही अंधकार छाने लगा और कलयुग या मशीन युग (कलपुर्जा युग) या कलयुग या कल-काली का युग शुरू हो गया। कलयुग के आगमन के साथ ही सभी ऋषि-मुनि अपने पैरों को पीछे रखकर एकांत और प्रार्थना में लीन हो गए।

ऐसा कहा जाता है कि अंधकार युग के आगमन के साथ ही सभी नाइटी-उल्लू, बैटमैन, स्पाइडरमैन, शिकारी, डाकू, चोर, मोहिनी, जादूगर, डार्क वेब के संचालक, चालाक कलाओं, काले जादू और छद्म विज्ञान के स्वामी तथा अन्य प्राणी और प्रचारक जो आमतौर पर अंधेरे में काम करते हैं, सक्रिय हो गए और अपनी गतिविधियां शुरू कर दीं।

अंधकार के प्रभाव में तथा संतों और महात्माओं से उचित संरक्षण और मार्गदर्शन से वंचित आम लोग आसानी से चालाक कलाओं और काले जादू के स्वामियों की ओर आकर्षित हो जाते थे।

अन्धकार युग का प्रथम प्रभाव तब दिखाई पड़ा जब लोग, दैनिक सुख–सुविधाओं से वंचित, अन्धकार युग से अंधे, सड़े–गले फलों और अनाजों से बनी मदिरा के नशे में चूर, स्नेहहीन, अनादरशील और दुर्बल हो गये कि वे अपने से बड़ों, स्त्रियों, पशु–पक्षियों, वनस्पतियों, मछलियों और जलचरों के प्रति आदर और कर्तव्यपरायणता नहीं रख सके, फलस्वरूप इनसे परस्पर सहयोग से वंचित हो गये, अतएव निराश हो गये।

इससे निराश होकर लोगों ने आत्म सुधार करने के स्थान पर जमीन पर ही अड़े रहे, पवित्रता को स्वीकार करने तथा मूर्खता को अस्वीकार करने के स्थान पर अपने दैनिक कार्यों में असहयोग की इस घटना को अपने तथाकथित वर्चस्व पर आक्रमण के रूप में लिया।
फिर संत के वेश में शैतान आता है जो लोगों को पालतू जानवरों को वश में करने, पालतू जानवरों और अन्य लोगों को किसी भी तरह से अपने नियंत्रण में लेने की सलाह देता है, भले ही इसके लिए उन्हें मारना पड़े, उन्हें नपुंसक बनाना पड़े या उन्हें शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और यहां तक कि आध्यात्मिक रूप से अपंग बनाना पड़े, विद्रोहियों को नियमित दंड देकर और उन्हें बंदी बनाकर और कारावास में रखकर।

दोस्तों के वेश में ये दुश्मन लोगों को सलाह देते हैं कि वे इनका पूरा उपयोग करें और इन्हें उपयोगी वस्तु के रूप में इस्तेमाल करें। साथ ही वे लोगों को सलाह देते हैं कि अपने पास जानवर, गुलाम और सोना रखना ताकत की निशानी है, धरती और उसके पर्यावरण का अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करना चाहिए और जिसके पास ये सब ज़्यादा होगा, वही ताकतवर होगा। इन सबने लोगों की सोच में बुनियादी बदलाव ला दिया है और व्यवहार और कार्रवाई में भी बदलाव ला दिया है।

इसी मूल विचार को लेकर कलयुग में मुख्यतः तीन सभ्यताएं विकसित हुईं:–

(2.i) माया और इंका सभ्यताएँ (जबकि कलियुग की सटीक तिथियों और अवधि पर बहस होती है, आम समझ यह है कि माया और इंका सभ्यताएँ, अपने जटिल समाजों और संस्कृतियों के साथ, कलियुग के समय सीमा के भीतर विकसित हुईं)। **(2.ii)** समवर्ती और तथाकथित आधुनिक सभ्यता।

(2.i) माया सभ्यता में कलियुग की विशिष्ट विशेषताएं और माया और इंका सभ्यता के पतन के कारण:

चालाक कला और छद्म विज्ञान के उस्ताद और तथाकथित सत्ता के लालची लोगों ने कुछ लोगों को यह विश्वास दिलाया कि एक बार रात हो जाने पर और सूरज ढल जाने पर वह फिर से तभी उगेगा जब वे सूर्य को मानव बलि चढ़ाएंगे और यह सुनिश्चित करने के लिए कि अगले दिन सूरज फिर से उग आए, माया लोगों ने सूर्य देवता को प्रसन्न करने के लिए हर दिन एक मानव की बलि देना शुरू कर दिया और इस तरह चालाक कला और छद्म विज्ञान के इन उस्तादों ने पूरी माया सभ्यता पर कब्ज़ा कर लिया। वे बलि दिए जाने वाले व्यक्ति को नीले रंग से रंग देते थे, उसकी पसलियों को काट देते थे और बलि के तौर पर धड़कता हुआ दिल निकाल लेते थे। ऐसा कहा जाता है कि शुरुआती दौर में माया सभ्यता में हज़ारों सामान्य लोगों

की हत्या की गई और यह सिलसिला रुक-रुक कर जारी रहा जब काले जादू के इन उस्तादों ने पूरी सभ्यता पर बड़ा नियंत्रण हासिल कर लिया ।

माया और इंका सभ्यता के पतन के कारण: शास्त्रीय माया और इंका सभ्यता के पतन को समझाने के लिए अस्सी से अधिक विभिन्न सिद्धांत दिए जा रहे हैं, जिनमें जलवायु परिवर्तन से लेकर वनों की कटाई, गंभीर सूखा, आंतरिक युद्ध, विदेशी घुसपैठ, व्यापक रूप से फैलने वाली बीमारियों से लेकर एकल-फसल पर खतरनाक निर्भरता, व्यापार और व्यापार मार्ग का पतन और नेताओं द्वारा कार्रवाई की कमी शामिल हैं, हालांकि आध्यात्मिक क्षेत्र के लोग कहते हैं कि माया और इंका सभ्यता का पतन धर्म और राजनीतिक प्राधिकरण की सामाजिक नियंत्रण प्रणालियों में विफलता के कारण हुआ था, जो बढ़ती सामाजिक-आर्थिक जटिलता के कारण पारंपरिक अनुष्ठानों की शक्ति और आज्ञाकारिता को मजबूर करने के राजा के अधिकार पर हावी हो गया था।

(2.ii). समवर्ती और तथाकथित आधुनिक सभ्यता में कलियुग की विशिष्ट विशेषताएं तथा इस बात की चिंता के कारण कि इसका हश्र भी माया और इंका सभ्यता जैसा न हो:

चालाक कला और छद्म विज्ञान के स्वामी (और समवर्ती और तथाकथित आधुनिक सभ्यता के दौरान तथाकथित शक्ति लोलुपों ने पूरी सभ्यता पर नियंत्रण करने के प्रयास में कुछ लोगों को यह विश्वास दिलाया कि एक बार जब सूर्य अस्त हो गया और रात हो गई, तो वे और उनका वंश अपने देवता/देवी को मानव बलि चढ़ाते हैं तो वे और उनका वंश अगले दिन जीवित रहेंगे और यदि वे मानव बलि देना जारी रखते हैं तो वे देवी द्वारा चुने गए व्यक्ति बन जाएंगे और इस प्रकार जीवन की विलासिता का पूरा आनंद लेंगे और यहां तक कि अमर भी हो सकते हैं।

अगले दिन भी जीवन और उसकी शक्ति बनी रहे, यह सुनिश्चित करने के लिए ऐसे लोग अपने देवता/देवी को प्रसन्न करने के लिए हर दिन एक इंसान की बलि देने लगे और पूरी आबादी के मानस पर नियंत्रण पाने के लिए हर संभव कोशिश करने लगे। बलि दिए जाने वाले व्यक्ति को नहलाया जाता था, उसका गला काटा जाता था और बलि के तौर पर गर्म खून निकाला जाता था। ऐसा कहा जाता है कि शुरुआती दौर में समवर्ती सभ्यता में हज़ारों सामान्य लोगों को इसी तरह मारा जाता था और यह प्रथा आज भी जारी है (क्योंकि काले जादू के ये महारथी अपने तरीके से पूरी दुनिया पर नियंत्रण नहीं कर पाए थे)।

[ऐसा कहा जाता है कि रावण ने भगवान शिव के प्रति अपनी आस्था और समर्पण दिखाने के लिए दस बार अपना सिर काटा और भगवान शिव को अर्पित किया और एक तरह से भगवान शिव को प्रसन्न किया। कलयुग में इन धूर्त कला और छद्म विज्ञान के स्वामी और तथाकथित सत्ता के लोभी लोगों में रावण जितना साहस और आस्था नहीं थी (या शायद ये खुद को रावण से ज़्यादा चतुर समझते हैं) इसलिए ये दूसरे इंसानों का सिर काटने पर राजी हो गए। **]**

धूर्त कला और छद्म विज्ञान के इन महारथियों में से कुछ कहते हैं कि बलि/कुर्बानी देवी/अल्लाह की ओर से अपने चुने हुए लोगों के लिए एक दावत है। बलि/कुर्बानी सवाब कमाने का एक ज़रिया है, [देवी/अल्लाह की प्रसन्नता के करीब पहुँचना और विपत्तियों के खिलाफ़ एक ढाल है।

बलि/कुर्बानी देना देवी/अल्लाह के मार्ग में एक बलिदान है और देवी/अल्लाह के आशीर्वाद के लिए आभार व्यक्त करने का एक तरीका है, और माना जा सकता है कि यह धार्मिक, नैतिक और सामाजिक कारणों और मामलों के लिए निर्धारित किया गया है।

(2.ii.i) जो लोग मानव शरीर, उसकी शारीरिक रचना, उसके शरीर क्रिया विज्ञान, उसके ऊर्जा केंद्रों [(मुख्य रूप से सात चक्र, जो मूलाधार चक्र (सेक्स केंद्र), मृत्यु केंद्र (नाभि), सौर केंद्र (पेट), केंद्रीय केंद्र (हृदय), कंठ केंद्र, तीसरी आंख (पीनियल ग्रंथि) और मुकुट चक्र (सिर के ऊपर)] के बारे में जानते हैं, वे इस बात से सहमत होंगे कि मनुष्य सामान्य तरीके से तभी व्यवहार कर सकता है, जब वह शारीरिक रूप से, शारीरिक रूप से सामान्य कार्यशील स्थिति में हो और जिसके ऊर्जा केंद्र अशांत न हों। ऐसा कहा जाता है कि केवल ऐसा व्यक्ति ही सामान्य स्वस्थ, सुखी और पवित्र तरीके से रह सकता है और व्यवहार कर सकता है और न तो उसमें हीन भावना होगी और न ही श्रेष्ठता की भावना होगी, न तो वह दूसरों पर हावी होने की कोशिश करेगा और न ही दूसरों से दबने की कोशिश करेगा, हालांकि अगर किसी व्यक्ति की शारीरिक रचना, शरीर क्रिया विज्ञान और ऊर्जा केंद्र अशांत हो जाते हैं तो उन्हें आसानी से हेरफेर किया जा सकता है।

मनुष्य (पुरुष/महिला) के ऊर्जा केंद्रों को थोड़ा सा भी परेशान करके उन्हें दुखी और प्रयोग करने योग्य बनाने की यह समझ, तथा यदि उनके ऊर्जा केंद्र को स्थायी रूप से परेशान/क्षतिग्रस्त कर दिया जाए तो मनुष्य का स्थायी रूप से उपयोग, दुरुपयोग, हेरफेर किया जा सकता है, इन चालाक कला और छद्म विज्ञान के मास्टरों का काम थोड़ा आसान हो गया और इससे मानव बलि की संख्या में कमी आई।

धूर्त कला और छद्म विज्ञान के इन महारथियों ने पहले तो समाज में मनुष्यों (और खास तौर पर बच्चों) की बलि का कहर मचाया और फिर पीछे के दरवाजे से यह संदेश फैलाया कि बलि के लिए केवल स्वस्थ व्यक्ति ही उपयुक्त है और इस संदेश के कारण समाज के कुछ लोगों ने पुरुषों का खतना और महिलाओं के जननांगों को विकृत करने का फैसला किया ताकि वे भविष्य में किसी भी समय अपने बच्चों को बलि दिए जाने से बचा सकें। मानव बलि का कहर इतना गहरा था कि सात दिन के बच्चों का खतना कर दिया गया या उनके जननांगों को विकृत कर दिया गया (भगवान की आज्ञा के रूप में)। ऐसा कहा जाता है कि कम से कम बीस करोड़ महिलाएं एफजीएम (महिला जननांग विकृति) की शिकार हैं।

(2.ii.ii)। इसके अलावा, खतना या एफजीएम का सहारा नहीं लेने वाली आबादी को नियंत्रित करने के लिए, चालाक कला और छद्म विज्ञान के इन मास्टर ने विभिन्न तरीकों को लागू किया जैसे: शोर पैदा करना (लाउडस्पीकर के उपयोग को बढ़ावा देना, घरों का निर्माण करना जिसके लिए छत पंखे एयर कंडीशनिंग का उपयोग करना आवश्यक है आदि) दिल और सिर को परेशान करने के लिए, पानी और भोजन को दूषित करना पेट (इंद्रिय केंद्र) और गले (भाषण केंद्र) को परेशान करने के लिए, पाचन (पेट और यहां तक कि पूरे शरीर) को परेशान करने के लिए पश्चिमी कमोड के उपयोग का सुझाव देना और अब ये पीनियल ग्रंथि को स्थायी रूप से नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर रहे हैं (यह कहा जाता है कि एल्यूमीनियम और सोडियम ग्लाइकोल की उपस्थिति यदि निश्चित आवृत्ति के साथ ट्रिगर होती है तो पीनियल ग्रंथि को स्थायी नुकसान पहुंचाएगी

(2.ii.iii) इसके अलावा, धर्म संस्थान द्वारा पूरे समाज के संपूर्ण प्रबंधन की प्रथा के विपरीत (चाहे वह सामाजिक सुरक्षा, प्रशासन, शासन, व्यापार हो) जैसा कि राम राज्य, धर्म राज्य सतयुग और यहां तक कि कलियुग के दौरान प्रचलित माना जाता था), चालाक कला और छद्म विज्ञान के ये स्वामी मीडिया के माध्यम से और उनके द्वारा बनाए गए तीन वर्गों (मानव आवश्यकता/मानस से प्रेरित) के माध्यम से समाज का प्रबंधन करने में सफल हो जाते हैं जिसमें धर्म अपने पुजारियों/पंडित/मौलवियों के माध्यम से लोगों के दिलों को नियंत्रित करता है, राज्य (राज्य/देश) अपने राजा/प्रधानमंत्री/राष्ट्रपति/अधिकारियों के माध्यम से लोगों के दिमाग को नियंत्रित करता है और धन अपने दुकानदारों/व्यापारियों के माध्यम से जनता के पेट को नियंत्रित करता है।

ऐसे में पूरा समाज इन धूर्त कला और छद्म विज्ञान के महारथियों का कैदी बन गया है और अब इनके आगे पूरी तरह समर्पित होकर बलि चढ़ने या अपने शरीर में चिप लगवाकर फार्म हाउस के जानवरों की तरह काम करने को तैयार होता दिखाई दे रहा है।

(2.ii.iv) आध्यात्मिक जगत में कहा जाता है कि इन तथाकथित धूर्त कला और छद्म विज्ञान के महारथियों ने चाहे जितनी भी शक्ति एकत्रित कर ली हो, लेकिन तथ्य यह है कि ये मानव मुंडों की माला पहने देवी–देवताओं की कुछ तस्वीरें देखकर भी भयभीत हो जाते हैं। कहा जाता है कि पहलगाम में आतंकी हमला और पुरुष हिंदू की उनकी पत्नी, बेटी और बहन के सामने हत्या इन्हीं लोगों ने करवाई थी, ताकि वे अपने डर पर काबू पा सकें और विश्व युद्ध की योजना बना सकें, जिसके बाद नई विश्व व्यवस्था का निर्माण हो सके।

(3) तथाकथित 'नई विश्व व्यवस्था' की प्रयोज्यता पर संक्षिप्त विचार:

नई विश्व व्यवस्था (एक तरह से पूरी दुनिया में एक या कुछ लोगों का नियंत्रण) संभव नहीं है क्योंकि यह प्रकृति के विरुद्ध है। इसे पहले दो बार आज़माया गया था, एक बार खुद राम ने (रावण से युद्ध जीतने और उसे खत्म करने के बाद) और दूसरी बार युधिष्ठिर ने (महाभारत युद्ध के बाद) और दोनों को चुनौती दी गई और विफल कर दिया गया, एक बार खुद राम के बेटे ने और दूसरी बार पांडव और कृष्ण के वंश की अगली पीढ़ी ने और इस तरह राम और युधिष्ठिर दोनों ने इसे त्याग दिया।
वर्तमान में 'नई विश्व व्यवस्था' के ये तथाकथित समर्थक युद्ध भी नहीं जीत पाए हैं, जो कि स्पष्ट रूप से वे जीत भी नहीं सकते हैं **[(** सिर्फ इसलिए कि वे धर्म (मूल धर्म **) के विरुद्ध हैं]** इसलिए नई विश्व व्यवस्था के बारे में जो भी बातें हम सुन रहे हैं, वे बेकार के मज़ाकिया लोगों के लिए एक अच्छी कहानी कही जा सकती हैं।

(4). इस परिदृश्य में भारत इस मंदी से उबरने के लिए क्या कर सकता है जो धर्म के अनुरूप हो?

आध्यात्मिक जगत में कहा जाता है कि उपरोक्त को मृगतृष्णा, असंख्यता या माया का प्रभाव कहा जा सकता है; अन्यथा, चालाक कला और छद्म विज्ञान के महारथियों का ऐसा कार्य इतने लंबे समय तक सफल नहीं हो सकता था।

आध्यात्मिक क्षेत्र में जो लोग हैं, उनका कहना है कि भोर होने वाली है और यह प्रार्थना, आत्म-सुधार, अपने पेय और भोजन में सुधार, प्रकृति के प्रति अपने व्यवहार में सुधार और फिर तैयार होने का समय है ताकि जो भी मूर्खतापूर्ण है उसे अस्वीकार किया जा सके और जो भी मूल्यवान है उसे हमारे सामूहिक कल्याण के लिए स्वीकार किया जा सके। उपरोक्त बातों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि इस अंतहीन मंदी से उबरना संभव है और इसकी शुरुआत हमारे द्वारा खाए जाने वाले भोजन और हमारे द्वारा पिए जाने वाले तरल पदार्थों में सरल सुधार से हो सकती है।

(5). दो हजार लोगों की आबादी वाले गांव में भौतिक सुरक्षा कैसे सुनिश्चित की जा सकती है, इस पर संक्षिप्त विवरण के साथ कार्य योजना, जिसे कस्बों, शहरों और महानगरों में भी इसी तरह विस्तारित किया जा सकता है ।

उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन पहलगाम में हुई गंभीर सुरक्षा चूकों, आवाज उठाने वाले, उंगलियां उठाने वाले, भय, घृणा फैलाने वाले, बदला लेने और युद्ध के लिए चिल्लाने वाले लोगों और एजेंसियों, तथा उसके बाद तुरंत युद्ध विराम के लिए सहमत होने और फिर बिना किसी चिंता के अपने सामान्य कार्यों/व्यवसायों में वापस लौटने वाले लोगों और एजेंसियों के बारे में विस्तार से बताए बिना, यह बताया जा रहा है कि लोगों की समग्र सुरक्षा और महिलाओं के सम्मान को इस स्तर तक कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है कि कोई भी व्यक्ति अकेले या अपने साथियों के साथ देश में किसी भी समय और किसी भी स्थान पर बिना किसी परेशानी के स्वतंत्र रूप से घूम सकता है।

यह कहा जा सकता है कि एक बार फिर महिलाओं को अपनी नींद से उठकर मामले को अपने हाथों में लेना होगा और अपराधी को सजा देनी होगी तथा न केवल अपनी बल्कि अपने पति, बेटे-बेटी, माता-पिता और आस-पास के प्रियजनों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी होगी। महिलाओं को आगे आकर यह सुनिश्चित करना होगा कि घर में सुरक्षा की आवश्यकता और प्रावधान के प्रति उचित मानसिकता विकसित हो, शिक्षा केंद्रों में उचित शिक्षा और प्रशिक्षण दिया जाए तथा समाज में उचित व्यवस्था की जाए ताकि न तो उपेक्षा हो और न ही किसी तरह का शोर-शराबा हो।

जैसा कि पिछली पोस्ट (नीचे संलग्न) के बिंदु क्रमांक तीन में बताया गया है कि समाज में भौतिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रति सौ लोगों में से कम से कम छह व्यक्ति (छह- 6%) की समर्पित भागीदारी की आवश्यकता है, अर्थात भारत की एक सौ तीस करोड़ की जनसंख्या में से आठ करोड़ से अधिक (8.125 करोड़) लोगों को भौतिक सुरक्षा सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी दी जानी चाहिए। (इस संबंध में विस्तृत जानकारी धर्म संस्थान की पुस्तक 'वैकल्पिक अर्थव्यवस्था', 'युद्ध का अर्थशास्त्र', 'शासन, प्रशासन और

एक स्थायी अर्थव्यवस्था के लिए उसका अनुकूलन' और अर्थव्यवस्था के प्रबंधन पर अध्यायों में दी गई है, जो कि मुफ्त डाउनलोड के लिए यहां उपलब्ध है: resurrectionofdharma.com)।

अगर हम विस्तार से देखें तो पाएंगे कि 8 करोड़ सुरक्षाकर्मियों को रोजगार देने का यह प्रयास न केवल सुरक्षा प्रदान करेगा बल्कि रोजगार की मांग को भी खत्म कर देगा। आर्थिक रूप से यह व्यवहार्य है और नैतिक रूप से भी यह शानदार है। इतने बड़े दल के साथ इस प्रकार की सुरक्षा प्रदान करना निश्चित रूप से बच्चों, बुजुर्गों, वनस्पतियों, जीव-जंतुओं, पक्षियों, जानवरों और जलीय जीवों को 24 घंटे सुरक्षित वातावरण प्रदान करेगा और किसी भी अप्रत्याशित आपदा में भी सहायक होगा।

[**एक उदाहरण**: दो हजार की आबादी वाले एक गांव में एक सौ बीस कर्मचारी (साठ पुरुष और साठ महिलाएं) तीन शिफ्टों में एक उपयुक्त और आरामदायक 'शिफ्ट रोटा' (जैसे तीन दिन रात, तीन दिन सुबह, तीन दिन शाम और प्रत्येक बदलाव के बाद छुट्टी यानी तीस व्यक्तियों के चार समूह) के साथ काम कर सकते हैं, उन्हें शारीरिक सुरक्षा प्रदान करने का कार्य सौंपा जा सकता है जिसमें निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं: 1) फसल सुरक्षा, 2) पालतू जानवरों की सुरक्षा, 3) जंगल की सुरक्षा, 4) अपहरणकर्ताओं से सुरक्षा, 5) शराबियों से सुरक्षा, 6) घरेलू हिंसा, छेड़छाड़ से सुरक्षा 7) चोरी की रोकथाम, 8) किसी भी मनमाने व्यवहार (गुंडे, बदमाश या किसी विशेष व्यक्ति) की रोकथाम, 9) सामाजिक कार्यों और विशेष कार्यक्रमों आदि के दौरान सुरक्षा प्रदान करना।
इसके अलावा, इस सेवा का प्रबंधन गांव में किसी भी समवर्ती धार्मिक परिसर (मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा आदि जहां पर्याप्त जगह हो) से किया जा सकता है। मूल वेतन और भत्ते (मई 2025 की दर के अनुसार दस से पंद्रह हजार प्रति माह), भूगोल के अनुसार वर्दी और अन्य आवश्यकताएं और सुविधाएं आसानी से चर्चा/व्यवस्था करके गांव की प्रबंधन समिति द्वारा निर्धारित की जा सकती हैं, हालांकि जिला समिति के परामर्श से। इसी तरह, कस्बों, शहरों और महानगरों में सुरक्षा की व्यवस्था की जा सकती है।

आइए एक समय सीमा के साथ शुरुआत करें कि एक वर्ष के भीतर हम चार करोड़ सुरक्षाकर्मियों की व्यवस्था करेंगे और तीन वर्षों के भीतर (अर्थात 2029 तक) हम समाज में अपेक्षित आठ करोड़ (50% पुरुष और 50% महिला) सुरक्षाकर्मियों की व्यवस्था पूरी कर लेंगे (वर्तमान मानक के अनुसार न्यूनतम वेतन दस हजार से पंद्रह हजार रुपये, स्थान के आधार पर)।

(5.1) यह कहा जा सकता है कि यदि हम ऐसा करने में सक्षम हैं तो हमें अनेक संवैधानिक निकायों की आवश्यकता नहीं होगी अथवा यदि हम ऐसा करना चाहते हैं तो हमें राज्य सरकार तथा लोकसभा को छोड़कर अन्य सभी संवैधानिक निकायों को त्यागना होगा ताकि इन संस्थाओं द्वारा उत्पन्न अराजकता तथा इन निकायों पर होने वाले भारी व्यय को समाप्त किया जा सके तथा इस प्रकार बचाए गए धन का उपयोग भौतिक तथा सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था करने तथा सुरक्षा में कार्यरत/संबद्ध लोगों को वेतन भुगतान में किया जा सके। यह उचित ही कहा जा सकता है कि बड़ी संख्या में रोजगार का सृजन , भौतिक तथा सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था करना तथा एक साथ इन सभी संस्थाओं को बनाए रखना, कतई संभव नहीं है।

बिहार में सबसे पहले चुनाव होने वाले हैं, इसलिए यहां के लोगों के पास यह तय करने का पहला विकल्प है कि उन्हें राज्य सरकार चाहिए , विधायक, एमएलसी और राज्यसभा सांसद चाहिए, चुनाव चाहिए, उपद्रव चाहिए या फिर जून 2026 तक कम से कम चालीस लाख युवाओं को रोजगार चाहिए और 2029 तक चालीस लाख और चाहिए, यानी कुल अस्सी लाख युवाओं को रोजगार चाहिए और उन्हें दस से पंद्रह हजार प्रति माह का न्यूनतम वेतन चाहिए। अगर बिहार के युवाओं को रोजगार चाहिए, तो उन्हें बाहर आकर इसे अपना एजेंडा बनाना होगा और देखना होगा कि यह साकार होता है या नहीं।

यदि हम राष्ट्रीय स्तर पर देखें, तो हमें एक समय-सीमा के साथ आगे बढ़ना होगा कि एक वर्ष के भीतर हम चार करोड़ सुरक्षाकर्मियों की व्यवस्था करेंगे तथा तीन वर्षों के भीतर (अर्थात 2029 तक) हम समाज में सुरक्षाकर्मियों के रूप में लगे अपेक्षित आठ करोड़ (50% पुरुष तथा 50% महिला) लोगों की व्यवस्था पूरी कर लेंगे (वर्तमान मानक के अनुसार न्यूनतम वेतन दस हजार से पंद्रह हजार रुपये स्थान के आधार पर)।

उपरोक्त प्रस्तुतिकरण शासन प्रक्रिया के गहन अवलोकन (वर्ष 2003 से), देश के शीर्ष नेतृत्व (कांग्रेस और भाजपा) के साथ संवाद, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक क्षेत्रों में बड़ी संख्या में नेताओं के साथ बातचीत, फकीर और संतों के साथ सत्संग (इस तरह के प्रभाव के लिए आभार पत्र लिंक्डइन और फेसबुक में व्यक्तिगत प्रोफाइल में देखा जा सकता है) और कुछ समय एकांत में बिताने के बाद किया गया है और इस तरह कहा जा सकता है कि यह भारत के साथी नागरिकों के उचित ध्यान, प्रतिक्रिया और सुविचारित कार्यों का हकदार है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि उपरोक्त प्रयास वास्तव में भारत के गौरव को पुनः स्थापित करेंगे और इसलिए हमारे सम्मिलित प्रयासों के हकदार हैं।
कृपया ऊपर प्रस्तुत किया गया है।
भगवान भारत को आशीर्वाद दें,

आपका
नरेंद्र
धर्म के पुनरुत्थान के लिए
(वेबसाइट: resurrectionofdharma.com),
दिनांक: 30.05.2025, भारत,
अनुलग्नक: सोशल मीडिया पोस्ट, दिनांक: 24.05.2025,
इनका समाधान धर्म के पुनरुत्थान और धर्म संस्थान की स्थापना, बुराइयों को खत्म करने और साधुत्व को ऊपर उठाने में निहित है।

पत्र संख्या 8, 23/06/2025

को

महामहिम द्रौपदी मुर्मू

भारत के राष्ट्रपति,

राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली -110001, भारत

भारत के सम्मानित साथी नागरिकों,

अभिवादन,

विषय: भारत में समाज के प्रत्येक सदस्य को शारीरिक सुरक्षा और अन्य सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के संबंध में, जिसके लिए भारत की राष्ट्रीय सरकार को तुरंत अपने तरीके को सुधारने और संशोधित करने और शारीरिक और सामाजिक सुरक्षा के प्रावधान की दिशा में काम करने की आवश्यकता होगी [जिसके लिए देश में तुरंत नए प्रकार के राष्ट्रपति शासन को लागू करना होगा (जिसमें केवल लोकसभा ही काम करना जारी रखेगी), देश की युवा आबादी के छह प्रतिशत यानी आठ करोड़ से अधिक (पुरुष और महिला समान रूप से) को तत्काल आधार पर रोजगार देना, सुरक्षा के प्रावधान को समाज और राष्ट्रीय सरकार द्वारा संयुक्त रूप से प्रबंधित किया जाना चाहिए और साथ ही हथियारों और गोला-बारूद का रखरखाव (जैसा कि पत्र में विस्तृत रूप से बताया गया है, दिनांक 30.05.2025 और पुस्तक वैकल्पिक अर्थव्यवस्था (विषय: युद्ध का अर्थशास्त्र, युद्ध के कारण अर्थव्यवस्था और आर्थिक युद्ध) में]:

भारत के सम्मानित साथी नागरिकों,

निम्नलिखित प्रस्तुत है, जो दिनांक 24.05 और 30.05.2025 के पत्रों के अनुक्रम में है (दो विषय भी पढ़ सकते हैं, एक - "युद्ध का अर्थशास्त्र, युद्ध के कारण अर्थव्यवस्था और आर्थिक युद्ध" और दूसरा - "धर्म संस्थान से समाज का प्रबंधन", पुस्तक "वैकल्पिक अर्थव्यवस्था" से निःशुल्क, वेबसाइट: resurrectionofdharma.com से ,

1. मात्र साढ़े तीन दिन के युद्ध (07.05 से 17.00 बजे 10.05.2025) ने नेतृत्व की आँखों से अंतर्राष्ट्रीय नेताओं के साथ उनके व्यक्तिगत संबंधों तथा युद्ध के दौरान भारत को अपने देश के समर्थन के बारे में पर्दा हटा दिया है। इस युद्ध ने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों, इसकी सत्ता की राजनीति तथा विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियों और उन लोगों की पर्दे के पीछे की गतिविधियों की कई काली सच्चाइयों को स्पष्ट रूप से सामने ला दिया है, जिनके बारे में कहा जा सकता है कि वे नई विश्व व्यवस्था के कार्यान्वयन में शामिल हैं। इस युद्ध ने यह भी स्पष्ट रूप से सामने ला दिया है कि इसके कई नेता और इसका अधिकांश मीडिया वास्तविक

संदेश, समाचार और विचार देने के बजाय नकल ही अधिक कर रहे हैं तथा युद्ध और युद्ध विराम की रणनीति बनाने में कई खामियों को उजागर कर रहे हैं। इस युद्ध ने यह भी स्पष्ट रूप से सामने ला दिया है कि नफरत फैलाने, विभाजनकारी राजनीति, शब्दों के युद्ध में आंतरिक रूप से शामिल होना और बाहरी रूप से एकता और अखंडता का प्रदर्शन करना कितना नाजुक/निरर्थक/खतरनाक है।

2. दिनांक 22.04.2025 को पहलगाम में आतंकवादी हमला हुआ जिसमें छब्बीस (26) पुरुषों की हिंदू होने की पहचान की उचित पुष्टि करने के बाद उनकी ठंडे खून और इत्मीनान से हत्या कर दी गई थी। ऐसा कहा जा सकता है कि यह एक प्रसिद्ध वैश्विक पर्यटन स्थल पर हुआ था जो सेना की सुरक्षा और राष्ट्रीय सरकार के प्रत्यक्ष नियंत्रण में है और इस तरह भारत में किसी भी स्थान पर सुरक्षा के प्रावधान के संबंध में बेहतर प्रस्ताव नहीं हो सकता है।

तथाकथित सर्वश्रेष्ठ शासन प्रणाली और किसी भारतीय द्वारा कल्पना की जा सकने वाली सुरक्षा के स्तर के बावजूद, पहलगाम आतंकवादी हमला हुआ।

पहलगाम आतंकी हमले का बदला लेने के लिए हो-हल्ला मचाने के अलावा भारत सरकार ने गंभीर सुरक्षा चूक की बात भी स्वीकार की है, जिसमें खुलासा किया गया है कि बैसरन घाटी को सुरक्षा बलों को सूचित किए बिना निर्धारित समय से दो महीने पहले ही पर्यटकों के लिए खोल दिया गया था, जिसके कारण हमला हुआ, हालांकि इस गंभीर सुरक्षा चूक के लिए न तो योजना पक्ष (नीति आयोग) और न ही कार्यकारी पक्ष और न ही विधायकों की ओर से किसी ने जिम्मेदारी ली है और न ही किसी को जिम्मेदार ठहराया है और न ही दंडित किया है।

यह परिदृश्य एक ऐसे देश की स्थिति को दर्शाता है जहाँ पूरे देश में अक्षमता, मूर्खता, गैर-गंभीरता, क्षुद्रता व्याप्त है। जहाँ सामान्यता का जश्न मनाया जाता है। जहाँ इस तरह की कहानियाँ, क्या ज़रूरत है, ऐसा क्यों करना है, इससे क्या फ़र्क पड़ता है, आम भावनाओं पर हावी हैं। जिसने इस देश और लोगों को इस कगार पर ला खड़ा किया है जहाँ सवाल उठने लगे हैं कि, चाहे जान जाए या मर जाए, क्या फ़र्क पड़ता है। ऐसी परिस्थितियों में कभी-कभी पति पत्नी के सामने मारे जाते हैं, पिता बेटे/बेटी के सामने मारे जाते हैं, भाई बहन के सामने मारे जाते हैं (या इसके विपरीत), और सामान्य नागरिक भीड़ के सामने मारे जाते हैं/मर जाते हैं और इस तरह एक सभ्यता का पतन हो जाता है ।

यह परिदृश्य यह भी दर्शाता है कि नेतृत्व गैर जिम्मेदार, चिड़चिड़ा और एक तरह से मानसिक रूप से दिवालिया हो गया है या बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा अपहृत किया जा रहा है और अगर वह लॉबी/धनवानों, राजघरानों और धार्मिक प्रमुखों का समूह है, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह पृथ्वी पर दूर से नियंत्रित, समावेशी, सर्वव्यापी और शक्तिशाली नई विश्व व्यवस्था लाने की दिशा में काम कर रहा है।

3. किसी भी समाज, देश और यहां तक कि दुनिया के लिए सबसे अधिक आश्चर्यजनक और शर्मनाक बात यह है कि मृतकों में से किसी ने या उनके साथियों या अन्य पर्यटकों ने या वहां मौजूद नियमित विक्रेताओं

ने पर्यटकों को खाद्य और अन्य सामान बेचने वालों ने कोई प्रतिशोध नहीं लिया। घटनास्थल पर मौजूद हर व्यक्ति आतंकी हमले के निर्माताओं (एक शैतान और उनके प्रतिनिधियों: योजनाकारों, वित्तपोषकों, निर्देशकों, सुविधादाताओं और निष्पादकों) के हुक्म के आगे आत्मसमर्पण करता हुआ दिखाई दिया।

इस तरह की स्थितियों को बहुत ही भयावह कहा जा सकता है, जो यह संकेत देती है कि भारतीय समाज के लोगों ने स्वयं की तथा समान प्रजाति (समान परिस्थिति में अन्य मनुष्यों) की सुरक्षा करने की आधारभूत शक्ति खो दी है तथा धर्म (मूल धर्म) के अन्य गुणों जैसे निर्भयता और संघर्ष की भावना के साथ-साथ स्वधर्म (स्वयं के लिए धर्म) के रूप में जानी जाने वाली अपनी मूल शक्ति को भी खो दिया है।

यह किसी भी परिवार, समाज, देश और यहां तक कि दुनिया के लिए भी सहज प्रस्ताव नहीं है और जो लोग खुद को जिम्मेदार मानते हैं (न कि वे जो जिम्मेदार पदों पर बैठे हैं और चिंतित नहीं हैं या जो बड़े-बड़े नारों के बीच मगरमच्छ के आंसू बहाते हैं और समाज को बिखरने के लिए छोड़ देते हैं) उन्हें आगे आकर मूल धर्म को पुनर्जीवित करने और समाज में प्रत्येक व्यक्ति के लिए सुरक्षित और संरक्षित वातावरण की व्यवस्था करने की आवश्यकता है। सभी बुजुर्गों और बुद्धिमानों को आगे आकर समाज का मार्गदर्शन करने की आवश्यकता है कि कैसे समाज अपने संसाधनों से अपने प्रत्येक सदस्य को पूर्ण सामाजिक सुरक्षा प्रदान कर सकता है और उन्हें दिखा सकता है कि कैसे हर कोई स्वस्थ, सुखी और पवित्र जीवन जी सकता है।

3.1. समझदार लोग कहते हैं कि आतंकी हमले इतने भयंकर हो सकते हैं, क्योंकि हम खुद ही दोषी हैं और हमारे द्वारा घर में बच्चों और समाज में इंसानों को पालने की हमारी अपनी ही कहानी है। भारत में (और दुनिया के ज़्यादातर हिस्सों में) माँ बच्चे को चेतावनी देती है कि अगर तुम ऐसा करोगे या वैसा करोगे तो भूत तुम्हें पकड़ लेगा और पिता कहता है कि मैं तुम्हें थप्पड़ मारूँगा, इसी तरह समाज/धर्म उसे नर्क और सरकार उसे जेल का डर दिखाते हैं।

इन भयावह परिदृश्यों का विस्तार स्वीकारोक्ति कक्षों, गवाहों के बक्सों, वकीलों की दलीलों और अदालतों के फैसलों में देखने को मिलेगा। यह कहा जा सकता है कि ऐसे परिदृश्य में कोई यह कैसे उम्मीद कर सकता है कि लोग आतंकवादियों, चोरों, लुटेरों, गुंडों, गुंडों, छेड़खानी करने वालों और अन्य राक्षसों के खिलाफ खड़े होंगे? ऐसे परिदृश्य वाले समाजों को एक बार नहीं बल्कि एक के बाद एक और शायद अधिक गंभीर प्रकृति और अनुप्रयोग वाले भयावह आतंकवादी हमलों का सामना करना पड़ता है।

पुराने समय के बुद्धिमान व्यक्ति को समाज में यह प्रदर्शित करने की आवश्यकता है कि 'अच्छाई ही अच्छी है' और कैसे घर में बच्चों और समाज के लोगों को अच्छाई के आधार पर और भूत-प्रेत, थप्पड़, नरक और जेल/कारागार के भय के बिना बड़ा किया जा सकता है।

3.2. भारत में बुद्ध , महावीर और हाल ही में श्री एम.के. गांधी द्वारा अव्यवहारिक स्तर तक अहिंसा के उपदेशों ने भारतीयों की मूल मानसिकता को अकारण क्षति पहुंचाई है और उन्हें कहीं न कहीं कायरता के

स्तर तक भयभीत कर दिया है, जिसके कारण पहलगाम जैसे आतंकवादी हमले के बाद भी उनका प्रतिशोध न लेना अजीब नहीं लगता।

सभी (बुद्ध, महावीर और श्री गांधी) एक कदम और आगे बढ़ गए हैं कि उन्होंने न केवल अहिंसा का उपदेश दिया बल्कि राम और महाभारत के युद्ध का भी उपहास किया और कहीं-कहीं तो इसे मिथक और पूरे इतिहास (धार्मिक ग्रंथों) को पौराणिक कथा घोषित कर दिया। ऐसी पृष्ठभूमि और परिदृश्य में कोई क्या उम्मीद कर सकता है?

यदि हम सुरक्षा और संरक्षा के वातावरण में रहना चाहते हैं तो बुद्धिमान लोगों को आगे आना होगा और धर्म – मूल धर्म – की पुनः स्थापना करनी होगी।

4. पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बाद, भारत और दुनिया के आम लोगों के ध्यान में यह बात लाई गई कि आतंकवादी गतिविधि पाकिस्तान से संचालित आतंकवादियों द्वारा की गई थी और जाहिर तौर पर पाकिस्तान सरकार द्वारा प्रशिक्षित और समर्थित थी) और ऐसे में इन आतंकवादियों, पाकिस्तान में बैठे उनके शुभचिंतकों को पाकिस्तान सरकार द्वारा समर्थित किया जाना चाहिए। युद्ध की आवश्यकता को उजागर करने और भारत के प्रत्येक नागरिक से सहमति और पूर्ण सहयोग की मांग पर जोर देने के लिए मीडिया के सभी चैनलों का उपयोग किया गया और सभी महत्वपूर्ण नेताओं ने युद्ध शुरू करने के लिए भारत के नागरिकों से समर्थन और भागीदारी की मांग करते हुए अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और इस तरह भारत के आम लोग आतंकवादी हमले के अपराधियों को दंडित करने और फिर शांति से रहने के लिए पाकिस्तान के साथ पूर्ण युद्ध के समर्थन में सामने आए।

युद्ध तो हुआ, लेकिन जिस तरह से युद्ध विराम हुआ और उसके बाद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जो खबरें आईं, उससे भारत के नागरिकों का अपनी ही सरकार से भरोसा डगमगा गया। आम लोगों को लगता है कि सरकार उन्हें तोप का चारा या गिनीपिग या एक ऐसा व्यक्ति समझती है जिसका इस्तेमाल और दुरुपयोग तब किया जा सकता है जब सरकार में बैठे लोग अपनी मर्जी से कुछ भी कर सकते हैं। इससे भारत के आम लोगों में काफी आक्रोश पैदा हुआ और समझदार लोगों में भारत और भारतीय लोगों के भविष्य को लेकर काफी चिंता पैदा हुई। इस पूरी घटना में यानी आतंकी हमले, युद्ध, युद्ध विराम, हथियारों और शस्त्रों की खरीद-फरोख्त में सबसे ज्यादा चिंता की बात यह है कि नेतृत्व में बैठे लोगों को भले ही भारत के आम लोगों से शक्ति मिलती है (भले ही चुनाव प्रक्रिया और उसके परिणाम संदिग्ध हों), लेकिन वे विभिन्न सत्ता और व्यापार लॉबी के आगे झुकते पाए जाते हैं, जिनमें से कई भारत से भी नहीं हैं।

5. चीजें तब डरावनी हो जाती हैं जब कोई गौर से देखता है कि, कोरोना वायरस की उत्पत्ति और कोविड के रूप में इसके फैलने के बारे में संदेह हो सकता है, कि वायरस ईश्वर द्वारा भेजा गया है या इस देश या उस देश ने अपनी प्रयोगशालाओं में इसे बनाने/विकसित करने में भाग लिया और यह खुले तौर पर लीक

हो गया और इस पर बहस हो सकती है लेकिन जिस तरह से कोविड के कारण दुनिया भर में तालाबंदी की गई, वह निश्चित रूप से बताता है कि यह ईश्वर द्वारा भेजा गया नहीं था, बल्कि सभी देशों में एक साथ सावधानीपूर्वक योजना बनाई गई और उसे अंजाम दिया गया, चाहे वह विशेषाधिकार प्राप्त शीर्ष पांच देश हों यानी अमेरिका, चीन, रूस, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, भारत , जापान, ब्राजील, यूरोपीय संघ के अन्य देश, यूरेशिया, अफ्रीकी संघ, अरब दुनिया, ऑस्ट्रेलिया और लैटिन अमेरिका और एशिया के अन्य देश।

इससे पता चलता है कि लॉकडाउन को सफल बनाने और दुनिया को अपनी ताकत दिखाने में कोई विशेष देश या देशों का समूह नहीं बल्कि शक्तिशाली लोगों का समूह शामिल था।

यह बात सभी जानते हैं कि केवल एक समूह जिसमें सबसे अमीर लोग, राजघराने (ब्रिटेन आदि के राज्य) और धार्मिक प्रमुख (वेटिकन आदि) शामिल हैं, प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध, सोवियत संघ और चेकोस्लोवाकिया के निर्माण और विघटन, पाकिस्तान और इजरायल के निर्माण, चीन की स्वतंत्रता और उसके आर्थिक विकास तथा कई अन्य युद्धों और सुनामी लाने के पीछे थे।

हालाँकि आध्यात्मिक जगत में यह कहा जा रहा है कि इस युग (कलयुग) की शुरुआत से ही चालाक कला और अंधेरे विज्ञान का गहरा ज्ञान रखने वाला एक समूह मौजूद है, जो दुनिया पर राज करना चाहता है, जो मनुष्यों, पक्षियों, जानवरों और मछलियों, पेड़–पौधों, धरती, पहाड़ों और जलाशयों पर किए जा रहे सभी अत्याचारों के पीछे है, जो अंततः इस धरती को रहने योग्य नहीं बनाते हैं। आध्यात्मिक जगत में यह भी कहा जा रहा है कि कोविड का फैलना और दुनिया भर में लॉकडाउन उनका शक्ति का अंतिम प्रदर्शन था और पहलगाम में आतंकी हमला नई विश्व व्यवस्था यानी पूरी दुनिया पर उनके शासन को मजबूती से स्थापित करने की शुरुआत है।

दिनों में यह पूरी तरह संभव है कि नैतिक शुचिता प्रदान करने के लिए यह समूह कुछ विद्युतीय तमाशा लेकर आए और आकाश से एक नए देवता के उतरने का प्रदर्शन करे तथा नई विश्व व्यवस्था लाने की अपनी सभी गतिविधियों को इस नए देवता की छाया में छिपा ले और इसे इस नए देवता का जादू बताकर अपने प्रयासों को तेज कर दे।

6. उपरोक्त जैसी परिस्थितियाँ बहुत भयावह हैं तथा इन्हें जारी रखना तथा हमसे ऐसा प्रयास करने की अपेक्षा करना उचित नहीं है कि हम सुरक्षा की जिस कमजोरी से वर्तमान में गुजर रहे हैं, वह न केवल समाप्त हो जाए बल्कि ऐसा समाधान प्रदान करे जो लंबे समय तक टिके (अर्थात भौतिक एवं अन्य सामाजिक सुरक्षा की उपलब्धता सुनिश्चित करने की दिशा में एक समाधान जो सनातन है – सनातन)। इस संबंध में दिनांक 30.05. के पत्र के बिंदु संख्या – 5 (फेसबुक / लिंक्डइन और वेबसाइट पर उपलब्ध) में स्पष्ट रूप से आदिवासी (आदिवासी/मूलनिवासी) से प्राप्त भौतिक सुरक्षा की व्यवस्था की बात कही गई है, जिसके अनुसार समाज की कम से कम छह प्रतिशत जनसंख्या (पुरुष, महिला दोनों समान संख्या में) को परिवार, समाज, इसकी भूमि, जल, आकाश और देश की सुरक्षा के आश्वासन के कार्य में लगाया जाना चाहिए, जिसका प्रबंधन समाज और राष्ट्रीय सरकार द्वारा संयुक्त रूप से किया जाना चाहिए, जिसमें

हथियारों और गोला-बारूद का उचित बंटवारा, सुरक्षा और संरक्षा पर शिक्षा और प्रशिक्षण, संचालन और रखरखाव, हथियारों और गोला-बारूद, उपकरणों और उपकरणों के साथ-साथ अन्य सहायक उपकरणों का भंडारण और रखरखाव उचित रूप से परिभाषित भूमिकाओं और जिम्मेदारी (समाज और सरकार के बीच) में किया जाना चाहिए। कुछ देशों में प्रचलित हथियार और गोलाबारूद का व्यक्तिगत स्वामित्व अराजकता और अराजकता ला सकता है तथा समाज और देश में भौतिक सुरक्षा के लिए इसकी सराहना नहीं की जाती है।

शारीरिक सुरक्षा सर्वप्रथम और सर्वोपरि है, इसलिए शारीरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के बाद हम समाज के प्रत्येक सदस्य और उसके वास्तविक अतिथियों के लिए अन्य सभी सामाजिक सुरक्षा (भोजन, पानी, आश्रय, न्याय, स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन और आत्म-अभिव्यक्ति के अवसर आदि) के प्रावधान के बारे में सोच सकते हैं।

मई 2025 में पाकिस्तान के साथ भारत के साढ़े तीन दिन के युद्ध ने दुनिया को यह दिखा दिया कि किसी भी देश से पूर्ण समर्थन की उम्मीद नहीं की जा सकती और इसलिए भारत को अकेले ही आगे बढ़ना होगा। खास तौर पर इस स्थिति में और जब हम दुनिया भर में कई युद्ध देख रहे हैं, तो भौतिक सुरक्षा की व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने की प्रक्रिया को तेज करना न केवल विवेकपूर्ण बल्कि आवश्यक होगा।

7. भारतीय स्वतंत्रता और उसके बच्चों की स्वतंत्रता को सर्वप्रथम और सर्वोपरि कहा जा सकता है, जिसे तब तक कायम नहीं रखा जा सकता, जब तक इसके लिए अतिरिक्त प्रयास न किए जाएं, नियमों और विनियमों में परिवर्तन न किया जाए, उन सभी संस्थाओं को त्यागा या हटाया न जाए, जो भौतिक सुरक्षा में बाधा बन रही हैं, चाहे वे संवैधानिक पद और संस्थाएं हों, कानून और व्यवस्था बनाए रखने और न्याय प्रदान करने की वर्तमान प्रणाली हो, आय और कार्य के वितरण की प्रणाली हो, आदि।

के बाद दुनिया के शक्ति केंद्रों में यह भावना विकसित हो गई है कि पूरे भारत को किसी भी समय, अधिकतम दो महीने के भीतर, पराजित किया जा सकता है। यह एक भयावह स्थिति है।

करोड़ से अधिक लोग मुफ्त राशन पर जीवित हैं और बेरोजगारी की समस्या बढ़ती जा रही है, ऐसे में कहा जा सकता है कि भारत ज्वालामुखी पर बैठा है, जो कभी भी फट सकता है।

ऐसे परिदृश्य में भारत की राष्ट्रीय सरकार के लिए अपने तरीके को सुधारना और संशोधित करना तथा भौतिक और सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था करने की दिशा में काम करना अत्यंत महत्वपूर्ण है [जिसके लिए देश में तत्काल नए प्रकार के राष्ट्रपति शासन को लागू करना होगा (जिसमें केवल लोकसभा ही काम करना जारी रखेगी), और इसकी आबादी के छह प्रतिशत यानी आठ करोड़ युवाओं (पुरुष और महिला समान रूप से) को तत्काल रोजगार देना होगा ताकि सुरक्षा की व्यवस्था समाज और राष्ट्रीय सरकार द्वारा संयुक्त रूप से प्रबंधित की जा सके (जैसा कि 30.05.2025 के पत्र में और वैकल्पिक अर्थव्यवस्था (विषय: युद्ध का अर्थशास्त्र, युद्ध के कारण अर्थव्यवस्था और आर्थिक युद्ध) पुस्तक में विस्तृत रूप से बताया गया है)।] यह उम्मीद की जाती है कि भारत की वर्तमान राष्ट्रीय सरकार में बेहतर समझ पैदा होगी,

ऊपर प्रस्तुत है,

भगवान भारत को आशीर्वाद दें - भारत

भवदीय

नरेंद्र

धर्म के पुनरुत्थान के लिए, (वेबसाइट: surserctionofdharma.com),

दिनांक: 23.06.2025, दिल्ली, भारत,

इस मुद्दे पर पिछली सोशल मीडिया पोस्ट: दिनांक: 24.05, और 30.05.2025,